अक्टूबर, 2023

# मेरी खेती

## किसानों की बात मेरी खेती के साथ

खेत खलियान
सरकारी नीतियां
मौसम व अन्य कृषि सुझाव
सब्ज़ी
फूल
औषधीय खेती
पशुपालन - पशुचारा
प्रगतिशील किसान

MERIKHETI

# विषय सूची


| | |
|---|---|
| सम्पादकीय | |
| सलाहकार मंडल | |
| खेत खलियान | 01-02 |
| सब्ज़ी | 03-06 |
| फल | 07-09 |
| फूल | 10-11 |
| मशीनरी | 12-15 |
| मौसमी व अन्य कृषि सुझाव | 16-18 |
| सामान्य लेख | 19-21 |
| सरकारी नीतियां | 22-34 |
| किसान समाचार | 35-47 |
| औषधीय खेती | 48-50 |
| पशुपालन-पशुचारा | 51-52 |
| मिट्टी की सेहत - खाद | 53 |
| प्रगतिशील किसान | 54-56 |


विज्ञापन के लिए संपर्क करें: +91 9899991906, +91 8800777501

# सम्पादकीय

भारत में हरित क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन जी का स्वर्गवास 28 सितंबर, 2023 को सुबह 11.20 बजे चेन्नई में हो गया है। अपने पिता से प्रेरित होकर इन्होंने कृषि जगत में बहुत सारे अहम योगदान दिए।

प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एवं देश की 'हरित क्रांति' के जनक, एमएस स्वामीनाथन के नाम से विख्यात मनकोम्बु संबाशिवन स्वामीनाथन का 28 सितंबर, 2023 को सुबह 11.20 बजे चेन्नई में उनके आवास पर निधन हो गया। निधन के समय स्वामीनाथन की आयु 98 वर्ष थी। उनकी तीन बेटियां हैं - सौम्या स्वामीनाथन, मधुरा स्वामीनाथन और नित्या राव. उनकी पत्नी मीना स्वामीनाथन की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि 7 अगस्त, 1925 को कुंभकोणम में एक सर्जन एमके संबासिवन और पार्वती थंगम्मल के घर जन्मे स्वामीनाथन ने अपनी स्कूली शिक्षा वहीं की थी। कृषि विज्ञान में गहरी दिलचस्पी रखने वाले स्वामीनाथन को स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदार रहे उनके पिता एवं महात्मा गांधी के प्रभाव ने उन्हें इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया। परंतु, इससे पूर्व वह पुलिस विभाग में नौकरी के लिए भी कार्यरत थे, जिसके लिए उन्होंने 1940 के दशक के अंत में योग्यता हांसिल की। स्वामीनाथन ने दो स्नातक डिग्रियाँ हांसिल कर लीं थीं, जिनमें से एक कृषि महाविद्यालय, कोयंबटूर (अब, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय) से की थी।

डॉ. स्वामीनाथन ने 'हरित क्रांति' की सफलता के लिए दो केंद्रीय कृषि मंत्रियों, सी. सुब्रमण्यम (1964-67) और जगजीवन राम (1967-70 और 1974-77) के साथ मिलकर कार्य किया था, जिसके चलते उन्होंने भारत में कई कृषि उपलब्धियों को कार्यान्वित करने की दिशा में कार्य किया। इन्होंने रासायनिक-जैविक प्रौद्योगिकी के अत्यधिक उत्पादन के जरिए गेहूं और चावल की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी की दिशा में प्रयास किया। प्रसिद्ध अमेरिकी कृषि वैज्ञानिक और 1970 के नोबेल पुरस्कार विजेता नॉर्मन बोरलाग की गेहूं पर खोज ने इस संबंध में एक बड़ी भूमिका निभाई थी।

**-संपादक**

**दिलीप यादव**

# सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति
आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी विश्वविद्यालय
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी
एंड एनिमल साइंस

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत)
उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर भरतपुर
राजस्थान

डॉ. जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक
आई ए आर आई

डॉ.हरी शंकर गौड़
साइंटिस्ट, गलगोटियास
विश्वविद्यालय

दिलीप यादव
विशेषज्ञ, मेरीखेती

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

डॉ एसके सिंह
प्रोफ़ेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र
प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा,
बिहार

Chana Jor
www.chanajor.com
TO
DOWNLOAD
SCAN
ME!
Download on the
App Store
Enjoy Best Comedy Movies here.
Download now ChanaJor
GET IT ON
Google Play

# प्राकृतिक खेती की महत्ता एवं इसके क्या-क्या फायदे हैं

प्राकृतिक खेती की जानकारी के लिए भारत सरकार द्वारा एक पोर्टल लॉन्च किया गया है। इस पोर्टल पर प्राकृतिक खेती से जुड़ी हर तरह की जानकारियां मिल जाऐंगी।

भारत में प्राकृतिक खेती का प्रचलन निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। इस खेती में किसान किसी रसायन का उपयोग नहीं करते हैं। यह खेती बड़े स्तर पर ऑन-फार्म बायोमास रीसाइक्लिंग पर आधारित है, जिसमें बायोमास मल्चिंग, गाय के गोबर, मूत्र के उपयोग पर विशेष जोर दिया जाता है। मृदा की उर्वरता को बनाए रखने के लिए नीम से निर्मित जैविक उर्वरकों का स्प्रे किया जाता है।

**प्राकृतिक खेती के क्या-क्या फायदे हैं**

प्राकृतिक खेती का प्रमुख लक्ष्य मिट्टी की गुणवत्ता को प्रभावित किए बिना फसल के उत्पादन को शानदार करना है। यह फसलों में विविधता को बनाए रखना, प्राकृतिक संसाधनों का सही इस्तेमाल करना, जैविक खाद और एक बेहतर खेती के वातावरण को प्रोत्साहन देता है। प्राकृतिक खेती एक जैव विविधता के साथ कार्य करती है। यह मिट्टी की जैविक गतिविधि को बढ़ाने के साथ-साथ खाद्य पैदावार को भी प्रोत्साहन देती है।

**प्राकृतिक खेती से पैदावार में सुधार आता है**

प्राकृतिक खेती में उत्पादन पारंपरिक खेती के मुकाबले में काफी अच्छा होता है। इससे किसानों का मुनाफा भी काफी ज्यादा बढ़ता है। साथ ही, इससे उनकी आर्थिक स्थिति भी काफी बेहतर होती है। विगत कई वर्षों में परंपरागत कृषि करने वाले किसान इस प्राकृतिक खेती की ओर ज्यादा आकर्षित हुए हैं।

इसके अतिरिक्त प्राकृतिक खेती मृदा संरक्षण, बेहतर कृषि विविधता तथा वातावरण में होने वाले कार्बन और नाइट्रोजन पदचिह्नों की कमी में भी अहम योगदान देती है।

**प्राकृतिक खेती में कम लागत से अधिक उपज मिलती है**

प्राकृतिक खेती का प्रमुख उद्देश्य किसानों को ऑन-फार्म, प्राकृतिक एवं घरेलू संसाधनों का इस्तेमाल कर बेहतरीन पैदावार करना है। इस विधि में किसानों की लागत काफी ज्यादा कम होती है। प्राकृतिक खेती का सबसे तात्कालिक प्रभाव मृदा के स्तर पर पड़ता है। रोगाणुओं एवं केंचुओं का प्राकृतिक कृषि पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। रसायन मुक्त कृषि करने से मृदा के स्वास्थ्य पर काफी गहरा असर पड़ता है। साथ ही, यह फसलीय पैदावार में बेहतरीन योगदान देती है।

**प्राकृतिक खेती के लिए पोर्टल जारी किया है**

भारत सरकार द्वारा देश में प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन देने के लिए एक वेबसाइट **HTTP://NATURALFARMING.DAC.GOV.IN/** की शुरुआत की है। इस वेबसाइट पर प्राकृतिक खेती से जुड़ी हर तरह की जानकारियां मिल जाती हैं। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती के लिए उठाए जा रहे समस्त कदमों के विषय में बड़ी आसानी से जानकारी मिल जाएगी। इस पोर्टल को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा विकसित किया गया है।

# किसान भाई मूंगफली की इस किस्म की खेती कर अच्छा खासा मुनाफा कमा सकते हैं

## किसान भाई मूंगफली की इस किस्म की खेती कर अच्छा खासा मुनाफा कमा सकते हैं

मूंगफली की डी.एच. 330 किस्म की खेती के लिए कम जल की जरूरत होती है। साथ ही, इसको तैयार होने में तकरीबन 4 से 5 महीने का वक्त लग जाता है। मूंगफली एक बेहद ही स्वादिष्ट एवं फायदेमंद फसल है। भारत के तकरीबन प्रत्येक व्यक्ति को मूंगफली काफी पसंद होती है। भारत में मूंगफली का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य गुजरात है। उसके पश्चात महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, राजस्थान और मध्य प्रदेश आते हैं। यदि आप किसान भाई भी इसकी खेती कर बेहतरीन कमाई करने का सोच रहे हैं। तो आगे इस लेख में आज हम आपको इसकी खेती के विषय में जानकारी देंगे, जिसे अपनाकर आप केवल 4 माह में ही मूंगफली का बेहतरीन उत्पादन कर मोटी आय अर्जित कर सकते हैं।

### मूंगफली की खेती का बेहतरीन तरीका

मूंगफली की उन्नत और शानदार खेती के लिए अच्छे बीज के साथ-साथ आधुनिक तकनीक की भी आवश्यकता होती है। मूंगफली की डी.एच. 330 फसल के लिए खेतों में तीन से चार बार जुताई करने के उपरांत ही बिजाई करनी होती है। इसके उपरांत मृदा को एकसार करने के पश्चात खेत में आवश्यकता के हिसाब से जैविक खाद, उर्वरक एवं पोषक तत्वों को मिला देना चाहिए। डी.एच. 330 एक ऐसी प्रजाति की मूंगफली है, जिसे अत्यधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। खेत तैयार करने के उपरांत मूंगफली की बुवाई करनी चाहिए। आपको इस बात का खास ख्याल रखना चाहिए कि इसकी बेहतरीन पैदावार के लिए स्वस्थ बीजों का चुनाव करें।

### मूंगफली की खेती में सिंचाई बेहद आवश्यक है

मूंगफली की डी.एच. 330 की फसल को तैयार होने में कम बारिश की आवश्यकता होती है। इस वजह से इसे पानी बचाने वाली फसल के नाम से भी जाना जाता है। अगर आपके क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा होने की संभावना रहती है, तो आप इस किस्म की खेती बिल्कुल भी ना करें। मूंगफली की फसल में पानी भरने से सड़ने का खतरा काफी बढ़ जाता है और कीड़े लगने का भी खतरा रहता है।

### मूंगफली की फसल में जैविक कीटनाशक

डी.एच. 330 मूंगफली की फसल में अत्यधिक खरपतवार निकलने की संभावना बनी रहती है। अब ऐसी स्थिति में आप जैविक खाद के इस्तेमाल से अपनी पैदावार को अच्छा कर सकते हैं। मूंगफली की बिजाई के 25 से 30 दिन उपरांत खेतों में निराई-गुड़ाई कर देनी चाहिए। खेत में उत्पादित होने वाली घास को हटा दें। साथ ही, फसल को कीटों एवं रोगों से सुरक्षा के लिए माह में दो से तीन बार कीटनाशक का स्प्रे करते रहें।

# BRAJDHAM

## FARMS & RESORT

Best place to Celebrate Your Day

www.brajdhamfarms.com

# परवल की सबसे बड़ी समस्या फल, लत्तर और जड़ सड़न रोग को कैसे करें प्रबन्धित?

विश्व में परवल की खेती भारत के अलावा चीन, रूस, थाईलैंड, पोलैंड, पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, श्रीलंका, मिश्र तथा म्यानमार में होती है। भारत में इसकी खेती उत्तर प्रदेश, बिहार, असम, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, मद्रास, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल तथा तामिलनाडु राज्यों में परवल की खेती की जाती है। उत्तर प्रदेश में परवल की खेती व्यावसायिक स्तर पर जौनपुर, फैजाबाद, गोण्डा, वाराणसी, गाजीपुर, बलिया तथा देवरिया जनपदों में होती है ,जबकि बिहार में परवल की व्यावसायिक खेती पटना, वैशाली, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, चम्पारण, सीतामढ़ी, बेगूसराय, खगड़िया, मुंगेर तथा भागलपुर में होती है। बिहार में इसकी खेती मैदानी तथा दियारा क्षेत्रों में की जाती है।

बरसात में परवल में फल, लत्तर और जड़ सडन रोग कुछ ज्यादा ही देखने को मिलता है ,इसका प्रमुख कारण वातावरण में नमी का ज्यादा होना प्रमुख है। यह रोग देश के प्रमुख परवल उगाने वाले सभी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर होती है। इस रोग की गंभीरता लगभग सभी परवल उत्पादक क्षेत्रो में देखने को मिलता है । यह रोग खेत में खड़ी फसल में तो देखने को मिलता ही है इसके अलावा यह रोग जब फल तोड़ लेते है, उस समय भी देखने को मिलता है। फलों पर गीले गहरे रंग के धब्बे बनते हैं, ये धब्बे बढ़कर फल को सड़ा देते हैं तथा इन सड़े फलों से बदबू आने लगती है, जो फल जमीन से सटे होते है, वे ज्यादा रोगग्रस्त होते हैं। सड़े फल पर रुई जैसा कवक दिखाई पड़ता है।

**परवल में जड़ एवं लत्तर सड़न के कारण**

**फफूंद रोग कारक :** परवल में जड़ एवं बेल (लत्तर) सड़न के लिए एक से अधिक रोगकारक जिम्मेदार है। फाइटोफ्थोरा मेलोनिस (PHYTOPHTHORA MELONIS) के कारण परवल (TRICHOSANTHES DIOICA) के फल, लत्तर और जड़ के सड़न की बीमारी होती है इसके अतरिक्त राइजोक्टोनिया सोलानी, फ्यूसेरियम की विभिन्न प्रजातियां और पाइथियम की विभिन्न प्रजातियां भी परवल में जड़ और बेल के सड़ने के पीछे प्रमुख कारण हैं। ये रोगज़नक़ गर्म और आर्द्र परिस्थितियों में अधिक पनपते हैं, जिससे फसल संवेदनशील हो जाती है, खासकर बरसात के मौसम में।

**खराब जल निकासी:** जल जमाव वाली मिट्टी या अपर्याप्त जल निकासी प्रणालियाँ कवक के विकास के लिए आदर्श वातावरण बनाती हैं। जड़ों और लताओं के आसपास अतिरिक्त नमी सड़ांध के विकास को बढ़ावा देती है।

**दूषित मिट्टी और रोपण सामग्री:** दूषित मिट्टी या संक्रमित रोपण सामग्री का उपयोग करने से फसल में रोगज़नक़ आ सकते हैं। उचित मिट्टी का बंध्याकरण और रोग-मुक्त पौध का उपयोग आवश्यक निवारक उपाय हैं।

**परवल पर सड़न का प्रभाव**

**उपज में कमी:** जड़ और बेल के सड़ने से फसल की पैदावार में काफी कमी आ सकती है। संक्रमित पौधे छोटे, विकृत फल पैदा कर सकते हैं, या गंभीर मामलों में, कटाई योग्य उपज देने में विफल हो सकते हैं।

**आर्थिक नुकसान:** किसानों के लिए, कम पैदावार का मतलब कम आय है। बीज, उर्वरक और श्रम जैसे इनपुट की लागत की भरपाई नहीं की जाती है, जिससे वित्तीय नुकसान होता है।

**फसल की गुणवत्ता:** फसल जीवित रहने पर भी परवल की गुणवत्ता से समझौता किया जा सकता है। सड़ी हुई लताएँ और जड़ें सब्जी के स्वाद और बनावट को प्रभावित करती हैं, जिससे यह विपणन योग्य नहीं रह पाता है।

**परवल में जड़ एवं लत्तर सड़न रोग को कैसे करें प्रबंधित ?**

परवल में जड़ और बेल सड़न के प्रभावी प्रबंधन में निवारक और उपचारात्मक उपायों का संयोजन शामिल है। इस समस्या के समाधान के लिए यहां कुछ उपाय निम्नवत हैं यथा.

**फसल चक्र और स्थल चयन**

रोग चक्र को तोड़ने के लिए फसल चक्र प्रणाली लागू करें। लगातार सीज़न के लिए एक ही मिट्टी में परवल लगाने से बचें।
जलभराव के जोखिम को कम करने के लिए अच्छी जल निकासी वाले, ऊंचे रोपण स्थल चुनें।

**मिट्टी की तैयारी**

रोपण से पहले, सुनिश्चित करें कि मिट्टी ठीक से तैयार है। मिट्टी की संरचना और जल निकासी में सुधार के लिए खाद जैसे कार्बनिक पदार्थ शामिल करें।
मृदा सौरीकरण का प्रयोग करें, एक ऐसी तकनीक जहां प्लास्टिक शीट का उपयोग गर्मी को रोकने और रोपण से पहले मिट्टी से पैदा होने वाले रोगजनकों को मारने के लिए किया जाता है।

**बीज का चयन एवं उपचार**

प्रतिष्ठित स्रोतों से रोगमुक्त रोपण सामग्री का उपयोग करें। रोपाई से पहले फफूंद संक्रमण की संभावना को कम करने के लिए रोपण सामग्री को फफूंदनाशक से उपचारित करें।

**उचित जल प्रबंधन**

जड़ों और लताओं के आसपास अत्यधिक नमी से बचते हुए, फसल की सिंचाई सावधानी से करें। जड़ क्षेत्र में सीधे पानी पहुंचाने के लिए ड्रिप सिंचाई का उपयोग करें, जिससे फंगल संपर्क कम हो जाए।

**कवकनाशी का प्रयोग**

निवारक उपाय के रूप में फफूंदनाशकों का प्रयोग करें, विशेष रूप से पौधे के विकास के प्रारंभिक चरण के दौरान। इसके नियंत्रण के लिए फलों को जमीन के सम्पर्क में नहीं आने देना चाहिए। इसके लिए जमीन पर पुआल या सरकंडा को बिछा देना चाहिए। फफुंदनाशक जिसमे रीडोमिल एवं मैंकोजेब मिला हो यथा रीडोमिल एम गोल्ड @ 2ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने एवं इसी घोल से परवल के आसपास की मिट्टी को खूब अच्छी तरह से भीगा देने से रोग की उग्रता में कमी आती है। ध्यान देने योग्य बात यह है की दवा छिडकाव के 10 दिन के बाद ही परवल के फलों की तुड़ाई करनी चाहिए । दवा छिडकाव करने से पूर्व सभी तुड़ाई योग्य फलों को तोड़ लेना चाहिए । मौसम पूर्वानुमान के बाद ही दवा छिडकाव का कार्यक्रम निर्धारित करना चाहिए ,क्योकि यदि दवा छिडकाव के तुरंत बाद बरसात हो जाने पर आशातीत लाभ नही मिलता है। उचित कवकनाशी और प्रयोग कार्यक्रम पर मार्गदर्शन के लिए कृषि विशेषज्ञों से परामर्श लें।

**जैविक नियंत्रण**

ट्राइकोडर्मा की विभिन्न प्रजातियां जैसे लाभकारी सूक्ष्मजीवों के उपयोग करें जो रोगजनक कवक को दबाने में मदद करते हैं।

**स्वच्छता**

संक्रमित पौधों के मलबे को हटाकर और नष्ट करके खेत की अच्छी स्वच्छता अपनाएं। यह मिट्टी में रोगज़नक़ों के निर्माण को रोकता है। बीमारी को फैलने से रोकने के लिए औजारों और उपकरणों को कीटाणुरहित करें।

**प्रतिरोधी किस्में**

यदि उपलब्ध हो तो परवल की ऐसी किस्में चुनें जिनमें जड़ और बेल सड़न के प्रति प्रतिरोधक क्षमता हो। प्रतिरोधी किस्में संक्रमण के खतरे को काफी हद तक कम कर सकती हैं।

**प्रशिक्षण और शिक्षा**

किसानों को रोग की पहचान और प्रबंधन तकनीकों में प्रशिक्षित करें। समय पर सलाह और सहायता के लिए स्थानीय सहायता नेटवर्क और विस्तार सेवाएँ स्थापित करें।

**मौसम की निगरानी**

मौसम की स्थिति पर नज़र रखें, विशेषकर बरसात के मौसम में। जब परिस्थितियाँ फंगल वृद्धि के अनुकूल हों तो निवारक उपाय लागू करें।
अंत में कहने का तात्पर्य है की परवल में जड़ और बेल का सड़ना किसानों के लिए एक चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन सही प्रबंधन रणनीतियों के साथ, इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। फसल चक्र, मिट्टी की तैयारी और उचित जल प्रबंधन जैसे निवारक उपाय महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त, रोग प्रतिरोधी किस्मों और जैविक नियंत्रण विधियों का उपयोग फसल के लचीलेपन को और बढ़ा सकता है। रोग प्रबंधन के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाकर और सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में सूचित रहकर, किसान अपनी परवल फसलों की रक्षा कर सकते हैं और अधिक सुरक्षित और लाभदायक फसल सुनिश्चित कर सकते हैं।

# इस तरीके से रंगीन फूल गोभी की खेती कर किसान बेहतरीन आय कर सकते हैं

## इस तरीके से रंगीन फूल गोभी की खेती कर बेहतरीन आय कर सकते हैं

रंगीन फूलगोभियां दिखने में बेहद ही सुंदर और आकर्षक होती हैं। वहीं, इसके साथ-साथ यह हमारे स्वास्थ्य के लिए भी काफी अच्छी होती हैं। आज के इस वैज्ञानिक युग में हर चीजें आसान नजर आती हैं। विज्ञान ने सब कुछ करके रख दिया है। यहां पर कोई भी असंभव चीज भी संभव नजर आती है। अब चाहे वह खेती-किसानी से संबंधित चीज ही क्यों ना हों। बाजार के अंदर विभिन्न तरह की रंग बिरंगी फूल गोभियां आ गई हैं। दरअसल, आज हम आपको इस रंग बिरंगी फूल गोभियों की खेती के विषय में जानकारी देने जा रहे हैं। ताकि आप अपने खेत में सफेद फूल गोभी के साथ-साथ रंगीन फूल गोभी का भी उत्पादन कर सकें। बाजार में इन गोभियों की मांग दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। ऐसी स्थिति में आप इनको बाजार में बेचकर काफी शानदार मुनाफा कमा सकते हैं। रंगीन फूलगोभियां किसानों को काफी मुनाफा प्रदान करती हैं।

**रंगीन फूल गोभी की खेती**

भारत के कृषि वैज्ञानिकों ने रंगीन फूल गोभी की नवीन किस्म की खोज की है। यह गोभियां हरी, नीली, पीली एवं नारंगी रंग की होती हैं। इन विभिन्न तरह के रंगों की गोभी का सेवन करने से लोगों को बीमारियों से छुटकारा भी मिल रहा है। इसकी खेती किसी भी तरह की मिट्टी में आसानी से की जा सकती है। आपको इसके लिए पर्याप्त सिंचाई की आवश्यकता होती है। भारतीय बाजार में इन गोभियों की मांग बढ़ती जा रही है। इससे किसान भी इसका उत्पादन कर काफी मोटा मुनाफा कमा रहे हैं।

**रंगीन फूलगोभी की बिजाई**

भारत में रंगीन फूलगोभी की अत्यधिक पैदावार झारखंड, छत्तीसगढ़, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश में होती है। इसकी खेती करने का सबसे उपयुक्त समय शर्दियों का होता है। आप इसकी नर्सरी सितंबर एवं अक्टूबर में लगा सकते हैं। साथ ही, खेत की तैयारी के उपरांत इसे 20 से 30 दिन पश्चात खेतों में लगा सकते हैं। इसकी शानदार पैदावार के लिए 20 से 25 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान उपयुक्त माना गया है। वहीं, खेती की मिट्टी का पीएच मान 5.5 से 6.5 के बीच रहना चाहिए।

**रंगीन फूलगोभी की खेती से कितनी आय अर्जित होती है**

यह रंग-बिरंगी गोभियां खेतों में बिजाई के पश्चात 100 से 110 दिन में पककर तैयार हो जाती है। किसान भाई रंगीन फूल गोभी का एक एकड़ में उत्पादन कर 400 से 500 क्विंटल तक का उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। बाजार में लोग इस रंग को देखते ही बड़े जोर शोर से इसकी खरीदारी कर रहे हैं। साधारण गोभी की बाजार का बाजार में भाव 20 से 25 रुपये होता है। तो उधर इन रंग बिरंगी गोभियों की कीमत 40 से 45 रुपये तक की होती है। ऐसी स्थिति में किसान भाई इसकी खेती कर काफी शानदार मुनाफा कमा सकते हैं।

# पालक की खेती के लिए इन किस्मों का चयन करना लाभकारी साबित होगा

किसान भाई बेहतरीन मुनाफा पाने के लिए पालक की खेती कर सकते हैं। बतादें, कि भारत में पालक की खेती रबी, खरीफ एवं जायद तीनों फसल चक्र में की जाती है। इसके लिए खेत में बेहतर जल निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए। साथ ही, हल्की दोमट मृदा में पालक के पत्तों का शानदार उत्पादन होता है।

किसान भाई इन बातों का विशेष रूप से ख्याल रखें

एक हेक्टेयर भूमि पर पालक की खेती करने के लिए 30 किग्रा बीज की जरूरत पड़ती है। वहीं, छिटकवां विधि के माध्यम से खेती करने पर 40 से 45 किग्रा बीज की जरूरत होती है। बुवाई से पूर्व 2 ग्राम कैप्टान प्रति किलोग्राम बीजों का उपचार करें, जिससे पैदावार अच्छी हो। पालक की बुवाई के लिए कतार से कतार की दूरी 25–30 सेंटीमीटर और पौध से पौध की 7–10 सेंटीमीटर की दूरी रखें। पालक की खेती के लिए जलवायु एवं मिट्टी के अनुसार ज्यादा उत्पादन वाली उन्नत किस्मों का चयन कर सकते हैं।

**ऑल ग्रीन**

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि 15 से 20 दिन में हरे पत्तेदार पालक की किस्म तैयार हो जाती है। एक बार बुवाई करने के उपरांत यह छह से सात बार पत्तों को काट सकता है। यह किस्म बेशक ज्यादा उत्पादन देती है। परंतु, सर्दियों के दौरान खेती करने पर 70 दिनों में बीज और पत्तियां लगती हैं।

**पूसा हरित**

साल भर की खपत को सुनिश्चित करने के लिए बहुत सारे किसान पूसा हरित से खेती करते हैं। पालक की बढ़वार सीधे ऊपर की ओर होती है। साथ ही, इसके पत्ते गहरे हरे रंग के बड़े आकार वाले होते हैं। क्षारीय जमीन पर इसकी खेती करने के बहुत सारे फायदे हैं।

**देसी पालक**

देसी पालक बाजार के अंदर बेहद अच्छे भाव में बिकता है। देसी पालक की पत्ती छोटी, चिकनी और अंडाकार होती हैं। यह बेहद शीघ्रता से तैयार हो जाती है। इस वजह से ज्यादातर किसान भाई इसकी खेती करते हैं।

**विलायती पालक**

विलायती पालक के बीज गोल एवं कटीले होते हैं। कटीले बीजों को पहाड़ी एवं ठंडे स्थानों में उगाना ज्यादा फायदेमंद होता है। गोल किस्मों की खेती भी मैदानों में की जाती है।

# फल

## भारत के इन क्षेत्रों में केले की फसल को पनामा विल्ट रोग ने बेहद प्रभावित किया है

भारत के अंदर केले का उत्पादन गुजरात, मध्य प्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश में उगाई जाती है। पनामा विल्ट रोग से प्रभावित इलाके बिहार के कटिहार एवं पूर्णिया, उत्तर प्रदेश के फैजाबाद, बाराबंकी, महाराजगंज, गुजरात के सूरत और मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जनपद हैं।

भारत में केले की खेती काफी बड़े पैमाने पर की जाती है। साथ ही, यह देश विश्व के सबसे बड़े केले उत्पादकों में से एक है। भारत विभिन्न केले की किस्मों की खेती के लिए जाना जाता है, जिनमें लोकप्रिय कैवेंडिश केले के साथ-साथ रोबस्टा, ग्रैंड नैने एवं पूवन जैसी अन्य क्षेत्रीय प्रजातियां भी शम्मिलित हैं। प्रत्येक किस्म की अपनी अलग विशेषताएं हैं। ऐसी स्थिति में यदि केले की फसल को कुछ हो जाए तो इसका प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव किसानों की आमदनी पर पड़ता है। साथ ही, देशभर के केला किसानों के लिए पनामा विल्ट रोग एक नई समस्या के रूप में आया है। यह बीमारी उनकी लाखों की फसल को बर्बाद कर रही है।

**पनामा विल्ट रोग**

यह एक कवक रोग है। इस संक्रमण से केले की फसल पूर्णतय बर्बाद हो सकती है। पनामा विल्ट फुसैरियम विल्ट टीआर-2 नामक कवक की वजह से होता है, जिससे केले के पौधों का विकास बाधित हो जाता है। इस रोग के लक्षणों पर नजर डालें तो केले के पौधे की पत्तियां भूरी होकर गिर जाती हैं। साथ ही, तना भी सड़ने लग जाता है। यह एक बेहद ही घातक बीमारी मानी जाती है, जो केले की संपूर्ण फसल को चौपट कर देती है। यह फंगस से होने वाली बीमारी है, जो विगत कुछ वर्षों में भारत के अतिरिक्त अफ्रीका, ताइवान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सहित विश्व के बहुत सारे देशों में देखी गई। इस बीमारी ने वहां के किसानों की भी केले की फसल पूर्णतय चौपट कर दी है।

वर्तमान में यह बीमारी कुछ वर्षों से भारत के किसानों के लिए परेशानी का कारण बन गई है।

**पनामा विल्ट रोग की इस तरह रोकथाम करें**

पनामा विल्ट रोग की रोकथाम के संबंध में वैज्ञानिकों एवं किसानों की सामूहिक कोशिशों से इस बीमारी का उपचार किया जा सकता है। वैज्ञानिकों का कहना है, कि पनामा विल्ट बीमारी की अभी तक कोई कारगर दवा नहीं मिली है। हालाँकि, CISH के वैज्ञानिकों ने ISAR-Fusicant नाम की एक औषधी बनाई है। इस दवा के इस्तेमाल से बिहार एवं अन्य राज्यों के किसानों को काफी लाभ हुआ है। सीआईएसएच विगत तीन वर्षों से किसानों की केले की फसल को बचाने की कोशिश कर रहा है। इस वजह से भारत भर के किसानों तक इस दवा को पहुंचाने की कोशिश की जा रही है।

**पनामा विल्ट रोग का इन राज्यों में असर हुआ है**

हमारे भारत देश में केले का उत्पादन बिहार, उत्तर प्रदेश, गुजरात एवं मध्य प्रदेश में किया जाता है। पनामा विल्ट रोग से प्रभावित बिहार के कटिहार और पूर्णिया, उत्तर प्रदेश के फैजाबाद, बाराबंकी, महाराजगंज, गुजरात के सूरत और मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जनपद हैं। ऐसी स्थिति में यहां के कृषकों के लिए यह बेहद आवश्यक है, कि वो अपने केले की फसल का विशेष रूप से ध्यान रखते हुए उसे इस बीमारी से बचालें।

# बाजार भेजने से पूर्व केले को कैसे तैयार करें कि मिले अधिकतम लाभ?

## बाजार भेजने से पूर्व केले को कैसे तैयार करें की मिले अधिकतम लाभ?

आभासी तने से केले की कटाई के उपरांत , केले को बंच से अलग अलग हथ्थे में अलग करते है। इसके बाद इन हथ्थों को फिटकरी के पानी की टंकी में डालें @ 1 ग्राम फिटकरी प्रति 2.5 लीटर पानी की दर से मिलाते है। केले के इन हथ्थों को लगभग 3 मिनट के लिए डुबाने के बाद निकल लें। फिटकरी के घोल की वजह से केले के छिलकों के ऊपर के प्राकृतिक मोम हट जाती है एवं साथ साथ फल के ऊपर लगे कीड़ों के कचरे भी साफ हो जाते हैं। यह एक प्राकृतिक कीटाणुनाशक के रूप में कार्य करता है। इसके बाद दूसरे टैंक में एंटी फंगल लिक्विड हुवा सान (HUWA SAN), जिसके अंदर लिक्विड सिल्वर कंपोनेंट्स के साथ हाइड्रोजन पेरोक्साइड होता है जो एंटीफंगल के रूप में काम करता है,जो फंगस को बढ़ने नहीं देता है।

हुवा सान एक बायोसाइड है एवं सभी प्रकार के बैक्टीरिया, वायरस, खमीर, मोल्ड और बीजाणु बनाने वालों के खिलाफ प्रभावी है। लीजियोनेला न्यूमोफिला के खिलाफ भी प्रभावी है। पर्यावरण के अनुकूल – व्यावहारिक रूप से पानी और ऑक्सीजन के लिए 100% अपघट्य हो जाता है। इसके प्रयोग से गंध पैदा नहीं होता है , उपचारित खाद्य पदार्थों के स्वाद को नहीं बदलता है। बहुत अधिक पानी के तापमान पर भी प्रभावशीलता और दीर्घकालिक प्रभाव देखे जाते हैं। अनुशंसित खुराक दर पर खपत के लिए सुरक्षित के रूप में मूल्यांकन किया गया। कोई कार्सिनोजेनिक या उत्परिवर्तजन प्रभाव नहीं, अमोनियम-आयनों के साथ प्रतिक्रिया नहीं करता है। इसे लम्बे समय तक भंडारित किया जा सकता है। 3% अनुशंसित दर पर प्रयोग करने से किसी भी प्रकार का कोई भी दुष्प्रभाव नहीं देखा गया है। इस घोल में केला के हथ्थों को 3 मिनट के लिए डूबाते है। हुवा सान @ 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर , घोल बनाते है। इस तरह से 500 लीटर पानी के टैंक में 250 मिलीलीटर हुवा सैन तरल डालते है । इन घोल से केले को निकालने के बाद केले से अतिरिक्त पानी निकालने के लिए केले को उच्च गति वाले पंखे से अच्छे ड्रेनेज फ्लोर पर जाली की सतह पर रखें। इस प्रकार से केले की प्रारंभिक तैयारी करते है। विशेष तौर से तैयार डिब्बों में पैक करते है। इस प्रकार से तैयार केलो को आसानी से दुरस्त या विदेशी बाज़ार में भेजते है।

**हुवा-सैन क्या है?**

हाइड्रोजन पेरोक्साइड और सिल्वर स्टेबलाइजर के संयोजन की प्रक्रिया दुनिया भर में अद्वितीय है और मूल हुवा-सैन तकनीक पर आधारित है, जिसे पिछले 15 वर्षों में रोम टेक्नोलॉजी में और विकसित किया गया था।

यह तकनीक अद्वितीय है क्योंकि पेरोक्साइड को स्थिर करने के लिए एसिड जैसे किसी अन्य स्थिरीकरण एजेंट की आवश्यकता नहीं होती है। यह सब Huwa-San Technology के उत्पादों को गैर-अवशिष्ट और अत्यंत शक्तिशाली कीटाणुनाशक बनाता है।हुवा-सैन एक वन स्टॉप बायोसाइडल उत्पाद है जो बैक्टीरिया, कवक, खमीर, बीजाणुओं, वायरस और यहां तक कि माइकोबैक्टीरिया के खिलाफ प्रभावी है और इसलिए इस उत्पादों को वाष्पीकरण के माध्यम से पानी, सतहों, औजारों और यहां तक कि बड़े खाली क्षेत्रों को कीटाणुरहित करने के लिए कई क्षेत्रों में उपयोग किया जा सकता है।

पिछले 15 वर्षों में, हुवा-सैन उत्पादों का प्रयोगशाला पैमाने पर और दुनिया भर में कई फील्ड परीक्षणों पर बड़े पैमाने पर परीक्षण किया गया था। तकनीकी ज्ञान के साथ हुवा-सैन के व्यापक अनुप्रयोग स्पेक्ट्रम के भीतर जानकारी की प्रचुरता विश्वव्यापी सफलता की कुंजी रही है।

Huwa-San को लैब और फील्ड टेस्ट सेटिंग्स में पूरी तरह से शोध और विकसित किया गया है ,यह पूर्णतया सुरक्षित है और ये नतीजतन, हुवा-सैन उत्पाद कीटाणुशोधन के लिए नवीनतम मानकों को पूरा करते हैं ।

# युबारी किंग मेलन की कीमत जान आपके होश उड़ जाएँगे, सिर्फ अमीर लोग ही इसका सेवन करते हैं

युबारी किंग की खेती करना किसानों के लिए काफी फायदेमंद है। इसकी खेती वर्षों भर की जाती है। बतादें, कि इसकी पैदावार अक्टूबर से मार्च महीने के मध्य होती है। साथ ही, इसकी खेती भी अलग ढ़ंग से की जाती है। इसके खेत में भिन्न प्रकार के उर्वरकों का भी उपयोग किया जाता है। इसकी वजह से युबारी किंग काफी दिनों तक खराब नहीं होता है।

खरबूज का सेवन करना हर किसी को पसंद है। इसमें पोटेशियम बेहद ही ज्यादा मात्रा में पाया जाता है। इसका सेवन करने से ब्लड प्रेशर नियंत्रण में रहता है। इसके साथ ही हार्ट से जुड़ी बहुत सारी बीमारियां भी ठीक हो जाती हैं। यही कारण है, कि बाजार में इसकी सदैव माँग बनी रहती है। अप्रैल से लेकर मई महीने तक यह बाजार में बड़ी सहजता से प्राप्त हो जाता है। ऐसे वक्त इसकी कीमत 50 से 60 रुपये किलो होता है। परंतु, आज हम खरबूज की एक ऐसी प्रजातियों के विषय में बात करेंगे, जिसकी गिनती विश्व के सर्वाधिक महंगे फ्रूट में की जाती है। इसकी कीमत हजारों में नहीं बल्कि लाखों में होती है। इतनी कीमत में आप बहुत सारी लग्जरी कार खरीद लेंगे।

**इस फ्रूट का नाम युबारी कैसे पड़ा है**

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि आज हम जिस खरबूज के विषय में बात कर रहे हैं, उसका नाम युबारी किंग है। ऐसा कहा जाता है, कि यह विश्व का सबसे महंगा फल है। यह एक प्रकार का जापानी खरबूज है। इसकी खेती सिर्फ जापान में ही की जाती है। युबारी मेलन की खेती जापान के होकैडो द्वीप पर स्थित युबारी शहर में ही की जाती है। केवल इसी के चलते इसका नाम युबारी मेलन पड़ा। जानकारों का कहना है, कि युबारी शहर का तापमान इस फल के लिए काफी अच्छा होता है।

युबारी किंग को भारत के लगभग 30 तोले सोने की कीमत पर बेचा गया

युबारी शहर में दिन एवं रात के तापमान में काफी ज्यादा अंतराल होता है, जो कि युबारी मेलन के लिए 'अमृत' का कार्य करता है। ऐसा कहा जाता है, कि दिन एवं रात के तापमान में जितना अधिक अंतर होगा, खरबूज उतना ही ज्यादा मीठा और स्वादिष्ट होगा। युबारी किंग की सबसे बड़ी खास बात यह है, कि इसकी बिक्री नहीं की जाती है। दरअसल, युबारी किंग की नीलामी की जाती है। साल 2022 में एक युबारी किंग की नीलामी 20 लाख रुपये में की गई थी। साथ ही, साल 2021 में 18 लाख रुपये में इस फ्रूट की बिक्री की गई थी। इसका एक मतलब यह हुआ कि भारत में एक युबारी किंग की कीमत के अंदर 30 तोला सोना आसानी से खरीद सकते हैं।

**युबारी मेलन का केवल अमीर लोग ही सेवन करते हैं**

युबारी किंग एक संक्रमण रोधी फल होता है। ऐसी स्थिति में इसका सेवन करने से शारीरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। इसमें पोटेशियम के अतिरिक्त विटामिन सी,फोस्फोरस, विटामिन ए एवं कैल्शियम भी पाया जाता है। यही कारण है कि इसकी बाजार में काफी ज्यादा माँग है। परंतु, दुनिया के अमीर लोग ही इसका सेवन करते हैं। किसान युबारी मेलन से ना सिर्फ अपनी आजीविका चला सकते हैं। साथ ही, सेहत के लिए भी काफी बेहतरीन होते हैं।

syngenta®

# EVERYONE HAS A RIGHT TO EAT HEALTHY

# ब्लूकॉन फूल की खेती

## ब्लूकॉन फूल की खेती से बुंदेलखंड के किसानों को अच्छा-खासा लाभ हो रहा है

आपकी जानकारी के लिए बतादें कि कृषि विभाग के उपनिदेशक विनय कुमार यादव के अनुसार ब्लूकॉन की नर्सरी नवंबर महीने में तैयार की जाती है। साथ ही, रोपाई करने के तीन माह के पश्चात पौधों पर फूल आने लगते हैं। ब्लूकॉन के फूल से आयुर्वेदिक औषधियां निर्मित की जाती हैं। यही कारण है, कि ब्लूकॉन के फूल को दवा कंपनियां हाथों-हाथ खरीद लेती हैं।

बुंदेलखंड का नाम कान में पड़ते ही लोगों के दिमाग में सबसे पहले सूखाग्रस्त क्षेत्रों की तस्वीर उभरकर सामने आती है। क्योंकि बुदेलखंड क्षेत्रों में पानी की काफी ज्यादा परेशानी है। बारिश भी उत्तर प्रदेश के बाकी जिलों की अपेक्षा यहां पर बेहद कम होती है। ऐसी स्थिति में यहां के किसान अधिकांश मक्का एवं बाजरा जैसे मोटे अनाज की ही खेती करते हैं। इससे किसानों की काफी कम आमदनी होती है। परंतु, अब यहां के किसान भी अन्य दूसरे राज्यों के किसानों की भांति ही आधुनिक फसलों की खेती कर रहे हैं। यहां के कृषक अब बागवानी में जरूरत से कुछ ज्यादा ही रूचि ले रहे हैं। इससे किसान भाइयों की आमदनी बढ़ गई है।

### बुंदेलखंड के किसान कर रहे ब्लूकॉन फूल की खेती

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि बुदेलखंड इलाकों के कृषक अब ब्लूकॉन फूल की खेती कर रहे हैं। यह एक प्रकार का विदेशी फूल होता है। इसकी खेती केवल जर्मनी में की जाती है। परंतु, अब बुंदेलखंड इलाकों में भी कृषकों ने ब्लूकॉन की खेती चालू कर दी है। इस फूल की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि इसे सिंचाई की बहुत कम जरूरत पड़ती है। मतलब कि इसे सूखाग्रस्त क्षेत्र में भी उगाया जा सकता है। यही कारण है, कि जर्मनी के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में ब्लूकॉन को उगाया जाता है।

### ब्लूकॉन के फूल बेचकर 9 लाख रुपये तक की आय कर सकते हैं

विशेष बात यह है, कि यदि आप एक बीघे में इसकी खेती करते हैं, तो आप प्रतिदिन 15 किलो तक आसानी से फूल तोड़ सकते हैं। मतलब कि आप एक बीघे भूमि से प्रतिदिन 30 हजार रुपये की आमदनी कर सकते हैं। इस प्रकार किसान भाई फूल बेचकर प्रति माह 9 लाख रुपये कमा सकते हैं।

### ब्लूकॉन का फूल 2000 रुपए प्रति किलो मिलता है

दरअसल, फिलहाल बुंदेलखंड और झांसी में भी इसकी खेती को प्रोत्साहन देने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार प्रयास कर रही है। विशेषज्ञों की मानें तो यहां की जलवायु ब्लूकॉन फूल की खेती के लिए अनुकूल है। साथ ही, कृषि विभाग इन फूलों की नर्सरी तैयार कर रहा है। सरकार किसानों को इसकी खेती करने के लिए वितरित कर रही है। बाजार के अंदर ब्लूकॉन का फूल 2000 रुपए प्रति किलो मिलता है।

# इस राज्य में कंदीय फूलों की खेती पर 50 प्रतिशत अनुदान मिलेगा, शीघ्र आवेदन करें

बिहार में राज्य सरकार की तरफ से कंदीय फूलों की खेती करने वाले किसानों को 50 प्रतिशत तक सबसिडी प्रदान की जा रही है। योजना का फायदा उठाने के लिए कृषक भाई आधिकारिक साइट पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

बिहार सरकार की ओर से किसानों को फूलों का उत्पादन करने के लिए निरंतर प्रोत्साहन दिया जा रहा है। राज्य सरकार ने फिलहाल एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना के अंतर्गत कंदीय फूल की खेती करने के लिए किसानों को 50 प्रतिशत अनुदान देने का फैसला लिया है। योजना का फायदा उठाने के लिए किसान आधिकारिक साइट HORTICULTURE.BIHAR.GOV.IN पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

**किसानों को 50 प्रतिशत अनुदान प्रदान किया जाऐगा**

बतादें, कि बिहार सरकार ने प्रति हेक्टेयर कंदीय फूलों की खेती हेतु लागत 15 लाख रुपये रखी है। इस पर सरकार 50 प्रतिशत अनुदान प्रदान करेगी। इस हिसाब से किसानों को सात लाख 50 हजार रुपये मिलेंगे। सब्सिडी का फायदा उठाने के लिए किसान आज ही आधिकारिक वेबसाइट HORTICULTURE.BIHAR.GOV.IN पर जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त वह अपने निकटतम उद्यान कार्यालय में सम्पर्क कर सकते हैं। योजना के अंतर्गत फायदा लेने के लिए किसानों को अपना आधार कार्ड, बैंक पासबुक की प्रति, राशन कार्ड, वोटर कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो, फोन आदि अपने पास जरूर रखने होंगे।

**बाजार में फूलों की प्रचंड मांग है**

बतादें, कि कंदीय फूल को गमले व जमीन दोनों में उगाया जा सकता है। इन फूलों की सजावट के काम में जरूरत पड़ती है। साथ ही बुके में भी इन फूलों का उपयोग किया जाता है। बाजार में ये फूल अच्छी-खासी कीमत में बिकते हैं। किसान भाई कंदीय फूलों की खेती कर कम समय में ज्यादा मुनाफा अर्जित कर सकते हैं। जानिए किन फूलों को कंदीय फूल कहा जाता है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि ऑक्जेलिक, हायसिन्थ, ट्यूलिप, लिली, नर्गिसफ्रिजिआ, डेफोडिल, आइरिस, इश्किया, आरनिथोगेलम को कंदीय फूल कहा जाता है।

# मशीनरी

## मध्य प्रदेश सरकार द्वारा कृषकों को कस्टम हायरिंग सेंटरों के जरिए किराये पर उपलब्ध कराई जा रही मशीनें

किसान भाई कस्टम हायरिंग सेंटरों से मशीन किराये पर लेकर खेती का कार्य सुगमता से कर सकते हैं। यदि आप सेंटर खोलने के लिए इच्छुक हैं, तो आपको स्नातक की डिग्री चाहिए। सरकार 10 लाख रुपये तक की सब्सिडी प्रदान करेगी। एक सेंटर निर्मित करने के लिए 25 लाख रुपये के निवेश की आवश्यकता पड़ेगी।

मध्य प्रदेश सरकार का कहना है, कि फसलों की उत्पादकता एवं किसानों का मुनाफा बढ़ाने के लिए कृषि क्षेत्र में मशीनों के उपयोग को प्रोत्साहन देना होगा। यह एक गलत धारणा है, कि मशीनीकरण से रोजगार के अवसरों में कोई गिरावट आती है। दरअसल, सच तो यह है कि इससे रोजगार की नवीन संभावनाएं बनती हैं। राज्य में इस वक्त 3800 कस्टम हायरिंग केंद्र (CHC) मतलब मशीन बैंक कार्य कर रहे हैं, जिन राज्यों में किसान मशीनों का अधिक उपयोग करते हैं, वो खेती में काफी आगे हैं। इसके लिए पंजाब एवं हरियाणा को उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है। मध्य प्रदेश भी इस दिशा में आगे बढ़ने के प्रयास में जुटा हुआ है। इसकी तस्दीक यहां पर होने वाली ट्रैक्टर बिक्री से की जा सकती है।

**किसानों ने विगत पांच वर्षों में 1 लाख 23 हजार ट्रैक्टर खरीदें हैं**

राज्य सरकार ने दावा किया है, कि मध्य प्रदेश के किसानों ने 2018-19 से अब तक बीते पांच साल में 1 लाख 23 हजार ट्रैक्टर खरीदे हैं। ट्रैक्टर की बिक्री कृषि विकास की निशानी मानी जाती है। कस्टमर हायरिंग सेंटर सहकारी समितियां, स्वयं सहायता समूह एवं ग्रामीण उद्यमियों द्वारा संचालित किया जाता है। जिससे कि लघु एवं मध्यम कृषकों को कृषि यंत्रों की सुविधा सुगमता से मिल जाए। यहां पर 2012 में कस्टम हायरिंग सेंटर निर्माण की पहल की गई थी।

**किसान भाइयों को मशीन बैंक का फायदा कैसे मिलता है**

कस्टम हायरिंग सेंटर इस उद्देश्य के साथ स्थापित किए गए हैं, कि वे 10 किलोमीटर के आस-पास के दायरे में लगभग 300 किसानों को सेवाएं दे सकें। इसके माध्यम से किसान अपनी आवश्यकता की मशीनों को किराये पर लेकर कृषि कार्य कर सकते हैं। इन केंद्रों की सेवाओं को अधिक फायदेमंद बनाने के लिए संख्या को सीमित रखा गया है। संपूर्ण राज्य में केवल 3800 मशीन बैंक कार्य कर रहे हैं।

कस्टम हायरिंग सेंटर से लघु व सीमांत किसानों को किराये पर मशीन उपलब्ध कराई जाती है, जिसके लिए भारी पूंजी निवेश की जरूरत होती है। राज्य सरकार 40.00 लाख से लेकर 2.50 करोड़ तक की कीमत वाली नवीन और आधुनिक कृषि मशीनों के लिए हाई-टेक हब तैयार कर रही है। अब तक 85 गन्ना हार्वेस्टर्स के हब निर्मित हो गए हैं। यह जानकारी मध्य प्रदेश के कृषि अभियांत्रिकी संचालक राजीव चौधरी द्वारा साझा की गई है।

**प्रदेश के युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं**

किसानों को कस्टम हायरिंग सेंटर का फायदा देने एवं किराये पर उपलब्ध कृषि मशीनों के संबंध में जागरूक करने के लिए एक अभियान जारी किया गया है। कस्टम हायरिंग सेंटर पर किसानों के ज्ञान एवं कौशल में सुधार करने के लिए प्रशिक्षण एवं कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं। कौशल विकास केंद्र भोपाल, जबलपुर, सतना, सागर, ग्वालियर, इंदौर, भोपाल, जबलपुर और सतना में ऐसा कार्यक्रम चल रहा है। इनमें ट्रैक्टर मैकेनिक एवं कंम्बाइन हार्वेस्टर ऑपरेटर कोर्स आयोजित किए जा रहे हैं। अब तक 4800 ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

जोश का
मेरा राज़
SWARAJ
ट्रैक्टर बोले तो
SWARAJ
SWARAJ 744 FE
POWERFUL ENGINE
STRONG FRONT AXLE
LED FENDER AND TAIL LAMP
NAYA SWARAJ, MERA SWARAJ

# स्वराज ट्रैक्टर द्वारा 40-50 एचपी श्रेणी में नई ट्रैक्टरों की सीरीज लॉन्च की गई है

## स्वराज ट्रैक्टर द्वारा 40-50 एचपी श्रेणी में नई ट्रैक्टरों की सीरीज लॉन्च की गई है

महिंद्रा समूह के एक भाग स्वराज ट्रैक्टर्स ने सोमवार को कहा कि उसने कृषकों की बढ़ती आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए 40-50 एचपी श्रेणी में ट्रैक्टरों की एक नई श्रृंखला विकसित करने के लिए 200 करोड़ रुपये का निवेश किया है। कंपनी का कहना है, कि नए उत्पाद अंततः इस श्रेणी में उसके मौजूदा ट्रैक्टरों की जगह ले लेंगे।

**अत्याधुनिक होंगे नए ट्रैक्टर मॉडल**

महिंद्रा एंड महिंद्रा (एमएंडएम) के स्वराज डिवीजन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हरीश चव्हाण का कहना है, कि नए उत्पाद आधुनिक कृषि की मांगों को पूर्ण करने के लिए विकसित किए गए हैं। उन्होंने कहा, "नई रेंज नई सुविधाओं, कृषि अनुप्रयोगों के विभिन्न सेट के साथ आती है। हम भविष्य के लिए तैयार रहना चाहते हैं और यही कारण है कि हम नए ट्रैक्टर पेश कर रहे हैं।"

नए ट्रैक्टरों के बारे में विस्तार से पूछे जाने पर चव्हाण ने कहा, यह विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कम सुविधाओं वाले ट्रिम से लेकर चार-पहिया ड्राइव जैसी उच्च-स्तरीय सुविधाओं वाले वेरिएंट तक एक व्यापक बाजार रेंज है। नए ट्रैक्टर विकसित करने के लिए कंपनी के निवेश के बारे में चव्हाण ने कहा, "हमने परियोजना पर करीब 200 करोड़ रुपये का निवेश किया है।"

**इसको लेकर चव्हाण ने क्या कहा है**

घरेलू ट्रैक्टर उद्योग में 40-50 एचपी सेगमेंट की बिक्री लगभग 50 प्रतिशत है। स्वराज पंजाब के मोहाली में अपने दो विनिर्माण संयंत्रों से ट्रैक्टर बनाती है। चव्हाण ने कहा, "एक तीसरा संयंत्र भी निर्माणाधीन है। इस साल की तीसरी तिमाही तक आने की संभावना है। चौथी तिमाही में हम इसे चालू कर देंगे। संयंत्र कार्यान्वयन के अंतिम चरण में है।" नई ट्रैक्टर रेंज की कीमत बेस वेरिएंट के लिए 6.9 लाख रुपये (42 एचपी) है और 50 एचपी टॉप-एंड मॉडल के लिए 9.95 लाख रुपये तक जाती है।

# मिनी सेगमेंट के ये पांच ट्रैक्टर बागवानी एवं कमर्शियल कार्यों के लिए काफी फायदेमंद हैं

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि बाजार में आजकल मिनी ट्रैक्टर के बहुत सारे ऐसे मॉडल आ रहे हैं, जिनसे खेती-किसानी के समस्त कार्य हो रहे हैं। अत्याधुनिक तकनीक से निर्मित ये ट्रैक्टर लुक और डिजायन की बदौलत नये जमाने के किसानों के पसंदीदा हैं। इस वजह से इनकी मांग भी तीव्रता से बढ़ रही है।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि 5 लाख रुपये से कम बजट हैं और ऐसा ट्रैक्टर खरीदना है, जिससे आप खेती के कार्य पूर्ण कर सकें। उसे बागवानी के व्यवसाय में इस्तेमाल कर सकें। साथ ही, आवश्यकता पड़ने पर कमर्शियल कार्य भी पूरे हो सकें, तो इन सभी कामों के लिए बड़ा ट्रैक्टर खरीदने की आवश्यकता नहीं है। ये समस्त कार्य छोटा ट्रैक्टर भी बड़ी सहजता से पूरा कर सकता है। ट्रैक्टर बाजार में छोटे ट्रैक्टर का ट्रेंड काफी रफ्तार पकड़ रहा है। साथ ही, हर बड़ी कंपनी मिनी ट्रैक्टर के मॉडल लॉन्च कर रही है। 18-28HP की पावर में कौन से उत्तम 5 मिनी ट्रैक्टर हैं। जानें इनकी विशेषता और कीमतों के विषय में।

### 1 -SWARAJ CODE

किसान भाइयो स्वराज कोड 2WD ट्रैक्टर खेत में कार्य करने के लिए छोटा मगर काफी दमदार ट्रैक्टर है। इस मिनी ट्रैक्टर के उपयोग से बागबानी के कार्य अच्छी तरह से किये जा सकते हैं। 11HP वाले इस ट्रैक्टर में 389CC का 1 सिलेंडर इंजन है। ट्रैक्टर का भार लगभग 455 किलोग्राम है। वहीं, इसकी लिफ्टिंग क्षमता की बात की जाए तो 220 किलोग्राम है। ट्रैक्टर में 2 व्हील ड्राइव है। इसमें 6 गियर हैं, जिसमें से 6 फॉरवर्ड एवं 3 रिवर्स गियर हैं। ट्रैक्टर में ऑइल इमर्स्ड ब्रेक मौजूद हैं। स्वराज कोड ट्रैक्टर की कीमत 2.45- 2.50 लाख रुपये है।

### 2 -KUBOTA NEOSTAR A211N-OP

बतादें, कि मिनी सेगमेंट ट्रैक्टर के अंतर्गत कुबोटा न्यूस्टार A211N-OP भी एक अच्छा विकल्प है। इस ट्रैक्टर में 1001 CC का 3 सिलेंडर इंजन है, जिसकी पावर 21 हॉर्सपावर है। इस ट्रैक्टर में सिंगल ड्राई सिंगल प्लेट क्लच सिस्टम है। इसका स्टेयरिंग मैनुअल है, 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गीयर हैं। इसकी कीमत 4.40 लाख रुपये से चालू है। कम कीमत में ये किसानों के लिए एक दमदार ट्रैक्टर है, जो कि खेती के अतिरिक्त बागवानी के कार्यों को भी सुगमता से कर सकता है।

### 3 -NEW HOLLAND SIMBA 30

किसान भाइयों के लिए मिनी ट्रैक्टर में खरीदने के लिए न्यू हॉलैंड का SIMBA 30 भी उत्तम विकल्प है। इस ट्रैक्टर में 4 व्हील ड्राइव है और 29 HP का इंजन है। इसमें 9 फॉरवर्ड गेयर के साथ 3 रिवर्स गेयर मौजूद हैं। ट्रैक्टर में पावर स्टेयरिंग एवं ऑइल इमर्स्ड ब्रेक हैं। इसकी लिफ्टिंग कैपेसिटी 750 किलोग्राम है। ट्रैक्टर की कीमत 5 लाख रुपये से चालू होती है।

### 4 – MAHINDRA OJA 2121

यह न्यू लॉन्च ट्रैक्टर 4WD विशेषताओं से युक्त है, जिससे यह कितने भी ऊबड़-खाबड़ अथवा ऊंची नीची जगह पर चल सकता है। इस ट्रैक्टर में 3 सिलेंडर के साथ 21 HP का इंजन लगा है, जिससे इसका माइलेज बेहद शानदार आता है। ट्रैक्टर में 2400RPM है। ट्रैक्टर में 12 फॉरवर्ड के साथ 12 ही रिवर्स गीयर मौजूद हैं। ट्रैक्टर में ऑइल इमर्स्ड ब्रेक उपलब्ध हैं। ये फ्यूल एफिशियेंट ट्रैक्टर है। इसमें आपको पावर स्टेयरिंग मिलेगा। इसके रियर टायर का आकार 8×18 है। ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 950 किलोग्राम है।

### 5 – SONALIKA MM18

सोनालिका मिनी ट्रैक्टर MM 18 में 863.5CC के साथ 18HP का इंजन उपलब्ध है। यह सिंगल सिलेंडर एवं वॉटर कूल्ड इंजन है, जो 1200RPM पर 54NM टॉर्क उत्पन्न करता है। इसके फ्यूल टैंक की क्षमता 28 लीटर है। सोनालिका मिनी ट्रैक्टर MM 18 में स्लाइडिंग मैश के साथ मैनुअल गीयरबॉक्स है। ट्रैक्टर में ड्राई ब्रेक और मेकेनिकल स्टीयरिंग मौजूद है। इसमें सिंगल क्लच सिस्टम है और डुअल PTO और PTO स्पीड 540 है। सोनालिका मिनी ट्रैक्टर MM 18 का वजन 1160 किलोग्राम है। इसकी कीमत 3 लाख रुपये से कम है।

# मौसमी व अन्य कृषि सुझाव

## किसान भाई किचन गार्डनिंग के माध्यम से सब्जियां उगाकर काफी खर्च से बच सकते हैं

किचन गार्डनिंग के माध्यम से आप भी घर में ही सब्जियों को उगा सकते हैं। यह सब्जी शुद्ध होंगी साथ ही बाजार से इन्हें खरीदने का झंझट भी समाप्त हो जाएगा। महंगाई के दौर में आप घर में ही सब्जियों की पैदावार कर सकते हैं, जिससे आप काफी रुपये बचा सकते हैं। ये सब्जियां घर में थोड़ी जगह में ही उग जाती हैं, जिसमें आपकी ज्यादा लागत भी नहीं आती है। विशेषज्ञों की मानें तो बालकनी में सब्जियां पैदा करने के दौरान आपको कुछ विशेष बातों का ख्याल रखना होता है, जिससे कि आप कम लागत में शानदार पैदावार अर्जित कर सकते हैं।

आपको आसमान में पहुंचे टमाटर के भाव तो याद ही होंगे, इसी प्रकार की परेशानियों से संरक्षण के लिए आप किचन गार्डनिंग की मदद ले सकते हैं। इसमें आप टमाटर, मिर्च, भिंडी अथवा धनिया के अतिरिक्त बहुत सारी और सब्जियां भी उगा सकते हैं। इसके लिए मिट्टी से भरे कुछ गमले एवं धूप जरूरी है।

**किसान भाई बड़े गमलों के अंदर ही रोपाई करें**

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि अधिकांश सभी के घर की बालकनी में धूप आती है। ऐसी स्थिति में बालकनी में सब्जियां उगाना एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। इससे आपके घर में सदैव हरियाली बनी रहेगी। पैसे बचेंगे एवं शुद्ध सब्जियां आपको अपने घर में मिल जाएंगी। किचन गार्डनिंग के दौरान इस बात का विशेष ख्याल रखें कि सब्जियों के पौधों की रोपाई बड़े गमलों में की जाए, जिससे जड़ों को फैलने का पर्याप्त अवसर मिलता है।

**किसान भाई मौसम का विशेष ख्याल रखें**

बतादें कि इसके अतिरिक्त बड़े गमले में पौधे मजबूत बनेंगे और पौधों में फल भी अच्छी मात्रा में आएंगे। विशेषज्ञ कहते हैं, कि किचन गार्डनिंग में भी मौसम का ध्यान रखना काफी आवश्यक है। बिना मौसम के लगाई गई सब्जियों से फल हांसिल कर पाना काफी मुश्किल होता है। बालकनी में खेती कर आप महीने के हजारों रुपये आसानी से बचा सकते हैं। आप स्वयं ही घर में टमाटर, भिन्डी, धनिया और मिर्च उगाकर उपयोग में ले सकते हैं। किसानों को रसोई बागवानी के विषय में जानकारी होनी काफी आवश्यक है। क्योंकि किचन गार्डनिंग के दौरान थोड़ा बहुत मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। किसानों को बेहद आरंभिक तोर पर किचन गार्डनिंग का उपयोग करना चाहिए। मौसम की वजह से किसानों को टमाटर की काफी अधिक कीमत चुकानी पड़ी।

# FIELDKING

## Equipment that are Built Tough

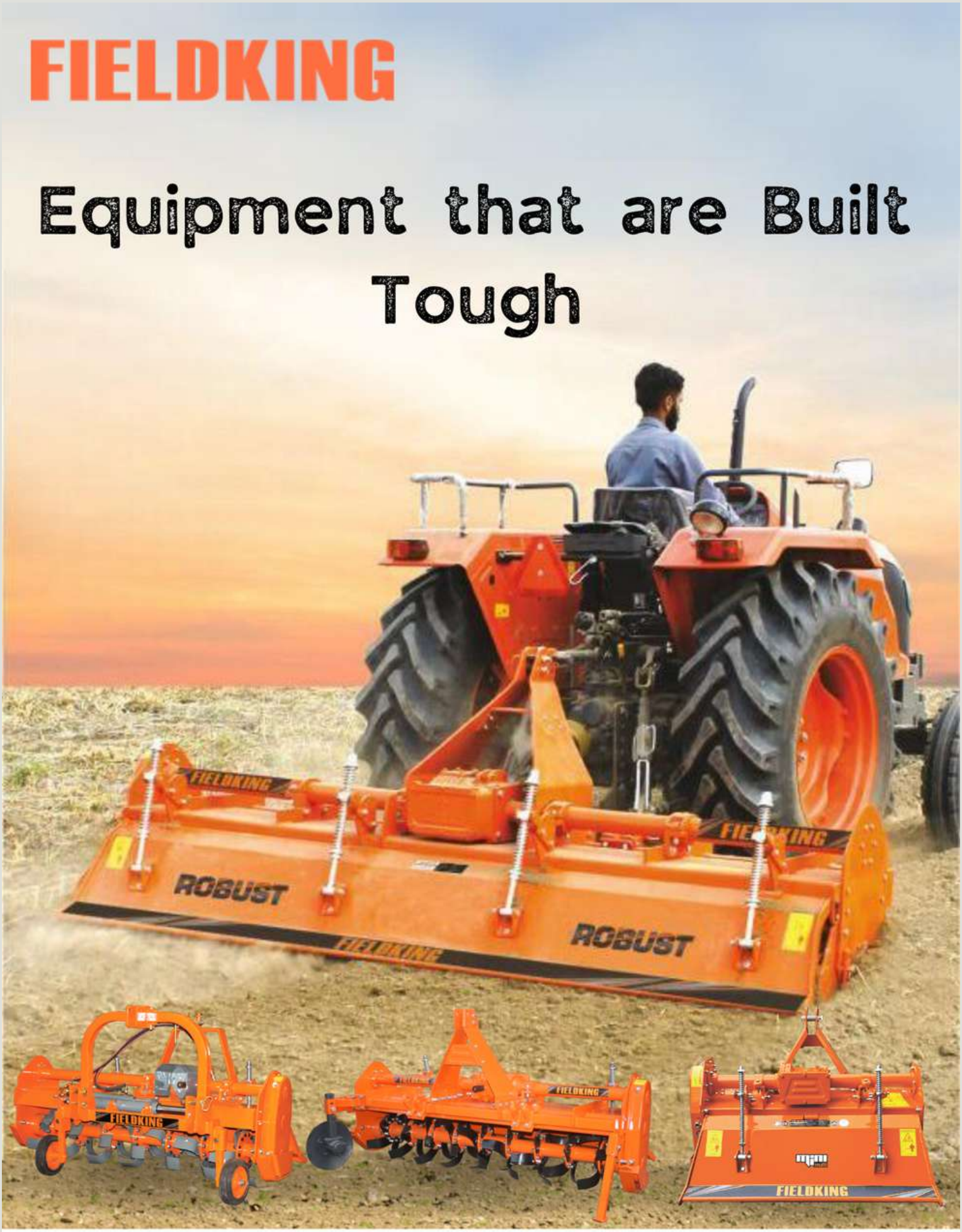


Add: Plot No.235, Sec-3, HSIIDC,
Karnal -132001 (Haryana), India

www.fieldking.com

Become a Dealer : +91 9254016570

+91 184 7156665 / 66

# आगामी रबी सीजन में इन प्रमुख फसलों का उत्पादन कर किसान अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं

किसान भाइयों जैसा कि आप जानते हैं, कि रबी सीजन की बुवाई का कार्य अक्टूबर से लेकर नवंबर माह तक किया जाता है। परंतु, उससे पूर्व किसान अपने खेतों में मृदा की जांच एवं संरक्षित ढांचे की तैयारी जैसे आवश्यक कार्य कर सकते हैं।

भारत में जलवायु परिवर्तन की परेशानी बढ़ती जा रही है, जिसका सबसे बड़ा प्रभाव खेती पर पड़ रहा है। इस समस्या से निजात पाने के लिये आवश्यक है, कि मिट्टी और जलवायु के हिसाब से फसलें एवं इनकी मजबूत प्रजातियों का चुनाव किया जाये। इसके अतिरिक्त खेत की तैयारी से लेकर खाद-उर्वरकों की खरीद तक कई सारे ऐसे कार्य होते हैं, जिनका समय पर फैसला लेना आवश्यक होता है।

**रबी सीजन की बुवाई अक्टूबर से नवंबर के बीच की जाती है**

सामान्य तौर पर रबी सीजन की बुवाई का कार्य अक्टूबर से लेकर नवंबर तक किया जाता है। परंतु, उससे पूर्व किसान अपने खेतों में मिट्टी की जांच और संरक्षित खेती की तैयारी जैसे आवश्यक कार्य कर सकते हैं। इसके उपरांत मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अनुसार, खेतों में अनाज, दलहन, तिलहन, चारे वाली फसलें, जड़ और कंद वाली फसलें, सब्जी वाली फसलें, शर्करा वाली फसलें एवं मसाले वाली फसलों की खेती की जा सकती है।

**रबी सीजन की प्रमुख अनाज फसलें**

रबी सीजन की प्रमुख नकदी और अनाज वाली फसलों में गेहूं, जौ, जई आदि शम्मिलित हैं। किसान भाई इन फसलों की खेती बड़े पैमाने पर करते हैं।

**रबी सीजन की दलहनी फसलें**

रबी सीजन की प्रमुख दलहनी फसलें प्रोटीन से युक्त होती हैं। इसका प्रत्येक दाना किसानों को अच्छी आमदनी दिलाने में सहायता करता है। इन फसलों में चना, मटर, मसूर, खेसारी इत्यादि दालें शम्मिलित हैं।

**रबी सीजन की तिलहनी फसलें**

तिहलनी फसलें तेल उत्पादन के मकसद से पैदा की जाती हैं, जिनसे किसानों को काफी अच्छी आमदनी होती है। रबी सीजन की प्रमुख तिलहनी फसलों में सरसों, राई, अलसी, तोरिया, सूरजमुखी की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

**रबी सीजन की चारा फसलें**

पशुओं के लिए प्रत्येक सीजन में पशु चारे का इंतजाम होता रहे। इसी मकसद से चारा फसलों की बुवाई की जाती है। रबी सीजन की इन चारा फसलों में बरसीम, जई और मक्का का नाम शम्मिलित है।

**रबी सीजन की मसाला फसलें**

रबी सीजन के अंतर्गत कुछ मसालों की भी खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। इनमें मंगरैल, धनियाँ, लहसुन, मिर्च, जीरा, सौंफ, अजवाइन आदि सब्जियां शम्मिलित हैं।

**रबी सीजन की प्रमुख सब्जी फसलें**

अधिकांश किसान पारंपरिक फसलों को छोड़कर बागवानी फसलों की खेती करते हैं। विशेष रूप से बात करें सब्जी फसलों की तो यह कम समय में ज्यादा मुनाफा देती हैं। रबी सीजन की प्रमुख सब्जी फसलों में लौकी, करेला, सेम, बण्डा, फूलगोभी, पातगोभी, गाठगोभी, मूली, गाजर, शलजम, मटर, चुकन्दर, पालक, मेंथी, प्याज, आलू, शकरकंद, टमाटर, बैगन, भिन्डी, आलू और तोरिया आदि फसलें उगाई जाती हैं।

# सामान्य लेख

## पोषक तत्वों से भरपूर काले अमरुद की खेती से जुड़ी जानकारी

## पोषक तत्वों से भरपूर काले अमरुद की खेती से जुड़ी जानकारी

काला अमरुद सिर्फ आमदनी के लिए ही नहीं बल्कि मानव सेहत के लिए भी बेहद फायदेमंद होता है। आज हम आपको इसके अद्भुत गुणों के साथ-साथ इसकी खेती की भी जानकारी देंगे।

हम सब अमरुद के संबंध में तो काफी अच्छे से जानते ही हैं। आज हम इसकी खेती को लेकर भी बहुत सी जानकारियों से परिचित हैं। परंतु, हम जिस अमरुद की चर्चा करने जा रहे हैं। वह सामान्य अमरुद की श्रेणी से अलग है और इतना ही नहीं इस अमरुद का रंग भी बाकी अमरुद से पूर्णतय भिन्न है।

**भारत के अंदर काला अमरुद इन जगहों पर उगाया जाता है**

काले अमरुद का उत्पादन भारत के उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में किया जाता है। परंतु, यदि बाकी अमरूदों से इसकी तुलना करें तो यह बेहद ही कम मात्रा में उगाया जाता है। इस पौधे की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि काले रंग में यह अमरुद ही नहीं होता बल्कि इसके पत्ते और पेड़ में भी आपको कालिमा स्पष्ट तौर पर दिखाई देगी। यदि हम इस अमरुद के भाव की बात करें तो यह बाकी अमरूदों की तुलना में सबसे अधिक होती है।

**काले अमरुद में पोषक तत्वों की भरपूर मात्रा होती है**

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि काले अमरुद में अगर हम पोषक तत्वों की बात करें तो यह एक औषधीय फल है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट सबसे अधिक मात्रा में पाया जाता है। इसके साथ यदि हम इसके बाकी तत्वों की बात करें तो इसके अंदर विटामिन-ए, विटामिन-बी, विटामिन सी, कैल्शियम और आयरन के साथ-साथ और भी बहुत से मल्टीविटामिन तथा मिनरल्स होते हैं। एक तरह से हम कह सकते हैं, कि यह अमरुद हमारे शरीर के लिए पूर्ण रूप से एक आयुर्वेदिक औषधी का कार्य करती है।

**काले अमरूद की खेती कैसे की जाती है**

काले अमरुद की खेती करने के लिए सर्वोत्तम समय ठण्ड का मौसम होता है। अगर आप मृदा की जांच करा कर इस पौधे को सही तरीके से बोते हैं, तो यह 2 से 3 साल में ही आपको फल देने लग जाता है। सामान्य रूप से इस पौधे के लिए दोमट मृदा सबसे अनुकूल होती है। आप इनके 1 से 3 वर्ष के पौधों में 10 से 20 किलो तक गोबर की खाद का उपयोग कर सकते हैं। इसके साथ ही सिंगल सुपर फास्फेट 250 से 750 ग्राम और म्यूरेट ऑफ पोटाश 200 से 400 ग्राम का इस्तेमाल करना चाहिए। हम इनके बेहतरीन विकास के लिए यूरिया 50 से 250 ग्राम और जिंक सल्फेट 25 ग्राम प्रति पौधा का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इन सब के उपरांत भी यदि आपके अमरुद के पेड़ में फूल नहीं आ रहे हैं, तो आप इसमें यूरिया अथवा एथेफॉन-यूरिया स्प्रे की उच्च सांद्रता का इस्तेमाल करें। यह पौधों में एक प्रेरक का कार्य करता है।

# बांस की खेती

## बांस की खेती से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी

दुनिया में आए दिन कोई न कोई खास दिन मनाया जाता है। ऐसी स्थिति में 18 सितंबर को संपूर्ण विश्व में बांस दिवस मनाया जाएगा। अध्यात्मिक, मांगलिक, साहित्यिक और जिविकोपार्जन के लिए बांस का काफी बड़ा महत्व है। बांस को गरीबों की लकड़ी अथवा गरीबों का हरा सोना भी कहा जाता है। आज पूरे भारत में बांस से निर्मित बस्तुओँ की उपयोगिता व्यापार के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

बांस से संबंधित फायदों एवं इसके प्रति लोगों को जागरुक करने के लिए संपूर्ण विश्व में 18 सितंबर को वर्ल्ड बैंबू डे अथवा विश्व बांस दिवस मनाया जाता है। बांस केवल जीविकोपार्जन के लिए ही नहीं बल्कि पर्यावरण के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है। यह ग्लोबल वार्मिंग को काफी कम करता है। साथ ही, सूर्य के बढ़ते ताप को कम कर अच्छी बारिश करवाने में भी सहायता करता है। किसानों को यह तो मालूम है, ही कि बांस का इस्तेमाल कागज निर्मित करने में भी किया जाता है।

**बांस के पेड़ का महत्व**

बांस का इस्तेमाल तो मध्य प्राषाण काल से ही होता आ रहा है। पतले पत्थरों के औजार में बांस के बेंत का इस्तेमाल होता था। साथ ही, तीर-कमान भी ज्यादातर बांस से ही निर्मित हुआ करते थे। धीरे-धीरे जैसे वक्त बदला बांस की उपयोगिता भी बढ़ती गई। आवश्यकता के अनुसार बांस से निर्मित वस्तुओं की रुपरेखा बदलती गई। संगीत के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्र बांस से ही बने। साथ ही साथ बहुत सारे मांगलिक अवसरों पर बांस का इस्तेमाल हजारों वर्ष पूर्व से होता आ रहा है। बहुत सारे तीज-त्योहारों में भी बांस की समाग्रियों का होना बेहद जरूरी है। परंपरा के मुताबिक, बांस की कोपलों से लेकर हरे एवं सूखे बांस की स्वयं की मान्यता है।

**बांस के अंदर विघमान औषधीय गुण**

- बांस की कोपलें पाचन तंत्र को सशक्त बनाने में काफी सहायता करती हैं।
- बांस की कोपला का नियमित तौर पर सेवन करने से हड्डियां सशक्त होती हैं।
- बांस का पेड़ पर्यावरण के संरक्षण में जितनी सहायता करता है, उससे बहुत गुना अधिक मनुष्य और अन्य जीवों की बहुत सारी बीमारियों के उपचार में भी सहायता करता है। बांस की टहनियों में अमीनो एसिड, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फाइबर एवं विभिन्न मिनरल्स व विटामिन पाए जाते हैं।
- विटामिन व मिनल्स भरपूर होने की वजह से इसकी पतली टहनियों का नियमित सेवन करने से इम्यून सिस्टम बेहद मजबूत होता है। जो कि विभिन्न प्रकार के संक्रमण रोगों से लड़ने में सहायता करता है। बांस की खेती करना काफी मुनाफे का सौदा है।

# जैविक खेती के लिए किन बातों को महत्व दें और बेहतर बनाने के प्रमुख तरीके

जैविक खेती को अपनाकर कृषक काफी बेहतरीन आमदनी कर सकते हैं। आज हम इसके कई तरह के फायदों के विषय में जानकारी देने जा रहे हैं। जैविक खेती की सफलता मृदा, फसल की किस्म एवं भारतीय बाजार में होने वाली मांग पर आश्रित रहती है। यदि सही ढ़ंग से जैविक खेती के जरिए फसलों की पैदावार की जाए तो इसकी बाजार में बेहद अच्छी कीमत मिलती है। जैविक फसलों की विदेशों में भी काफी ज्यादा मांग रहती है। जैविक खेती करने के लिए बेहद अच्छी जानकारी होनी आवश्यक है।

**जैविक खेती को फायदेमंद बनाने का तरीका**

**फसल उत्पादन बाजार की मांग के आधार पर करना चाहिए**

खेती को लाभकारी बनाने के लिए बाजार की समझ होनी सबसे आवश्यक होती है। मौसम के मुताबिक होने वाली मांग को पूर्ण करने के लिए किसान को उसके मुताबिक अपनी फसल की पैदावार करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रकार के अनुसंधान को भी समझना चाहिए। साथ ही, बाजार की मांग एवं रुझान को भी विशेष महत्व प्रदान करना चाहिए।

**फसलों में वैल्यू एडीशन बेहद आवश्यक**

खेती की विभिन्न प्रकार की उत्पादित की गई फसलों के बेहतर मूल्य के लिए इनका वैल्यू एडीशन करना बेहद ही आवश्यक होता है। भारत की फूड इन्डस्ट्री से आप सीधा संपर्क कर अपनी पैदावार को एक बेहतर रुप देकर बेहतरीन आमदनी कर सकते हैं। इससे फसल को बेचने वाले बिचौलियों से भी छुटकारा मिलने के साथ-साथ मुनाफा भी काफी अच्छा होगा।

**किसान ऑनलाइन माध्यम से भी अपनी फसल बेच सकते हैं**

किसानों को बाजार एवं मंडियों की समझ के लिए फिलहाल ऑनलाइन सुविधा सहजता से प्राप्त हो जाती है। इस ऑनलाइन प्लेटफार्म की सहायता से किसान अपनी पैदावार को भारत के किसी भी इलाके में मनचाहे भाव पर बेच पाऐगा।

**उत्पादन के लिए फसल विविधीकरण काफी उत्तम होता है**

फसल विविधीकरण से पैदावार तो उत्तम होती ही है। साथ ही, इसके अतिरिक्त यह मिट्टी की उत्पादन क्षमता को भी काफी बढ़ाता है। फसलों में विविधता लाने से इनके खराब होने का जोखिम कम हो जाता है और खेती में खर्चे की भी काफी कमी आती है।

**भारत सरकार किसानों को अनुदान मुहैय्या कराती है**

भारत सरकार देश के किसानों के फायदे के लिए खेती को लेकर अनुदान उपलब्ध कराती रहती है। ऐसी स्थिति में किसानों को इसका समुचित लाभ अवश्य लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त खेती के लिए उपयोग होने वाले संयंत्रों का इस्तेमाल कर उत्पादन को भी काफी अच्छा किया जा सकता है।

# सरकारी नीतियां

## भारत सरकार ने एकीकृत योजना का अनावरण किया, जानें इससे किसानों को क्या फायदा होगा

भारत सरकार द्वारा एकीकृत योजना लॉन्च की गई है। किसानों के हित में आए दिन केंद्र एवं राज्य सरकारें अपने अपने स्तर से योजनाएं जारी करती रहती हैं। इस बार किसानों के लिए केंद्र सरकार ने UPAG लॉन्च की है। आज हम अपने इस लेख में जानेंगे कि क्या एकीकृत योजना से किसानों की आमदनी पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। सरकार द्वारा हर संभव प्रयास किया जा रहा है, कि किसी तरह से किसानों की आय दोगुनी की जाए।

कृषि मंत्रालय द्वारा लॉन्च एकीकृत पोर्टल UPAG में कृषि से संबंधित जानकारियां मौजूद होंगी। यह एक डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर का एक महत्वपूर्ण अंग बनेगा। भारत सरकार ने देश के किसानों के लिए कृषि से जुड़ा एक यूनिफाइड पोर्टल लॉन्च किया है। यह एकीकृत पोर्टल (UPAG) कृषि के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर का एक महत्वपूर्ण घटक है। खेती से संबंधित आकड़ों को इकट्ठा कर यह पोर्टल एक सुचारु सुविधा प्रदान करेगा।

**यूनिफाइड पोर्टल का काम क्या है**

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस पोर्टल का प्रमुख उद्देश्य खेती से संबंधित मानकीकृत एवं सत्यापित आंकड़ों की कमी से जुड़ी चुनौतियों को दूर करना एवं उससे संबंधित सही-सटीक आंकड़ों को प्रस्तुत करना है। यह नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं एवं अंशधारकों के लिए खेती से संबंधित समस्याओं को कम करेगा। भारत सरकार ने UPAg (कृषि सांख्यिकी के लिए एकीकृत पोर्टल) का अनावरण किया है। कृषि मंत्रालय के मुताबिक, कृषि क्षेत्र में डेटा प्रबंधन को कारगर बनाने एवं खेती से जुड़ी कई तरह की सूचनाओं को सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है। यह पोर्टल एक ज्यादा कुशल एवं उत्तरदायी कृषि नीति ढांचे की स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम प्रदान करता है।

**एकीकृत स्त्रोत का होगा डेटा**

भारत सरकार के पास कृषि से जुड़े किसी डेटा की एकीकृत जानकारी नहीं है। साथ ही, खेती से संबंधित विभिन्न स्त्रोत भी बिखरे हुए हैं। ऐसी स्थिति में इस यूनिफाइड पोर्टल का उद्देश्य डेटा को एक मानकीकृत प्रारूप में समेकित कर इसको ठीक करना है। ताकि उपयोगकर्ताओं के लिए इसे सुगमता से पहुंचाया जा सके। साथ ही, खेती से संबंधित विभिन्न कार्यो की सही और सटीक सुनिश्चित समझ विकसित की जा सके।

IFFCO

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

NEW PRODUCT RANGE OF

# WATER SOLUBLE FERTILIZERS

केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री ने कृषि भवन में "पीएम किसान चैटबॉट" (किसान ई-मित्र) का अनावरण किया

# केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री ने कृषि भवन में "पीएम किसान चैटबॉट" (किसान ई-मित्र) का अनावरण किया

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री द्वारा कृषि भवन में "PM KISAN AI CHATBOT (KISAN E-MITRA)" को लॉन्च करते हुए कहा है, कि किसानों को होने वाली असुविधाओं का निराकरण करने के लिए यह बेहद कारगर सिद्ध होगा।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने आज AI CHATBOT लॉन्च किया, जो प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का भाग है। AI CHATBOT का उद्घाटन पीएम-किसान योजना को ज्यादा प्रभावी बनाने एवं किसानों को उनके सवालों का त्वरित, स्पष्ट एवं सही उत्तर देने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

बतादें, कि इस दौरान राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने कहा है, कि कृषि क्षेत्र को तकनीक से जोड़ने का यह महत्वपूर्ण कदम कृषकों के जीवन में व्यापक बदलाव लाने वाला है। कृषि राज्य मंत्री ने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अच्छे शासन के अंतर्गत तकनीक के इस्तेमाल को बढ़ावा देने का आह्वान किया है। दरअसल, आज की गई कार्रवाई इसमें कामयाब होगी। ड्रोन के जरिए से खेती करने की तकनीक का प्रभाव है, जिससे युवा कृषि की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यही वजह है कि भारत के कृषि क्षेत्र में नए-नए उद्यम चालू हो रहे हैं।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री ने क्या कहा है
केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री ने राज्य के अधिकारियों से कहा है, कि वह किसानों को AI चैटबॉट का इस्तेमाल करने के लिए प्रशिक्षण दें। बतादें, कि समुचित निगरानी रखें एवं प्रारंभिक दौर में आने वाली किल्लतों का तुरंत प्रभाव से समाधान करें। उन्होंने इस कवायद को मौसम, फसल नुकसान, मृदा की स्थिति, बैंक भुगतान इत्यादि से जोड़ने पर विशेष जोर दिया।

**AI Chatbot शीघ्र 22 भाषाओं में उपलब्ध होगा**

AI Chatbot को पीएम-किसान शिकायत प्रबंधन प्रणाली में शुरू करने का उद्देश्य किसानों को एक सुगम और सरल प्लेटफार्म देना है। AI Chatbot अपने विकास के प्रथम चरण में किसानों को उनके आवेदन की स्थिति, भुगतान विवरण, अपात्रता की स्थिति एवं अन्य योजना-संबंधी अपडेट प्राप्त करने में मदद करेगा। पीएम-किसान लाभार्थियों की भाषाई एवं क्षेत्रीय विविधता को पूरा करते हुए AI Chatbot को पीएम-किसान मोबाइल एप में भाषिनी के साथ एकीकृत किया गया है। दरअसल, वर्तमान में चैटबॉट छह भाषाओं में मौजूद है, जिनमें अंग्रेजी, हिंदी, बंगाली, उड़िया एवं तमिल शम्मिलित हैं। शीघ्र ही यह देश की 22 भाषाओं में उपलब्ध होगा।

# किसान क्रेडिट कार्ड बनवाना हुआ बेहद आसान, आवेदन के 14 दिन के अंदर मिल जाऐगा कार्ड

किसान क्रेडिट कार्ड तैयार करने की प्रक्रिया को काफी सुगम कर दिया गया है। किसान भाइयों को वर्तमान में केवल 14 दिन के अंदर ही उनका किसान क्रेडिट कार्ड प्राप्त हो जाया करेगा। सरकार की ओर से किसानों की सहायता के लिए विभिन्न योजनाएं चल रही हैं। खेती के दौरान आने वाली आर्थिक चुनौतियों के समय किसानों की सहायता के लिए सरकार की ओर से किसान क्रेडिट कार्ड निर्मित किए जाते हैं, जिसकी सहायता से किसान भाई आर्थिक फायदा पा सकते हैं।

बतादें, कि किसान क्रेडिट कार्ड एक ऐसी सरकारी योजना है, जिसे 1998 में किसानों को अतिरिक्त कर्ज देने के लिए जारी किया गया था। इसे नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट ने जारी किया था। इस योजना के माध्यम से किसान भाइयों को कर्जा मिलता है। इसके अतिरिक्त पात्र किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड के साथ एक सेविंग्स अकाउंट भी दिया जाता है, जिस पर किसानों को काफी अच्छी दर पर ब्याज मिलता है।

वर्तमान में सरकार की तरफ से किसान क्रेडिट कार्ड बनवाने की प्रक्रिया को सुगम कर दिया गया है। आवेदन पूर्ण करने के पश्चात महज 14 दिन के अंदर बैंक की तरफ से किसान को उनका कार्ड बनाकर प्रदान किया जाएगा।

**क्रेडिट कार्ड बनवाने की प्रक्रिया में हुआ बदलाव**

बतादें, कि आवेदन के उपरांत 14 दिन के समयांतराल में मिल जाया करेगा। दस्तावेजों पर लगने वाले अतिरिक्त शुल्क को हटा दिया गया है। आवेदन प्रक्रिया को काफी आसान कर दिया गया है। जागरुकता बढ़ाने के लिए प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

**किसान क्रेडिट कार्ड़ बनवाने के लिए जरूरी दस्तावेज**

- आवेदन पत्र
- पासपोर्ट साइज फोटो
- जमीन के दस्तावेज
- पहचान पत्र जैसे- पैन कार्ड, आधार कार्ड अथवा ड्राइविंग लाइसेंस
- एड्रेस प्रूफ जैसे- आधार कार्ड, वोटर आईडी अथवा ड्राइविंग लाइसेंस

# किसानों के हित में सरकार की तरफ से चलाई जा रहीं महत्वपूर्ण योजनाऐं

किसानों के सशक्तिकरण के लिए सरकार की ओर से विभिन्न योजनाएं जारी की जा रहीं हैं। इन योजनाओं का प्रत्यक्ष तौर पर लाभ किसान भाइयों को प्राप्त हो रहा है।

किसान भाइयों की आर्थिक हालत को सशक्त करने से लेकर फसल की बेहतर बढ़वार और बिक्री के लिए सरकार के तरफ से विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं का प्रमुख उद्देश्य किसान भाइयों का सशक्तिकरण है। मेरीखेती के इस लेख में आज हम आपको ऐसी योजनाओं के विषय में जानकारी देंगे, जो कि किसानों के फायदे के लिए सरकार की तरफ से चलाई जा रही हैं।

**किसानों के सशक्तिकरण हेतु चलाई जा रहीं योजनाएं इस प्रकार हैं**

**पीएम किसान सम्मान निधि योजना**

पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसान भाइयों को हर एक वर्ष सरकार की ओर से 6 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना के अंतर्गत किसानों के खातों में चार महीने के अंतराल पर दो-दो हजार रुपये भेजे जाते हैं।

**प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना**

यह योजना किसानों के लिए सुरक्षा कवच के तौर पर कार्य करती है। योजना के तहत रबी एवं खरीफ की फसलों का बीमा किया जाता है। रबी की फसल के लिए डेढ़ प्रतिशत और खरीफ के लिए लागत का 2 प्रतिशत प्रीमियम भरना होता है। अत्यधिक हानि होने की स्थिति में किसान भाई योजना के अंतर्गत मुआवजा प्राप्त कर सकते हैं।

**प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना**

फसलों की बेहतरीन सिंचाई के लिए सरकार प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना चला रही है। योजना के अंतर्गत किसानों को ड्रिप सिंचाई और स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। किसानों को 90 प्रतिशत तक अनुदान प्रदान किया जाता है।

**किसान क्रेडिट कार्ड**

खेती के कार्यों के लिए किसान भाइयों को धन की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में उनके लिए किसान क्रेडिट कार्ड योजना चलाई जा रही है, जिसके अंतर्गत किसान भाई कम ब्याज पर 50,000 रुपये से लेकर 3 लाख रुपये तक का ऋण अर्जित कर सकते हैं। किसानों को 1,50,000 रुपये तक का ऋण बिना किसी गारंटी के ही प्रदान किया जाता है। इन योजनाओं के अतिरिक्त सॉइल हेल्थ कार्ड, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, कृषि अवसंरचना कोष, ई-नाम और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना जैसी योजनाएं चलाई जा रहीं हैं।

# जनता की आवाज़,
# आपकी सफलता की कुंजी

## क्या आप जानते हैं कि जनता की नब्ज़ पर अपनी उंगली रखने से ही आप अपनी सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं?

## NETAHUB की मदद से आप कर सकते हैं

उत्पाद सर्वेक्षण

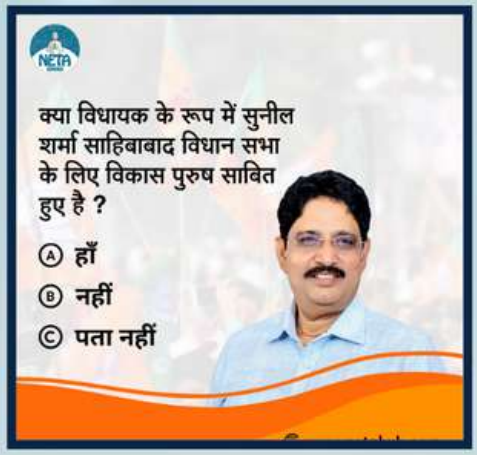


राजनीतिक सर्वेक्षण

लोकप्रियता सर्वेक्षण

netahub.com

NetaHub के साथ जुड़ें और आज ही अपनी सफलता की नई कहानी लिखें!

# खुशखबरी: वित्त मंत्री ने लांच किया किसान ऋण पोर्टल, अब आसानी से मिलेगा अनुदानित ऋण

सरकारी आंकड़ों के हिसाब से देखें तो सरकार ने चालू वित्त वर्ष में अप्रैल-अगस्त के दौरान सहूलियत ब्याज दर पर 6,573.50 करोड़ रुपये का कृषि-ऋण वितरित किया है। किसानों को वर्तमान में अनुदानित लोन बड़ी सुगमता से मिलेगा। मंगलवार 19 सितंबर 2023 को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एवं कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर किसान ऋण पोर्टल को लॉच किया है। किसान भाई इस पोर्टल के माध्यम से अपने घर बैठे किसान क्रेडिट कार्ड के अंतर्गत सब्सिडी वाला ऋण यानी लोन प्राप्त कर सकते हैं।

पूसा परिसर में आयोजित होने वाले एक कार्यक्रम के दौरान डोर-टू-डोर केसीसी अभियान एवं मौसम सूचना नेटवर्क डेटा सिस्टम (विन्ड्स) पोर्टल का एक मैनुअल भी प्रस्तुत किया गया।

**भारत में फिलहाल 7.35 करोड़ KCC अकाउंट मौजूद हैं**

कृषि मंत्रालय के अनुसार, किसान ऋण डिजिटल प्लेटफॉर्म-किसान डेटा, ऋण वितरण विशिष्टताओं, ब्याज छूट के दावों एवं योजना उपयोग की प्रगति पर विस्तृत जानकारी प्रदान करेगा। यह वेबसाइट कृषि ऋण के लिए बैंकों के साथ सहज एकीकरण को प्रोत्साहन देगा। भारत में फिलहाल 7.35 करोड़ KCC अकाउंट है। इनको 8.85 लाख करोड़ बांटा जा चुका है। एक बयान में यह बताया गया है, कि 30 मार्च तक तकरीबन 7.35 करोड़ किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) खाते हैं, जिनकी समकुल स्वीकृत धन सीमा 8.85 लाख करोड़ रुपये है।

**अप्रैल से लेकर अगस्त तक 6,573.50 करोड़ रुपये का कृषि-ऋण वितरित किया गया।**

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, सरकार ने चालू वित्त वर्ष में अप्रैल-अगस्त के दौरान रियायती ब्याज दर पर 6,573.50 करोड़ रुपये का कृषि-ऋण वितरित किया है। केसीसी के फायदे को बढ़ाने के लिए घर-घर अभियान, केंद्रीय योजना 'पीएम-किसान' के गैर-केसीसी धारकों तक पहुंचेगा, जिसके अंतर्गत प्रत्येक चिन्हित लाभार्थी किसान के बैंक खाते में प्रतिवर्ष 6,000 रुपये दिए जाते हैं।

# देशवासियों को त्योहारी सीजन में नहीं लगेगा महंगाई का झटका – खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा का कहना है कि महंगाई पर रोकथाम करने के लिए केंद्र सरकार भरपूर प्रयास कर रही है। खाद्य पदार्थों की जमाखोरी करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। केंद्र और राज्य सरकार की टीमें जगह-जगह पर छापेमारी कर रही हैं।

दरअसल, त्योहारी सीजन की शुरुआत होने से पूर्व महंगाई की रोकथाम करने के लिए केंद्र सरकार ने सारी तैयारी कर ली है। अब ऐसे में आम जनता को महंगाई को लेकर चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। गणेश चतुर्थी, दुर्गा पूजा एवं दिवाली पर समुचित कीमत पर खाद्य पदार्थ मिलेंगे। केंद्र सरकार ने बताया है, कि उसके पास चीनी का पर्याप्त भंडार है। अब जनता को त्योहारी सीजन में चीनी की कमी नहीं होगी। बाजार में चीनी की आपूर्ति मांग के हिसाब से होती रहेगी, जिससे कि कीमतें नियंत्रित रहें। उन्होंने कहा कि सरकारी भंडार में अभी चीनी का 85 लाख टन स्टॉक मौजूद है। ऐसे में आम जनता को महंगाई को लेकर चिंता करने की जरूरत नहीं है।

**गन्ने की पैदावार पर कोई प्रभाव नहीं होगा**

संजीव चोपड़ा का कहना है, कि गेहूं के भाव आर्टिफिशियल तरीके से अधिक हो रहे हैं। परंतु, शीघ्र ही इसके ऊपर भी नियंत्रण पा लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि ऐसी अफवाह है कि इस वर्ष औसत से कम बरसात दर्ज होने से गन्ने की पैदावार में गिरावट आ सकती है। परंतु, यह बिल्कुल सच नहीं है। उनके कहने के अनुसार तो गन्ने के उत्पादन में किसी तरह की गिरावट नहीं आएगी।

**चावल की कीमतों में हुई 10% प्रतिशत बढ़ोत्तरी**

उन्होंने कहा कि अफवाह की वजह से ही चावल के भाव 10% प्रतिशत तक बढ़े हैं। परंतु,, फसल सीजन 2023-24 में धान की बेहतरीन पैदावार होगी। अब ऐसी स्थिति में बाजार के अंदर नवीन चावल आने से कीमतों में गिरावट आएगी। उन्होंने कहा है, कि गेहूं पर भंडारण सीमा कम की गई है। किसानों को चावल के भाव में बढ़ोत्तरी होने पर बेहद खुशी का अनुभव भी हुआ। क्योंकि, धान एक खरीफ की फसल है। इस खरीफ फसल की कटाई के लिए उपयुक्त समय आ गया है। खरीफ की फसल चावल की कटाई का समय चल रहा है। अब ऐसे में यदि चावल की कीमत बढ़ेगी तो निश्चित रूप से किसानों को काफी लाभ मिलेगा।

**भारत में धान का कितना उत्पादन होता है**

भारत धान उत्पादन के मामले में दूसरे नंबर पर आने वाला देश है। भारत द्वारा विदेशों तक चावल का निर्यात किया जाता है। विश्वभर में भारत चावल की खाद्य आपूर्ति सुनिश्चित करता है। भारत के ऊपर बहुत सारे देश निर्भर होते हैं। यदि भारत में चावल की पैदावार कम होती है तो उससे पूरे विश्वभर की खाद्य सुरक्षा प्रभावित होती है। भारत को चावल की विभिन्न किस्मों के उत्पादन के लिए काफी जाना जाता है। भारत से नेपाल चावल के लिए काफी हद तक आश्रित रहता है।

# कृषि विद्यालय से परवल की जानकारी लेकर शुरू किया उत्पादन, 80 हजार प्रतिमाह हो रही आय

आज हम आपको परवल उत्पादक किसान मायानंद विश्वास के बारे में बताऐंगे। मायानंद विश्वास का कहना है, कि एक एकड़ जमीन पर खेती करने पर लगभग एक लाख रुपये की लागत आती है। परंतु, एक महीने में 20 क्विंटल तक वह परवल की पैदावार करते हैं। साथ ही, बाजार में 2000-4000 रुपये प्रति क्विंटल परवल बिक जाता है। इस प्रकार वह एक माह में परवल की बिक्री से करीब 80 हजार रुपये की आमदनी कर रहे हैं।

परवल की सब्जी का सेवन करना ज्यादातर लोग पसंद करते हैं। यह बाजार में सालों भर सुगमता से मिल जाता है। परंतु, गर्मी के मौसम में इसकी सबसे ज्यादा खेती की जाती है। परवल एक ऐसी फसल है, जिसकी खेती में खर्चे की तुलना में बहुत गुना ज्यादा मुनाफा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि एक बार खेती करने पर आप इससे 9 माह तक पैदावार हांसिल कर सकते हैं। यही कारण है कि बिहार में किसान बड़े पैमाने पर परवल की खेती कर रहे हैं। इसकी खेती से बहुत सारे किसानों की आमदनी बढ़ गई है।

**मायानंद विश्वास परवल की खेती से कुछ ही समय में मालामाल हो गए**

मायानंद विश्वास एक ऐसे किसान हैं, जो परवल की खेती से कुछ ही दिनों में मालामाल हो गए हैं। वे पूर्णिया जनपद स्थित कस्बा प्रखंड के बनेली सिंधिया के रहने वाले हैं। वह अपने गांव में 8 तरह के परवल की खेती कर रहे हैं। वह साल 2013 से परवल की खेती कर कर रहे हैं। उनका कहना है, कि परवल की एक बार खेती करने पर आप इससे 9 महीने तक सब्जी तोड़ सकते हैं। बतादें, कि इसकी खेती में लाखों रुपये का मुनाफा है।

**मायानंद ने कृषि विघालय से जानकारी लेकर परवल की खेती शुरू कर दी**

किसान मायानंद विश्वास की मानें तो इंसान की भांति सब्जियों में भी मेल-फीमेल जाति होती है। यही कारण है, कि वे विगत 10 साल से मेल-फीमेल दोनों कंपोजिशन मिलाकर परवल की खेती कर रहे हैं। विशेष बात यह है, कि उन्होंने परवल की खेती शुरूआत करने से पहले भागलपुर के सबौर कृषि विद्यालय से इसके विषय में संपूर्ण जानकारी ली थी। इसके उपरांत गांव आकर परवल की खेती चालू कर दी।

**किसान मायानंद विश्वास लाखों रुपये की कमाई करते हैं**

वर्तमान में उन्होंने लगभग एक एकड़ में परवल की खेती कर रखी है। इसमें परवल की 8 किस्म है। किसान मायानंद विश्वास की मानें तो वह 9 माह में परवल की खेती से 8 लाख रुपये का मुनाफा अर्जित कर लेते हैं। उनका कहना है, कि बहुत सारे किसान परवल की खेती नहीं करना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें संपूर्ण जानकारी नहीं होती है। बहुत सारे किसानों को इसकी खेती से घाटा भी उठाना पड़ जाता है। इसलिए किसानों को अपने खेत में मेल और फीमेल परवल के दोनों पौधे रोपने होंगे। उनका कहना है, कि परवल के खेत में रिक्त पड़े स्थानों पर वे दूसरी फसल भी लगाते हैं। उनका यह कहना है, कि वह सालभर में खर्चा काटकर 8 लाख रुपये का मुनाफा अर्जित कर लेते हैं। वर्तमान में किसान मायानंद विश्वास के खेत में राजेंद्र 2, स्वर्ण अलौकित, राजेंद्र 1, स्वर्ण रेखा, डंडारी, बंगाल ज्योति एवं दूदयारी प्रजाति का परवल लगा हुआ है।

# कृषि वैज्ञानिकों ने मटर की 5 उन्नत किस्मों को विकसित किया है

कृषक भाइयों रबी सीजन आने वाला है। इस बार रबी सीजन में आप मटर की उन्नत किस्म से काफी अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। बेहतरीन किस्मों के लिए भारत के कृषि वैज्ञानिक नवीन-नवीन किस्मों को तैयार करते रहते हैं। इसी कड़ी में वाराणसी के काशी नंदिनी भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान द्वारा मटर की कुछ बेहतरीन किस्मों को विकसित किया है। भारत में ऐसी बहुत तरह की फसलें हैं, जो किसानों को कम खर्चे व कम वक्त में अच्छा उत्पादन देती हैं। इन समस्त फसलों को किसान भाई अपने खेत में अपनाकर महज कुछ ही माह में मोटा मुनाफा कमा सकते हैं।

**सब्जियों की खेती से भी किसान अच्छा-खासा मुनाफा कमा सकते हैं**

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि ऐसी फसलों में सब्जियों की फसल भी शम्मिलित होती है, जो किसान को हजारों-लाखों का फायदा प्राप्त करवा सकती है। यदि देखा जाए तो किसान अपने खेत में खरीफ एवं रबी सीजन के मध्य में अकेले मटर की बुवाई से ही 50 से 60 दिनों में काफी मोटी पैदावार अर्जित कर सकते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं, कि देश-विदेश के बाजार में मटर की हमेशा मांग बनी ही रहती है। बतादें, कि मटर की इतनी ज्यादा मांग को देखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान के कृषि वैज्ञानिकों ने मटर की बहुत सारी शानदार किस्मों को इजात किया है। जो कि किसान को काफी शानदार उत्पादन के साथ-साथ बाजार में भी बेहतरीन मुनाफा दिलाएगी।

**काशी अगेती**

इस किस्म की मटर का औसत वजन 9-10 ग्राम होता है। बतादें, कि इसके बीज सेवन में बेहद ही ज्यादा मीठे होते हैं। इसकी फलियों की कटाई बुवाई के 55-60 दिन उपरांत किसान कर सकते है। फिर किसानों को इससे औसत पैदावार 45-40 प्रति एकड़ तक आसानी से मिलता है।

**काशी मुक्ति**

मटर की यह शानदार व उन्नत किस्म चूर्ण आसिता रोग रोधी है। यह मटर बेहद ही ज्यादा मीठी होती है। यह किस्म अन्य समस्त किस्मों की तुलना में देर से पककर किसानों को काफी अच्छा-खासा उत्पादन देती है। यदि देखा जाए तो काशी मुक्ति किस्म की प्रत्येक फलियों में 8-9 दाने होते हैं। इससे कृषक भाइयों को 50 कुंतल तक बेहतरीन पैदावार मिलती है।

**अर्केल मटर**

यह एक विदेशी प्रजाति है, जिसकी प्रत्येक फलियों से किसानों को 40-50 कुंतल प्रति एकड़ पैदावार प्राप्त होती है। इसकी प्रत्येक फली में बीजों की तादात 6-8 तक पाई जाती है।

**काशी नन्दनी**

मटर की इस किस्म को वाराणसी के काशी नंदिनी भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान ने इजात किया है। इस मटर के पौधे आपको 45-50 सेमी तक लंबे नजर आऐंगे। साथ ही, इसमें पहले फलियों की उपज बुवाई के करीब 60-65 दिनों के उपरांत आपको फल मिलने लगेगा। बतादें, कि इसकी किस्म की हरी फलियों की औसत पैदावार 30-32 क्विंटल प्रति एकड़ तक अर्जित होती है। साथ ही, बीज उत्पादन से 5-6 क्विंटल प्रति एकड़ तक अर्जित होती है। ऐसे में यदि देखा जाए तो मटर की यह किस्म जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, पंजाब, उत्तर प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के कृषकों के लिए बेहद शानदार है।

**काशी उदय**

इस किस्म के पौधे संपूर्ण तरीके से हरे रंग के होते हैं। साथ ही, इसमें छोटी-छोटी गांठें और प्रति पौधे में 8-10 फलियां मौजूद होती हैं, जिसकी प्रत्येक फली में बीजों की तादात 8 से 9 होती है। इस किस्म से प्रति एकड़ कृषक 35-40 क्विंटल हरी फलियां अर्जित कर सकते हैं। किसान इस किस्म से एक नहीं बल्कि दो से तीन बार तक सुगमता से तुड़ाई कर सकते हैं।

# पीएम किसान सम्मान निधि योजना की लिस्ट से 81000 अपात्र किसानों का नाम कटा

भारत के किसानों की आर्थिक हालत में सुधार करने के लिए भारत सरकार ने पीएम किसान योजना शुरू की। साथ ही, वर्तमान में इसका फायदा भारत के तकरीबन समस्त किसान उठा रहे हैं। भारत सरकार की पीएम किसान योजना के संबंध में तो आप सब लोग अच्छी तरह जानते हैं, कि यह किसानों के लिए कैसे फायदेमंद है। भारत के बहुत सारे किसान इस योजना से जुड़कर आर्थिक लाभ हांसिल कर रहे हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार से प्रति वर्ष 6000 रुपए तीन किस्तों में किसानों के खाते में भेजी जाती हैं।

**किसान 15 वीं किस्त के आने का इंतजार कर रहे हैं**

अगर देखा जाए तो भारत के किसानों को अब तक इस योजना की 14वीं किस्त प्राप्त हो चुकी है। वहीं, फिलहाल किसानों को 15वीं किस्त की प्रतीक्षा है। यह अंदेशा लगाया जा रहा है, कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की कुछ ही महीनों में 15वीं किस्त भी किसानों के खातों में हस्तांतरित करदी जाएगी। परंतु, भारत सरकार की इस योजना से कुछ किसानों को बाहर रखा गया है। शायद इन्हीं सब वजहों से सरकार की बहुत सी योजनाओं से वर्तमान में धीरे-धीरे देश के किसानों की तादात कम होती जा रही है।

**81000 किसानों को इस योजना के लिए अपात्र माना गया है**

दरअसल, बिहार राज्य से एक बड़ा समाचार सामने आ रहा है, कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से प्रदेश के तकरीबन 81,000 किसानों को इस योजना के लिए अपात्र माना गया है, जिसकी वजह से इन्हें इस योजना से बाहर कर दिया गया है। चलिए जानते हैं, कि राज्य के किन किसानों को पीएम किसान योजना से बाहर रखा गया है।

**जानिए किन किसानों को लाभ नहीं मिल पाऐगा।**

- सरकारी पदों पर नियुक्त किसान का परिवार।
- संस्थागत भूमि धारक।
- राज्य या केंद्र सरकार के सेवारत या सेवानिवृत्त अधिकारी व कर्मचारी।
- 10 हजार रुपए से ज्यादा प्रति माह कमाने वाले किसान भाई।
- पेंशनभोगी, इंजीनियर, डॉक्टर और वकील परिवार आदि।
- सिर्फ इन किसानों को मिलेगा योजना का लाभ।
- छोटे व आर्थिक रूप से कमजोर किसान।
- भूमिधारी किसान परिवार आदि।

**पीएम किसान योजना में इस तरह आवेदन करें**

- किसानों को इस योजना के अंतर्गत घर बैठे आवेदन करने के लिए पीएम किसान की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना पड़ेगा। जहां से वह सहजता से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।
- किसान सूची में इस प्रकार अपना नाम चेक करें।
- पीएम किसान की लिस्ट में अपना नाम देखने के लिए किसान को सबसे पहले योजना की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा।
- इसके बाद स्क्रीन के दाएं तरफ 'Beneficiary List' टैब पर जाएं।
- इसके बाद आप ड्रॉप-डाउन से विवरण चुनें जैसे कि राज्य, जिला, उप-जिला, ब्लॉक और गांव का चयन जरूर करें।
- इसके बाद आपको गेट रिपोर्ट पर टैब करना है।
- इसके बाद आपके सामने Beneficiary List डिटेल स्क्रीन पर दिखाई देगी।
- किसान सहायता के लिए पीएम किसान हेल्पलाइन नंबर
-

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि हमारे कृषक भाई इस योजना से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या पर ईमेल आईडी pmkisan-ict@gov.in एवं हेल्पलाइन नंबर- 155261 अथवा 1800115526 पर संपर्क कर सकते हैं।

# उत्तर प्रदेश के आलू का जलवा अब अमेरिका में भी, अलीगढ़ में एग्रीकल्चर एक्सपोर्ट केंद्र खोलने की तैयारी

आलू की खेती से किसान रबी सीजन में करते हैं, किसानों को इससे काफी मुनाफा अर्जित होता है। जैसा कि हम सब जानते हैं, कि खरीफ की फसलों की कटाई का समय आ चुका है। यूपी की उपजाऊ मृदा से हो रही पैदावार निरंतर विदेशों में लोकप्रियता अर्जित कर रही है। यहां पर उगने वाले आलू की मांग सात समुंदर पार भी हो रही है। प्रथम बार यूपी के आलू को अमेरिका के गुनाया में निर्यात किया गया है। किसानों को अपनी समझ और सूझबूझकर से खेती करने के लिए विशेषज्ञों की सलाह की भी जरूरत होती है।

उत्तर प्रदेश के आलू का दबदबा विदेशों तक भी है। दरअसल, यूपी के आलू को पहली बार हजारों किलोमीटर दूर स्थित अमेरिका भेजा गया है। यूपी के आलू का जलवा विदेशों में भी है। मीडिया खबरों के अनुसार, फार्मर ग्रुप (FPO) की सहायता से 29 मीट्रिक टन आलू अमेरिका के गुयाना में भेजा गया। बतादें, कि इसके साथ ही योगी सरकार का किसानों की आमदनी दोगुनी करने का सपना भी साकार हो रहा है।

**आलू का निर्यात अब सात समुंदर पार भी होगा**

वाराणसी के एग्रीकल्चर एंड प्रोसेस्ड फूड प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट डेवलपमेंट अथॉरिटी (APEDA) के उप महाप्रबंधक का कहना है, कि आलू को पहली बार व्यापारिक रूप से अमेरिका के गुयाना शहर निर्यात किया गया है। उन्होंने बताया है, कि निर्यात किए गए आलू को अलीगढ़ के एफपीओ से खरीद कर शीत गृह में पैक किया गया। 29 मीट्रिक टन आलू समुद्र मार्ग के जरिए गुयाना पहुंचेगा।

**अलीगढ़ में एग्रीकल्चर एक्सपोर्ट सेंटर खोलने की मुहिम**

बतादें, कि इसी कड़ी में अलीगढ़ के किसान उद्यमी के साथ-साथ निर्यातक भी बन रहे हैं। अलीगढ़ में आलू के उत्पादन को मंदेनजर रखते हुए एग्रीकल्चर एंड प्रोसेस्ड फूड प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट डेवलपमेंट अथॉरिटी अलीगढ़ में कृषि निर्यात केंद्र खोलने की तैयारी कर रहा है। बतादें, कि यदि अलीगढ़ जनपद में एग्रीकल्चर एक्सपोर्ट सेंटर खुलता है, तो जनपद के आसपास के हजारों लोगों को रोजगार का अवसर भी मिलेगा।

**योगी सरकार किसानों की आय दोगुनी करने का प्रयास कर रही है**

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार बिचौलियों को अलग करके किसानों की आमदनी दोगुनी करने की कोशिश कर रही है। इसी कड़ी में एफपीओ के जरिए से किसानों को निर्यातक बनाया जा रहा है। प्रदेश में योगी सरकार एफपीओ एवं किसान समूहों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की तरफ प्रोत्साहन देने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। किसानों को विदेशों में निर्यात कर बेहतरीन आमदनी देने वाली फसलों की पैदावार करनी चाहिए। किसान केवल पारंपरिक फसलों पर ही आश्रित ना रहें।

# किसान मोबाइल से भी नाप सकते हैं अपनी जमीन

## अब किसानों को जमीन नापने के लिए खर्च नहीं करना पड़ेगा, बस एक क्लिक करें

यदि आप प्लॉट की डायरेक्शन की जानकारी लेना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको अपने मोबाइल में कंपास ऐप डाउनलोड करना पड़ेगा। ऐप डाउनलोड करने के पश्चात आप ऐप को खोलें और अपने प्लॉट के नक्शे पर मोबाइल को रख दें। इस तकनीकी दौर में भी जमीन अथवा घर का प्लॉट नापने के लिए आज भी कृषक भाई या बाकी लोग फीता या रस्सी का उपयोग करते हैं। बहुत से लोग तो जमीन नापने के लिए आज भी पैसे खर्च कर बुलाते हैं। मुख्य बात यह है, कि फीता, रस्सी आदि की सहायता से जमीन नापने के लिए विभिन्न लोगों की आवश्यक पड़ती है। इससे लागत काफी बढ़ जाती है। परंतु, आज ऐसी व्यवस्था उपलब्ध है, कि आप मोबाइल के माध्यम से अकेले ही अपने प्लॉट का सही-सही नाप कर सकते हैं।

साथ ही, जमीन की डायरेक्शन की भी जाँच कर सकते हैं। आपको इसके लिए मात्र अपने मोबाइल में एक ऐप डाउनलोड करना पड़ेगा। इसके पश्चात आप इस ऐप की सहायता से अपनी जमीन अथवा घर के प्लॉट को मोबाइल द्वारा सुगमता से नाप सकते हैं। मुख्य बात यह है, कि घर निर्माण करने के समय प्लॉट की डायरेक्शन की जानकारी सही- सही होनी चाहिए। क्योंकि, वास्तु के हिसाब से ही सही दिशा में शौचालय, बेडरूम, मंदिर एवं किचन का निर्माण किया जाता है। इसके बाद में किसी तरह की परेशानी न हो।

मोबाइल द्वारा जमीन या प्लॉट की डायरेक्शन नापने की सही विधि

आज के जमाने में सभी लोगों के पास स्मार्ट फोन उपलब्ध है। अगर आपको मोबाइल की सहायता से भूमि नापनी है, तो आप अपने स्मार्ट फोन में GPS FIELDS AREA MEASURE अथवा GPS AREA CALCULATOR ऐप डाउनलोड करें। यह भूमि नापने का सबसे अच्छा ऐप है। अब इस ऐप को मोबाइल में खोलें। कुछ सेकंड के उपरांत एक नया पेज खुल जाएगा। उसके उपरांत आपको सर्च का एक ऑप्शन नजर आऐगा। उस सर्च के ऑप्शन पर आपको क्लिक करना पड़ेगा।

iOS

Download the
App Now

**काशी मुक्ति**

मटर की यह शानदार व उन्नत किस्म चूर्ण आसिता रोग रोधी है। यह मटर बेहद ही ज्यादा मीठी होती है। यह किस्म अन्य समस्त किस्मों की तुलना में देर से पककर किसानों को काफी अच्छा-खासा उत्पादन देती है। यदि देखा जाए तो काशी मुक्ति किस्म की प्रत्येक फलियों में 8-9 दाने होते हैं। इससे कृषक भाइयों को 50 कुंतल तक बेहतरीन पैदावार मिलती है।

**अर्केल मटर**

यह एक विदेशी प्रजाति है, जिसकी प्रत्येक फलियों से किसानों को 40-50 कुंतल प्रति एकड़ पैदावार प्राप्त होती है। इसकी प्रत्येक फली में बीजों की तादात 6-8 तक पाई जाती है।

**काशी नन्दनी**

मटर की इस किस्म को वाराणसी के काशी नंदिनी भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान ने इजात किया है। इस मटर के पौधे आपको 45-50 सेमी तक लंबे नजर आऐंगे। साथ ही, इसमें पहले फलियों की उपज बुवाई के करीब 60-65 दिनों के उपरांत आपको फल मिलने लगेगा। बतादें, कि इसकी किस्म की हरी फलियों की औसत पैदावार 30-32 क्विंटल प्रति एकड़ तक अर्जित होती है। साथ ही, बीज उत्पादन से 5-6 क्विंटल प्रति एकड़ तक अर्जित होती है। ऐसे में यदि देखा जाए तो मटर की यह किस्म जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, पंजाब, उत्तर प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के कृषकों के लिए बेहद शानदार है।

**काशी उदय**

इस किस्म के पौधे संपूर्ण तरीके से हरे रंग के होते हैं। साथ ही, इसमें छोटी-छोटी गांठें और प्रति पौधे में 8-10 फलियां मौजूद होती हैं, जिसकी प्रत्येक फली में बीजों की तादात 8 से 9 होती है। इस किस्म से प्रति एकड़ कृषक 35-40 क्विंटल हरी फलियां अर्जित कर सकते हैं। किसान इस किस्म से एक नहीं बल्कि दो से तीन बार तक सुगमता से तुड़ाई कर सकते हैं।

# किसान समाचार

## स्वीट कॉर्न की खेती से किसानों को काफी लाभ होगा, सिर्फ इन बातों का रखें खास ध्यान

कृषक भाई स्वीट कॉर्न की खेती कर के शानदार मुनाफा अर्जित कर सकते हैं। भारत ही नहीं विदेशों में भी इसे काफी पसंद किया जाता है। चाहें कैसा भी मौसम हो स्वीट कॉर्न का स्वाद सब की जुबां पर रहता है। विशेष तौर पर पहाड़ों की सेर के समय और बारिश के दौरान स्वीट कॉर्न को बड़े ही चाव से खाया जाता है। बतादें, कि स्वीट कॉर्न मक्के की मीठी किस्म है। इसकी फसल के पकने से पूर्व ही दूधिया अवस्था में इसकी कटाई की जाती है। स्वीट कॉर्न भारत के साथ-साथ विदेश में भी बेहद पसंद किया जाता है। ऐसी स्थिति में किसान भाई इसकी खेती कर बेहतरीन मुनाफा अर्जित कर सकते हैं।

**स्वीट कॉर्न की खेती किस तरह होती है**

स्वीट कॉर्न की खेती मक्का की खेती की भांति ही होती है। स्वीट कॉर्न की खेती में मक्का की फसल पकने से पूर्व ही तोड़ दी जाती है। इस वजह से किसानों को बेहद शीघ्रता से अच्छी कमाई मिलती है। स्वीट कॉर्न के साथ-साथ फूलों की खेती करके किसान एक ही वक्त में दो गुना ज्यादा धन कमाने के लिए गेंदा, ग्लेडियोलस एवं मसालों की सहफसली खेती भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप एक खेत में पालक, मटर, गोभी और धनिया भी उगा सकते हैं।

**स्वीट कॉर्न को अधिक समय तक स्टोर करके ना रखें**

स्वीट कॉर्न की फसल कटाई एक बेहद ही आसान प्रक्रिया है। बतादें, कि फसल कटाई के लिए तैयार तब होती गई जब भुट्टों से दूधिया पदार्थ निकलने लगता है। सुबह अथवा शाम में स्वीट कॉर्न की कटाई करें, इससे फसल अधिक समय तक तरोताजा रहेगी। तुड़ाई पूर्ण होने पर इसको मंडियों में बेच दें। स्वीट कॉर्न को ज्यादा दिनों तक स्टोर करके न रखें, क्योंकि इससे इसकी मिठास कम हो जाएगी।

**किसान इन बातों का विशेष ख्याल रखें**

- जब आप इसकी खेती करते हैं, तो आप मक्का की उन्नत किस्मों को ही चुनें।
- कीट-रोधी किस्मों को कम समयावधि में पकना चाहिए।
- खेत की तैयारी के दौरान जल निकासी की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करें, ताकि फसल में जल भराव न हो।
- स्वीट कॉर्न वैसे तो संपूर्ण भारत में उगाई जाती है, परंतु उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा पैदावार होती है।
- स्वीट कॉर्न की बुवाई रबी एवं खरीफ दोनों ही सीजनों में की जा सकती है।

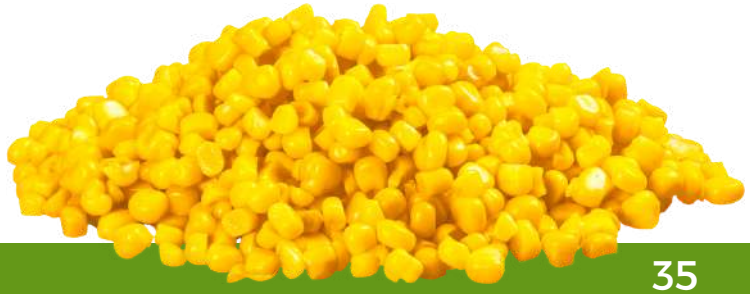

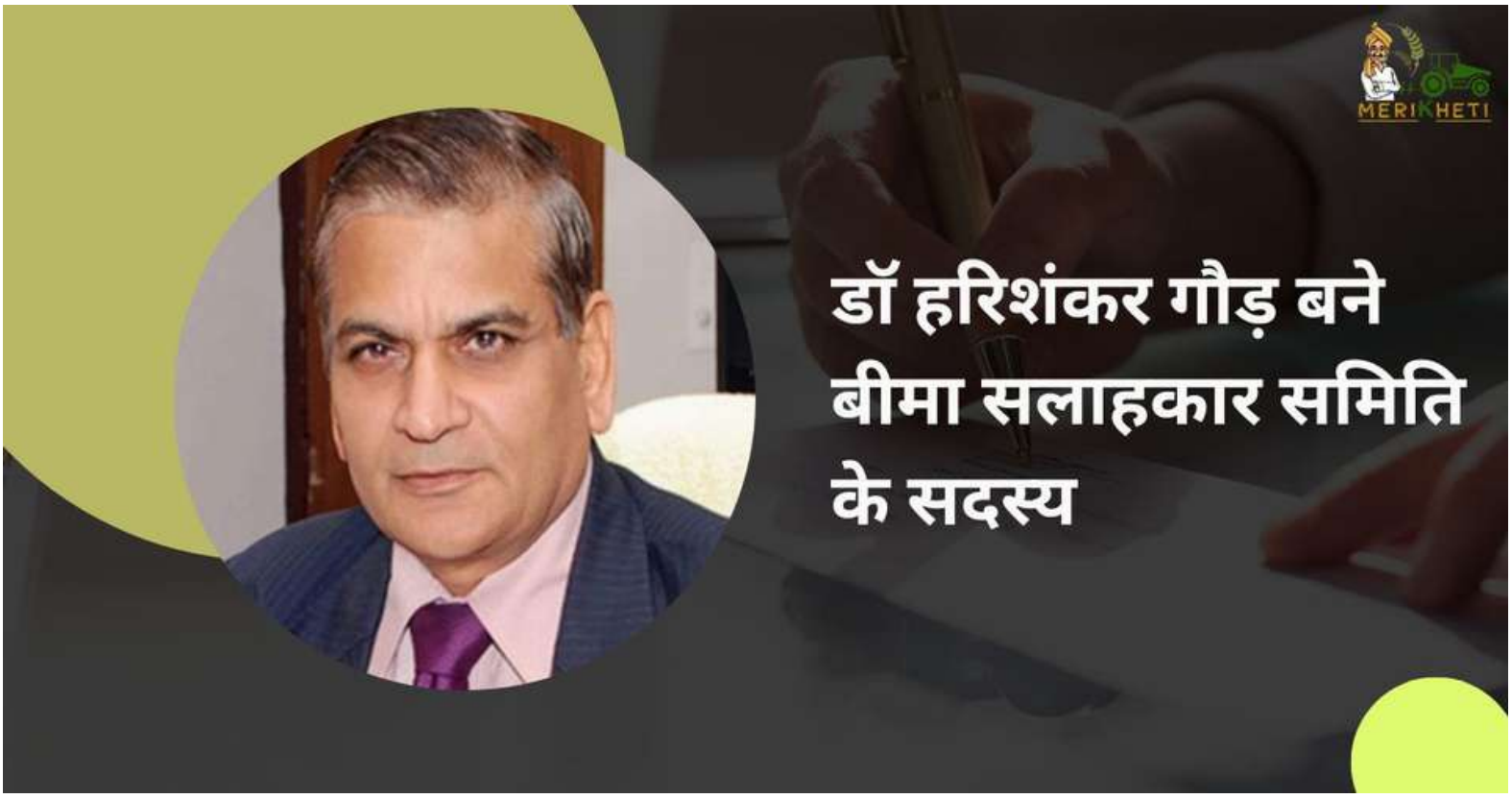


# डॉ हरिशंकर गौड़ बने बीमा सलाहकार समिति के सदस्य

डॉ हरिशंकर गौड़ एक बेहतरीन कृषि वैज्ञानिक हैं। डॉ हरिशंकर ने अपना पूरा जीवन कृषि के लिए समर्पित कर दिया। इन्हें हमेशा से ही कृषि के प्रति बेहद लगाव लगा रहा है। इन्होंने लाखों विद्यार्थियों को कृषि की बारीकियां सिखाईं हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें कि डॉ हरिशंकर जी को बीमा सलाहकार समिति का सदस्य बनाया गया है।

डॉ हरिशंकर गौड़ पूर्व में डीन एंड जॉइन्ट डायरेक्टर IARI नई दिल्ली, वाईस चांसलर सरदार बल्लभ भाई पटेल यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी और यह शारदा यूनिवर्सिटी में डीन एंड प्रोफेसर भी रहे हैं। वर्तमान में डॉ हरिशंकर गलगोटिया यूनिवर्सिटी में कार्यरत हैं। बतादें कि कृषि क्षेत्र पर इनकी काफी अच्छी पकड़ है। साथ ही, ये हेड ऑफ डिवीजन ऑफ नेमाटोलॉजी ICAR- IARI और प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर (NEMATOLOGY) भी रह चुके हैं।

डॉ हरिशंकर गौड़ ने दिल्ली युनिवर्सिटी से बेचलर ऑफ लॉज (LL.B.) CIVIL, CRIMINAL एंड ADMINISTRATIVE LAW जैसी डिग्रियां हांसिल की हैं। इसके अलावा उन्होंने ROTHAMSTED RESEARCH, UK से NEMATOLOGY की है। डॉ हरिशंकर गौड़ ने अपने जीवन काल में कृषि क्षेत्र को विशेष समय व तवज्जो और बेहद सकारात्मक योगदान दिया है।

बतादें कि बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) के अनुच्छेद 25 के उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए प्राधिकरण निम्नलिखित अधिसूचना द्वारा बीमा सलाहकार समिति का पुनर्गठन करता है। इस राजपत्र में समकुल 18 सदस्यों के नाम हैं। डॉ हरिशंकर भी इस सूची में शामिल हैं।

# भारत-कनाडा के बीच तकरार का असर मसूर की कीमतों पर पड़ेगा अथवा नहीं

भारत सरकार द्वारा दलहन की बढ़ती कीमतों पर रोक लगाने के लिए ऑस्ट्रेलिया से मसूर दाल का आयात बढ़ा दिया है। वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया से तकरीबन दो लाख टन मसूर दाल का आयात होगा। इसी कड़ी में भारत ने रूस से भी मसूर दाल का आयात भी चालू कर दिया है।

कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के बयान से भारत एवं कनाडा के बीच परेशानियां बढ़ती ही जा रही हैं। अब ऐसी स्थिति में अंदाजा लगाया जा रहा है, कि यदि दोनों देशों के मध्य तनाव और बढ़ता है, तो भारत में महंगाई काफी बढ़ जाएगी। विशेष कर मसूर दाल की काफी किल्लत हो जाएगी। क्योंकि कनाडा भारत के लिए मसूर दाल का प्रमुख आयातक देश है। परंतु, केंद्र सरकार के अधिकारियों ने समस्त प्रकार की अटकलों और अफवाहों को पूर्णतय खारिज कर दिया है।

**भारत सरकार मसूर पर शून्य आयात शुल्क जारी रख सकती है**

एक अधिकारी ने बताया है, कि कनाडा से तकरीबन 6 लाख टन मसूर दाल अब तक देश के बंदरगाहों पर पहुंच चुकी है। ऐसी स्थिति में भारत के अंदर दलहन को लेकर किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न होने वाली नहीं है। बाजार में मसूर दाल की आपूर्ति पहले की भांति ही होती रहेगी। सूत्रों ने यह भी कहा कि केंद्र सरकार विदेशी निर्यातकों को साफ संकेत देने के लिए मार्च 2024 के उपरांत भी मसूर पर शून्य आयात शुल्क जारी रख सकती है।

**मसूर दाल के आयात को स्वीकृति दे दी है**

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, फसल सीजन 2022-23 में भारत ने कनाडा से 3,012 करोड़ रुपये की 4.85 लाख टन मसूर दाल का आयात किया था। वहीं, इस साल अप्रैल से जून के मध्य करीब तीन माह में एक लाख टन मसूर दाल कनाडा से भारत पहुंची है। वहीं, सितंबर 2021 में केंद्र ने रूस से मसूर के आयात को मंजूरी दी थी। हालांकि, सरकार ज्यादा कीमत होने की वजह से रूस से मसूर दाल का आयात शुरू नहीं किया। ऐसे में कहा जा रहा है, कि मसूर दाल की खपत की आपूर्ति करने के लिए भारत उन देशों की सूची तैयार कर रहा है, जहां से सस्ती दरों पर मसूर का आयात किया जा सकता है। हालांकि, फिलहाल भारत में किसानों की दलहन की खेती के प्रति दिलचस्पी थोड़ी बढ़ी है। इससे घरेलू दालों की पैदावार भी बढ़ी है।

SHAKTIMAN®

MAKING AGRICULTURE MORE ECONOMICAL®

## प्रमुख विशेषताएं

- सबसे बड़ा रोटावेटर निर्माता
- मल्टी स्पीड गियर बॉक्स
- बड़े बियरिंग्स
- बेहतर जुताई के लिए बड़े ब्लेड

# बेजोड़ शक्ति
# बेजोड़ प्रदर्शन

+91 (2827) 234567
info@shaktimanagro.com
www.shaktimanagro.com

# लाल भिंडी की खेती कर मोटा मुनाफा कमा सकते हैं

## किसान भाई लाल भिंडी के औषधीय गुणों की वजह से इसकी खेती कर मोटा मुनाफा कमा सकते हैं

कृषक भाई लाल भिंडी की खेती कर बेहतरीन आमदनी कर सकते हैं। इसका फायदा औषधियों में भी किया जाता है। भिंडी की सब्जी का स्वाद अधिकतर लोगों को काफी भाता है। परंतु, वर्तमान में किसान भाई हरी भिंडी के स्थान पर लाल भिंडी की खेती कर बेहतरीन मुनाफा अर्जित कर सकते हैं। एक एकड़ भूमि में लाल भिंडी 40 से लेकर 45 दिन में पकने लग जाती है, जो 40 से लेकर 45 क्विंटल तक पैदावार देती है। इस भिंडी का स्वाद भी सामान्य भिंडी से बेहद अच्छा होता है। आगे इस लेख में हम बात करेंगे लाल भिंडी के कुछ मुख्य गुणों के बारे में। साथ ही, किसान भाई इससे हरी भिंडी की तुलना में कितना मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं।

हरी भिंडी के मुकाबले में लाल भिंडी काफी ज्यादा फायदेमंद होती है। साथ ही, इसकी फसल आम भिंडी की अपेक्षा में शीघ्रता से खड़ी हो जाती है। लाल भिंडी की फसल से मोटी आमदनी करने के लिए इस प्रकार फसल की बिजाई करें। बतादें, कि लागत एवं कमाई लाल भिंडी के औषधीय गुणों की वजह से बड़े-बड़े शहरों में इसकी मांग बनी रहती है। लाल भिंडी के एक किलो बीज 2400 रुपये तक की कीमत में मिलते हैं, जो आधा एकड़ भूमि में बोया जा सकता है। लाल भिंडी की तुलना में हरी भिंडी की कीमत पांच से सात गुना ज्यादा होती है। 250 से 300 ग्राम लाल भिंडी का भाव 300-400 रुपये तक होता है। परंतु, हरी भिंडी 40 से 60 रुपये प्रति किलो बेची जाती है।

### लाल भिंडी में अद्भुत गुण क्या-क्या हैं

- 
- लाल भिंडी की एक खासियत यह है कि वह हरी भिंडी से ज्यादा जल्दी पककर तैयार होते हैं।
- लाल भिंडी भोजन का जायका और स्वाद बढ़ाता है तथा औषधियों में भी उपयोग होता है।
- लाल भिंडी की फसल में कीड़े एवं बीमारियां लगने की काफी कम संभावना होती है, इस वजह से कीटनाशकों का खर्चा भी कम होता है।
- एक एकड़ जमीन में 40 से 45 दिन में लाल भिंडी पकने लगती हैं, जो 40 से 45 क्विंटल उपज देती है।

### लाल भिंडी शुगर लेवल को नियंत्रण में रखती है

जानकारों का कहना है, कि स्वाद में यह हरी भिंडी के जैसी ही होती है। इसमें हरा, काला, लाल सभी तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। इस भिंडी में अलग से एक जीन डालने की वजह से इसका रंग लाल हो गया। बतादें, कि इसमें क्रूड फाइबर होता है, जिससे शुगर लेवल नियंत्रण में रहता है। इस सब्जी के अंदर बीकम्पलेक्स भी भरपूर मात्रा में होती है।

# इस तकनीक से किसान सिर्फ पानी द्वारा सब्जियां और फल उगा सकते हैं

किसान भाइयों आपको खेती करने के लिए भूमि की कोई आवश्यकता नहीं है। अब किसान भाई पानी पर ही फल और सब्जियां पैदा कर सकते हैं। जो कि पोषण तत्वों से भरपूर होंगी। विश्व भर में खेती को सुगम करने के लिए नवीन तकनीक विकसित की जा रही हैं। इन समस्त तकनीकों की सहायता से संसाधनों की बचत एवं मेहनत की खपत भी कम होती है। हाइड्रोपोनिक्स तकनीक भी इसी में शुमार है। जहां पारंपरिक खेती में कृषि यंत्रों, खेत, उर्वरक, खाद एवं सिंचाई की बड़ी मात्रा में जरूरत पड़ती है। वहीं, इको फ्रेंडली-हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से बेहतरीन फसल कम पानी में पैदा की जा सकती है। हाइड्रोपोनिक्स खेती में मिट्टी की आवश्यकता नहीं होती है। इस वजह से इसको संरक्षित ढांचे में करना चाहिए। इसमें पानी के अतिरिक्त खनिज पदार्थ एवं पोषक तत्व बीजों एवं पौधों को मिलते हैं। बतादें, कि इनमें कैल्शियम, पोटाश, जिंक, सल्फर, आयरन, फास्फोरस, नाइट्रोजन, मैग्नीशियम और अन्य बहुत सारे पोषक तत्व शामिल हैं, जिससे फसल की पैदावार 25–30 प्रतिशत बढ़ती है।

**हाइड्रोपॉनिक्स तकनीक से संसाधनों के साथ परिश्रम की खपत भी कम है**

दुनिया भर में खेती को सुगम बनाने के लिए नवीन तकनीक तैयार की जा रही हैं। इससे संसाधनों की बचत एवं परिश्रम की खपत कम होती है। हाइड्रोपोनिक्स तकनीक भी इसके अंतर्गत शम्मिलित हैं। जहां पारंपरिक खेती में कृषि यंत्रों, खेत, उर्वरक, खाद और सिंचाई की बड़ी मात्रा में जरूरत पड़ती है। उधर इको फ्रेंडली-हाइड्रोपोनिक्स तकनीक के माध्यम से बेहतरीन फसल कम पानी में पैदा की जा सकती है।

**हाइड्रोपॉनिक्स तकनीक से उगाए सब्जियां**

इस तकनीक में प्लास्टिक की पाइपों में बड़े छेद निर्मित किए जाते हैं। जहां पर छोटे-छोटे पौधे भी लगाए जाते हैं। पानी से 25-30 प्रतिशत ज्यादा विकास होता है। इन पौधों को बीज बोकर ट्रे में बड़ा किया जाता है। बतादें, कि ब्रिटेन, जर्मनी, अमेरिका और सिंगापुर में हाइड्रोपॉनिक का इस्तेमाल हो रहा है। यह तकनीक भारतीय किसानों एवं युवा लोगों में भी काफी हद तक लोकप्रिय हो रही है। हाइड्रोपोनिक खेती में बड़े-बड़े खेत की जरूरत नहीं पड़ती है। किसान भाई कम भूमि के हिस्से पर भी खेती कर सकते हैं।

**इस तकनीक से ये सब्जियां और फल उगाए जा सकते हैं**

हाइड्रोपोनिक्स तकनीक सब्जियों की खेती के अंतर्गत सफल हो चुकी है। भारत में बहुत सारे किसान इस तकनीक का इस्तेमाल करके छोटे पत्ते वाली सब्जियों की खेती कर रहे हैं, जैसे कि खीरा, मटर, मिर्च, करेला, स्ट्रॉबेरी, ब्लैकबेरी, ब्लूबेरी, तरबूज, खरबूज, अनानास, गाजर, शलजम, ककड़ी, मूली, अनानास, शिमला मिर्च, धनिया, टमाटर और पालक।

**हाइड्रोपॉनिक्स तकनीक के जरिए पोषण से भरपूर सब्जियां उगती हैं**

हाइड्रोपॉनिक्स तकनीक के माध्यम से उगने वाली सब्जियां पोषण से भरपूर होती हैं। इसलिए इनकी हमेशा मांग बनी रहती है। 100 वर्ग फुट के इलाके में इसे निर्मित करने की लागत 50,000 से 60,000 रुपये हो सकती है। साथ ही, 100 वर्ग फुट इलाके में 200 सब्जी पौधे लगाए जा सकते हैं। कमाई के संदर्भ में यह तकनीक ज्यादा रकबे में किसानों को मुनाफा दिला सकती है। हाइड्रोपॉनिक्स को ज्यादा धन कमाने के लिए कम क्षेत्रफल में अनाजी फसलों के साथ पौधे लगाए जा सकते हैं।

# कम खर्च में सालों लाभ पाने के लिए नींबू की खेती एक अच्छा विकल्प है

कृषक भाई नींबू की खेती कर बेहतरीन मुनाफा अर्जित कर सकते हैं। नींबू के पौधे को भरपूर मात्रा में पानी देना बेहद जरूरी है। नींबू का उपयोग हर घर में किया जाता है। दाल-सब्जी में डालने से ये उसका स्वाद और ज्यादा बढ़ा देता है। भारत के अंदर नींबू सबसे अधिक बिकने वाली सब्जियों में से भी एक है। इसकी खेती करना कृषक भाइयों के लिए काफी फायदे का सौदा सिद्ध हो सकती है। बाजार में नींबू का भाव 100 रुपये प्रति किलो तक चलता है। परंतु, कभी-कभी इसके भाव भी आसमान छूने लग जाते हैं। हालांकि, इसकी मांग बाजार में एक समान रहता है। नींबू की खेती कर किसान भाई बेहद ही ज्यादा मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि जिस नींबू का रंग नारंगी जैसा होता है, वह अन्य दूसरे नींबू के मुकाबले में ज्यादा खट्टा होता है। इस नींबू का इस्तेमाल सब्जी में डालने से लगाकर अचार निर्मित करने तक में किया जाता है। बतादें, कि इसकी मांग काफी अधिक होने के साथ-साथ किसानों को इसकी फसल बेचकर शानदार मुनाफा होता है।

### नींबू की फसल में भरपूर मात्रा में पानी बेहद जरूरी है

नींबू की खेती करने से पूर्व खेत को संपूर्ण ढ़ंग से तैयार करना आवश्यक है। पौधों की रोपाई के दौरान लगभग 1 फीट गहरा गड्ढा खोदें। इस गड्ढे में पानी डालकर छोड़ दें। जब पानी सूख जाए, तो पौधा लगाने हेतु मृदा डालें एवं पौधे के चारों तरफ से घेरा बनाकर एक गोल कियारी निर्मित करें। इसके उपरांत किसान भाई उसमें पानी डालें। इस दौरान ख्याल रखें कि बहुत बार पौधे अच्छे तरीके से नहीं लगते हैं। इस वजह से उन्हें पर्याप्त पानी देना बेहद आवश्यक होता है।

### किसान भाई नींबू से सालों लाभ उठा सकते हैं

नींबू की पौधरोपण के तीन से साढ़े तीन साल के उपरांत ही फल निकलने चालू हो जाते हैं। एक पौधे से एक वर्ष में बाजार के आधार पर तीन हजार किलो की पैदावार होती है। नींबू का बगीचा एक बार लगाने पर 30 वर्ष तक फल प्रदान करता है, जिसका अर्थ यह है कि किसान भाई 30 सालों तक इससे मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। नींबू की खेती कर किसान भाई कुछ ही वर्ष में लाखों रुपये तक की आमदनी हांसिल कर सकते हैं।

# इस रबी सीजन में किसान काले गेंहू की खेती से अच्छी-खासी आय कर सकते हैं

## इस रबी सीजन में किसान काले गेहूं की खेती से अच्छी-खासी आय कर सकते हैं

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि से कुछ दिन के उपरांत अक्टूबर का महीना शुरू हो जाएगा। अक्टूबर के महीने में रबी के फसल की बुवाई होना आरंभ हो जाती है। ऐसी स्थिति में अगर आप एक किसान हैं तो यह आपके लिए आवश्यक खबर है। क्योंकि आज हम आपको गेहूं की ऐसी फसल की बुवाई के विषय में बता रहे हैं, जिसमें आप कम लागत में चार गुना ज्यादा मुनाफा कमाएंगे।

भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है, क्योंकि यहां 70% किसान हैं। भारत के भिन्न भिन्न हिस्सों में भिन्न भिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। फसलों की बेहतरीन पैदावार और किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए समय-समय पर नये नये प्रयोग चलते रहते हैं, जिससे किसान भाई नवीन किस्म की खेती कर रहे हैं। खरीफ की फसल के कटाई की समयावधि आ गई है। अब किसान रबी की फसल की तैयारी में जुट गए हैं। ऐसी स्थिति में आज हम आपको रबी के फसल में काले गेंहू की बुवाई के विषय में बता रहे हैं, जिसमें किसान कम खर्चे में ज्यादा मुनाफा कमाएंगे।

**काले गेहूं की खेती की खासियत**

यदि आप कृषक हैं और यह चाहते हैं कि आप ऐसे फसल बोएं जिससे कम लागत में ज्यादा मुनाफा हो। ऐसे में आप रबी के मौसम में मतलब कि अक्टूबर-नवंबर में काले गेहूं की खेती करें। इस खेती की विशेषता यह है, कि इसमें लागत भी कम आती है और ये सामान्य गेहूं की अपेक्षा में चार गुना ज्यादा दाम पर बिकता है।

**काले गेहूं की बुवाई किस प्रकार की जाती है**

काले गेहूं की खेती करने के लिए अक्टूबर और नवंबर का महीना सबसे उपयुक्त होता है। काले गेहूं की खेती के लिए भरपूर मात्रा में नमी होनी चाहिए। इसकी बुवाई के दौरान खेत में प्रति एकड़ 60 किलो डीएपी, 30 किलो यूरिया, 20 किलो पोटाश एवं 10 किलो जिंक का उपयोग करें। फसल की सिंचाई के पहले पहली बार 60 किलो यूरिया प्रति एकड़ के हिसाब से डालें।

**काले गेंहू की सिंचाई**

काले गेहूं की सिंचाई बुवाई के 21 दिन उपरांत करें। इसके पश्चात समय-समय पर नमी के हिसाब से सिंचाई करते रहें। बालियां निकलने के समय सिंचाई जरूर करें।

**साधारण गेहूं और काले गेहूं में क्या फर्क है**

काले गेहूं में एन्थोसाइनीन पिगमेंट की मात्रा ज्यादा मौजूद होती है। इसकी वजह से यह काला दिखाई देता है। इसमें एंथोसाइनिन की मात्रा 40 से 140 पीपीएम होती है। लेकिन, सफेद गेहूं में मात्र 5 से 15 पीपीएम होती है।

**काले गेहूं के क्या-क्या लाभ हैं**

काले गेहूं में एंथ्रोसाइनीन मतलब नेचुरल एंटी ऑक्सीडेंट और एंटीबायोटिक भरपूर मात्रा में पाया जाता है, जो डायबिटीज, मानसिक तनाव, घुटनों में दर्द, एनीमिया, हार्ट अटैक और कैंसर जैसे रोगों को खत्म करने में कामयाब होता है। काले गेहूं में बहुत सारे औषधीय गुण विघमान है, जिसकी वजह से बाजार में इसकी काफी माँग है और उसके अनुरूप कीमत भी है।

# नांदेड स्थित कपास अनुसंधान केंद्र ने विकसित की कपास की तीन नवीन किस्में

किसान भाइयों की जानकारी के लिए बतादें, कि नांदेड़ मौजूद कपास अनुसंधान केंद्र ने विगत छह साल के शोध के उपरांत कपास की तीन बीटी किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों को हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित केंद्रीय किस्म चयन समिति की बैठक में स्वीकृत दी गई है। दावा यह भी किया गया है, कि इनके बीजों का तीन वर्ष तक इस्तेमाल किया जा सकता है।

वसंतराव नाइक मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, परभणी के नांदेड़ मौजूद कपास अनुसंधान केंद्र ने कपास की तीन नवीन किस्में इजात की हैं। अब इन किस्मों से किसानों को अधिक फायदा होगा। किसानों के लिए बीज की लागत को कम करने में सहायता मिलेगी। बतादें, कि पैदावार भी काफी अच्छी होगी। इन किस्मों को शुष्क जमीन वाले इलाकों में भी उगाया जा सकता है। यह बीटी किस्म है, बीटी कॉटन के बीज के लिए किसानों को निजी कंपनियों पर आश्रित रहना पड़ता था, जिससे उन्हें बीज पर अधिक धनराशि खर्च करनी पड़ती थी। वर्तमान में नवीन किस्में किसानों को एक विकल्प मुहैय्या कराएगी। यूनिवर्सिटी की तरफ से यह दावा किया गया है।

### कपास की तीन नई किस्में इजात की गई

नांदेड़ मौजूद कपास अनुसंधान केंद्र ने विगत छह साल के शोध के पश्चात कपास की तीन बीटी किस्में इजात की हैं। इनमें एनएच 1901 बीटी, एनएच 1902 बीटी एवं एनएच 1904 बीटी शम्मिलित हैं। इन किस्मों को वर्तमान में नई दिल्ली में आयोजित केंद्रीय किस्म चयन समिति की बैठक में स्वीकृति दी गई है। इनकी बिजाई लागत संकर किस्मों की तुलना में कम होने का दावा किया गया है। दावा यह भी किया गया है, कि इनके बीजों का तीन वर्ष तक इस्तेमाल किया जा सकता है।

### ये किस्में किन राज्यों के लिए विकसित की गई हैं

बतादें, कि इन किस्मों में खादों का उपयोग भी कम होगा। हालांकि, किसानों की तरफ से कपास की ऐसी किस्मों की मांग है। परंतु, किस्मों की अनुपलब्धता की वजह राज्य में सबसे ज्यादा संकर कपास की खेती की गई है। इस जरूरत को ध्यान में रखते हुए ही नवीन किस्में तैयार की गई हैं। महाराष्ट्र प्रमुख कपास उत्पादक राज्य है। यहां बड़े पैमाने पर किसान कॉटन की खेती पर निर्भर हैं। ये तीन नवीन किस्में महाराष्ट्र, गुजरात एवं मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त हैं।

### दक्षिण भारत के लिए विकसित की गई अलग किस्म

यह दावा किया गया है, कि परभणी कृषि विश्वविद्यालय कपास की सीधी किस्मों को बीटी तकनीक में परिवर्तित करने वाला राज्य का पहला कृषि विश्वविद्यालय बन चुका है। इससे पूर्व यह प्रयोग नागपुर के केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र ने किया था। यह किस्म अब किसानों को आगामी वर्ष में खेती के लिए उपलब्ध होगी। साथ ही, परभणी के मेहबूब बाग कपास अनुसंधान केंद्र ने स्वदेशी कपास की एक सीधी किस्म 'पीए 833' विकसित की है, जो दक्षिण भारत के लिए अनुकूल है।

### विकसित की गई इन तीन नवीन किस्मों की विशेषता

कपास की इन तीन नवीन किस्मों में संकर किस्म के मुकाबले में कम रासायनिक उर्वरकों की जरूरत होती है। इस किस्म में रस चूसने वाले कीट, जीवाणु झुलसा रोग और पत्ती धब्बा रोग नहीं लगता है। यह इन रोगों के प्रति बेहद सहनशील है। इस किस्म की कपास का उत्पादन 35 से 37 प्रतिशत है। धागों की लंबाई मध्यम है। मजबूती और टिकाऊपन भी काफी अच्छा है। यूनिवर्सिटी का दावा है, कि यह किस्म सघन खेती के लिए भी अच्छी है।

# किसान भाई ब्रोकली की खेती करके अच्छा-खासा मुनाफा कमा सकते हैं

कृषक भाई ब्रोकली की खेती के जरिए काफी मोटा मुनाफा कमा सकते हैं। इसकी फसल लगभग दो महीने में हार्वेस्टिंग के लिए तैयार हो जाती है। कैंसर से लेकर दिल के स्वास्थ्य तक के लिए ब्रोकली को काफी अच्छा माना जाता है। बाजार में इसकी बेहद मांग है। ऐसे में किसान भाई इसका उत्पादन कर तगड़ा मुनाफा अर्जित कर सकते हैं। उत्तर प्रदेश में भी इसको उगाया जा रहा है। अगर आप भी किसान हैं, तो आप इन्हीं की तरह ब्रोकली की खेती से मुनाफा कमा सकते हैं।

**ब्रोकली की खेती से होंगे विभिन्न लाभ**

किसान ओम प्रकाश का कहना है, कि कृषि विभाग के ही एक कार्यक्रम के दौरान उन्हें ब्रोकली की खेती के विषय में जानकारी मिली थी। इसके पश्चात वह ब्रोकली की खेती की बारीकियां सीखने के लिए हरियाणा और नोएडा गए। ओमप्रकाश ने बताया है, कि ब्रोकली की फसल से सामान्य फूल गोभी से कहीं ज्यादा मुनाफा मिल रहा है। सामान्य गोभी में एक पौधे पर एक ही फूल आता है, जबकि ब्रोकली में एक पौधे पर एक फूल काटने के उपरांत छह से आठ फूल तक आते हैं। इसके उत्पादन से फायदे ही फायदे हैं।

**ब्रोकली की फसल को लेकर विशेषज्ञ क्या कहते हैं**

साथ ही, कृषि विशेषज्ञ भी ब्रोकली की फसल को किसान की आमदनी बढ़ाने का एक बेहतरीन जरिया बता रहे हैं। इसकी न्यूट्रिशन मात्रा काफी अधिक है। विशेषज्ञों के मुताबिक, तो ब्रोकली के विषय में बताते हुए कहा कि इसकी खेती काफी लाभदायक है। बाजार में इसकी बेहतरीन मांग रहती है। बड़े शहरों में होटलों एवं रेस्टोरेंट में इसकी अच्छी मांग है।

**ब्रोकली की खेती से जुडी आवश्यक जानकारी**

ब्रोकली की फसल सिर्फ 60 से 65 दिन में ही हार्वेस्टिंग के लिए पूरी तरह तैयार हो जाती है। अगर फसल अच्छी होती है, तो एक हैक्टेयर में लगभग 15 टन तक का उत्पादन होता है। यह हरी, सफेद और बैंगनी तीन रंग की होती है। परंतु, सबसे अधिक मांग हरे रंग की ब्रोकली की होती है। एक हेक्टेयर में ब्रोकली की बुवाई के लिए 400 से लेकर 500 ग्राम बीजों की जरूरत पड़ती है। इसके बीजों को कृषि अनुसंधान केंद्र, बीज भंडार अथवा ऑनलाइन मंगाया जा सकता है। इसकी खेती करने के दौरान किसान भाई इसके पौधों को 30 सेंटीमीटर के फासले पर लगाएं और दो कतारों के मध्य का फासला 45 सेंटीमीटर रखें।

# ई-नाम के माध्यम से नेफेड और एनसीसीएफ ने हजारों टन प्याज बेची

नेफेड ने अब तक पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश की कई सारी मंडियों में 3,000 टन से ज्यादा प्याज भेजा है। वहीं, उत्तर प्रदेश की मंडियों में बिक्री शुरू करने के लिए उपभोक्ता मंत्रालय से स्वीकृति मांगी है। सूत्रों का कहना है, कि उत्तर प्रदेश में वाराणसी, प्रयागराज, कानपुर और लखनऊ जैसे प्रमुख शहरों को शुरुआत में कवर किए जाने की संभावना है।

राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ एवं राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता फेडरेशन (एनसीसीएफ) ने 30-31 अगस्त को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ई-नाम के जरिए से 900 टन से ज्यादा प्याज बिक्री की। इसमें अंतर-राज्य लेनदेन के जरिए से 152 टन का व्यापार भी शम्मिलित है। ई-नाम प्लेटफॉर्म के जरिए से प्याज की बिक्री महाराष्ट्र की कुछ मंडियों में व्यापारियों के विरोध पर सरकार की त्वरित प्रतिक्रिया थी। जहां उन्होंने प्याज पर लगाए गए 40 प्रतिशत निर्यात शुल्क के विरोध में नीलामी रोक दी थी। जवाब में, सरकार ने नेफेड और एनसीसीएफ दोनों को प्याज भंडारण जारी करने के लिए वैकल्पिक रास्ते तलाशने का निर्देश दिया था।

इस बिक्री का उद्देश्य, प्याज के भाव को न बढ़ने देना था। हालांकि, सरकार के इन प्रयासों से प्याज किसानों को काफी हानि हुई थी। परंतु, सरकार ने किसानों को दरकिनार कर केवल उपभोक्ता के हितों का ध्यान रखा। सरकार नहीं चाहती थी, कि टमाटर के पश्चात अब प्याज की भी महंगाई बढ़े। साथ ही, इसको लेकर कोई हंगामा हो, क्योंकि उसे शीघ्र ही चुनाव का सामना करना है।

**ई-नाम के माध्यम से बिक्री बढ़ने की संभावना**

नेफेड जिसने ई-नाम के जरिए से प्याज की बिक्री चालू की थी। महाराष्ट्र के लासलगांव से भौतिक स्टॉक लेने के पश्चात एक राज्य के भीतर ही 5,08.11 टन बेचने में सक्षम रहा। राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ (एनसीसीएफ) ने राज्य के भीतर मंडी एवं अंतर-राज्य लेनदेन दोनों का इस्तेमाल किया। लासलगांव मंडी महाराष्ट्र के नासिक में मौजूद है। यह दावा किया जाता है, कि यह एशिया की सबसे बड़ी प्याज मंडी है।

सूत्रों का कहना है, कि दोनों एजेंसियों को ई-नाम के जरिए से बिक्री बढ़ने की संभावना है। यदि नीलामी के दौरान ज्यादा व्यापारियों को मंच पर लाया जाए और उन्हें गुणवत्ता एवं लॉजिस्टिक मुद्दों के विषय में समझाया जाए तो ऐसा हो सकता है। सरकार ने पूर्व में ही ई-नाम पोर्टल पर कृषि क्षेत्र में लॉजिस्टिक मूल्य श्रृंखला की सुविधा प्रदान कर दी है।

**किसान किस वजह से हुए काफी नाराज**

केंद्र सरकार ने 17 अगस्त को प्याज के एक्सपोर्ट पर 40 प्रतिशत ड्यूटी लगा दी थी। इसके विरोध में किसानों एवं व्यापारियों ने लासलगांव और पिंपलगांव जैसी मंडियों में हड़ताल करवाकर उसे बंद करवा डाला था। किसानों की नाराजगी को कम करने के लिए सरकार ने 2 लाख टन अतिरिक्त प्याज खरीदने का निर्णय लिया था। परंतु, आम किसानों को इससे कोई विशेष लाभ नहीं मिला।

उधर, सरकार द्वारा पहले से निर्मित किए गए 3 लाख टन के बफर स्टॉक से बाजार में प्याज उतारने का निर्णय किया। उसके बाद 2 लाख टन और खरीद का निर्णय लिया गया। उससे पहले एनसीसीएफ ने तकरीबन 21,000 टन और नेफेड ने तकरीबन 15,000 टन प्याज बेच दिया था। केंद्र ने 11 अगस्त को घोषणा की कि वह उन राज्यों अथवा क्षेत्रों के प्रमुख बाजारों को टारगेट करके बफर स्टॉक से खुले बाजार में प्याज जारी करेगा। जहां खुदरा कीमतें काफी ज्यादा हैं।

**नेफेड इन बाजारों में उतारेगा प्याज**

आधिकारिक सूत्रों का कहना है, कि नेफेड ने अब तक हरियाणा, पंजाब एवं हिमाचल प्रदेश की विभिन्न मंडियों में 3,000 टन से ज्यादा प्याज भेजा है। साथ ही, उत्तर प्रदेश की मंडियों में बिक्री शुरू करने के लिए उपभोक्ता मंत्रालय से स्वीकृति मांगी है। सूत्रों का कहना है, कि उत्तर प्रदेश में लखनऊ, वाराणसी, प्रयागराज एवं कानपुर जैसे प्रमुख शहरों को शुरुआत में कवर किए जाने की संभावना है। उसके पश्चात प्रतिक्रिया के आधार पर अन्य स्थानों को भी शम्मिलित किया जा सकता है।

# सामान्य आलू की तुलना में गुलाबी आलू दिलाएगा किसानों को अधिक मुनाफा



## सामान्य आलू की तुलना में गुलाबी आलू दिलाऐगा किसानों अधिक मुनाफा

किसान भाइयों आज हम आपको इस लेख में गुलाबी आलू के बारे में बताने जा रहे हैं। गुलाबी आलू आम आलू की तुलना में विलंभ से खराब होता है। यह आलू स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक होता है। अगर आप किसान हैं एवं आप आलू की खेती करते हैं, तो ये खबर आपके लिए बड़े काम की होने वाली है। अब किसान भाइयों को नॉर्मल आलू की खेती करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वर्तमान में गुलाबी आलू की भी खेती हो रही है। यह आलू दिखने में बेहद ही अच्छा लगता है। इसके साथ ही इसका स्वाद भी सामान्य आलू से अच्छा है। जानकारों का कहना है, कि ये आलू अत्यधिक पौष्टिक हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट व स्टार्च भरपूर मात्रा में होता है।

**गुलाबी आलू सेहत के लिए काफी फायदेमंद है**

गुलाबी आलू को स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद कहा जाता है। इसी के साथ – साथ ये शीघ्रता से सड़ता भी नहीं है। बाजार में यह आलू तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। बतादें, कि मांग बढ़ने के साथ किसान भाइयों को मुनाफा होना चालू हो गया है। अब जितनी इसकी मांग बढ़ेगी किसानों को भी उतना ही ज्यादा लाभ मिलेगा।

**गुलाबी आलू की खेती से कृषकों को मिलेगा फायदा**

गुलाबी आलू की खेती तराई और पहाड़ी क्षेत्र दोनों में की जा सकती है। फसल को तैयार होने में 80 से 100 दिन का समय लग जाता है। गुलाबी आलू काफी चमकीला भी होता है, जिसकी वजह से लोग इसकी ओर तेजी से आकर्षित होते हैं। कीमत की बात की जाए तो बाजारों में इसका भाव आम आलू की तुलना में अधिक होती है। प्रति हेक्टेयर के खेत में इसकी 400 क्विंटल से भी ज्यादा पैदावार हो सकती है। गुलाबी आलू की एक बार की फसल से किसान भाई को एक से दो लाख रुपये का मुनाफा होता है।

**गुलाबी आलू सेहत के लिए काफी अच्छा होता है**

विशेषज्ञों का कहना है, कि ये आलू आम आलू की तुलना में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का कार्य करता है। साथ ही, गुलाबी आलू का कई महीनों तक सुगमता से भंडारण किया जा सकता है। इसमें वायरस के चलते पनपने वाले रोग भी नहीं लगा करते, जिसकी वजह से किसानों की लागत में कमी आती है और मुनाफा भी अधिक होता है।

# जम्मू-कश्मीर सरकार राज्य में सेब की खेती पर अनुदान प्रदान कर रही है

## जम्मू-कश्मीर सरकार राज्य में सेब की खेती पर अनुदान प्रदान कर रही है

जम्मू कश्मीर पूरी दुनिया में अपने सेब के लिए मशहूर है। जम्मू कश्मीर के लाखों लोग सेब की खेती के जरिए ही अपना जीवन यापन करते हैं। सेब की खेती करने वाले किसान भाइयों के लिए यह बड़े काम की खबर साबित होने वाली है। हमारे भारत में ही नहीं विदेशों में भी सेब को काफी अधिक पसंद किया जाता है। भारत में सेब की खेती कश्मीर राज्य में होती है। कश्मीर के मूल निवासी किसानों की आमदनी का सबसे बड़ा जरिया सेब की खेती है। कश्मीर का सेब दुनिया भर में मशहूर है। जम्मू कश्मीर में लगभग 25 लाख लोगों को सेब की खेती से रोजगार के अवसर मिल रहे हैं। हालांकि, इस वर्ष हुई प्रचंड बरसात की वजह से सेब की फसल को काफी क्षति पहुँची है। जिसको देखते हुए सरकार ने किसानों के फायदे हेतु एक कदम उठाया है। अब सरकार सेब की खेती करने के लिए अनुदान प्रदान करेगी।

खबरों के अनुसार, जम्मू और कश्मीर भारत में कुल उत्पादित सेब के तकरीबन 80 प्रतिशत हिस्से में भागीदारी रखता है। सेब की खेती से प्रदेश को लगभग 1500 करोड़ रुपये की आमदनी अर्जित होती है। कश्मीर के कुपवाड़ा, गांदरबल, शोपियां, अनंतनाग, श्रीनगर, बडगाम और बारामुला जनपद में बड़े पैमाने पर सेब की खेती की जाती है।

### सेब की विभिन्न किस्मों को मंगाकर भी उत्पादन किया जाएगा

जम्मू-कश्मीर प्रशासन और हॉर्टिकल्चर विभाग ने स्थितियों को ध्यान में रखते हुए राज्य उच्च घनत्व वृक्षारोपण पर बल दिया है। इस वजह से राज्य के कृषकों की आमदनी में इजाफा होने की संभावना है। राज्य सरकार के इस उपयोग के दौरान यूरोप के देशों से सेब की भिन्न-भिन्न प्रजातियों को मंगा कर लगाया जाएगा। सेब की नवीन किस्मों के वृक्षारोपण के लिए जम्मू-कश्मीर हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट कृषकों को 50 प्रतिशत तक की सब्सिड़ी देगी। इसके अतिरिक्त हॉर्टिकल्चर विभाग राज्य के किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए खेती से जुड़ी तकनीकी जानकारियां भी प्रदान कर रहा है।

### किसान भाइयों की आर्थिक स्थिति सशक्त बनेगी

अधिकारियों का कहना है, कि इस कदम से सेब के उत्पादन के साथ-साथ किसान भाइयों की आर्थिक हालत भी सशक्त होगी। हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट के मुताबिक, बेहद जल्द ही नए किस्म के सेब को उपलब्ध करा दिया जाएगा।
हाई डेंसिटी एप्पल प्लांटेशन को लेकर अनुदान दिया जा रहा है

कश्मीर में हाई डेंसिटी एप्पल प्लांटेशन के चलते किसानों में दिलचस्पी बढ़ी है। साथ ही, कश्मीर में फिलहाल जगह-जगह पर रिवायती सेब के पेड़ों के स्थान पर इसी हाई डेंसिटी प्लांटेशन में दिलचस्पी दिखा रहे हैं, जिसमें जम्मू कश्मीर हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट की ओर से 50% प्रतिशत का अनुदान भी किसानों को इस नई तकनीक के अंतर्गत सेब उगाने के लिए दिया जा रहा है। उसके साथ-साथ हॉर्टिकल्चर डिपार्मेंट किसानों को उत्साहित करने के लिए हर प्रकार की तकनीकी जानकारियां भी किसानों के खेतों तक पहुंचा रही है।

### युवा किसानों की भी दिलचस्पी बढ़ रही है

अब कश्मीर में पढ़े-लिखे युवा भी खेती की तरफ रुचि दिखाने लगे हैं। साथ ही, हाई डेंसिटी एप्पल प्लांटेशन उनके लिए रोजगार का साधन होने के साथ-साथ आमदनी का बेहतरीन माध्यम बनता जा रहा है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि कश्मीरी सेब की मांग भारत के समेत संपूर्ण विश्व में है। इसी मिठास एवं रसीलेपन की वजह इसकी मांग संपूर्ण विश्व में है। अब ऐसी स्थिति में यह कश्मीरी लोगों के लिए आमदनी का एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है।

# स्वदेशी गाय खरीदने पर यह सरकार दे रही 80 हजार रुपए की धनराशि

उत्तर प्रदेश में सीएम योगी आदित्यनाथ ने 'नंद बाबा दुग्ध मिशन' के तहत मुख्यमंत्री स्वदेशी गौ संवर्धन योजना शुरू की है. इस योजना के तहत इनका उद्देश्य गौ पालकों की आय, रोजगार उपलब्ध कराना, स्वदेशी गायों की नस्लों को बढ़ाना, गौ पालको का स्वदेशी गायों के प्रति रुझान बढ़ाना एवं दुग्ध उत्पादन में अग्रणी राज्य बनाना है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का गौवंशों के प्रति प्रेम साफ तौर पर देखने को मिलता है। योगी सरकार गोवंशों एवं उनकी सुरक्षा को लेकर नवीन योजनाएं जारी करती रहती हैं। साथ ही, पशुपालकों एवं किसानों के हित में योजनाएं एवं अभियान चलाए जाते रहे हैं। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री योगी ने 'नंद बाबा दुग्ध मिशन' के अंतर्गत मुख्यमंत्री स्वदेशी गौ संवर्धन योजना चालू की है। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य यह है, कि यूपी के गौ पालकों की आमदनी बढ़ सके और पशुपालन में रोजगार मुहैय्या कराया जा सके। इसके अतिरिक्त दूसरे राज्यों से स्वदेशी नस्लों की गायों के प्रति गौ पालकों की रूचि बढ़ाई जा सके। साथ ही, दुग्ध उत्पादन में भी बढोत्तरी हो सके। साथ ही, योजना को लेकर शासनादेश जारी कर दिया गया है। शासनादेश में इस योजना से जुड़ी पात्रता, सब्सिडी के मानक, उद्देश्य एवं स्वरुप को स्पष्ट रुप से दिया गया है।

**जानें कौन-सी गायों को खरीदने पर मिलेगा अनुदान**

मुख्यमंत्री स्वदेशी योजना के मुताबिक, गौ पालकों को दूसरे राज्यों से थारपारकर, गिर, संकर और साहिवाल नस्ल की गाय खरीदने पर उन्हें ट्रांसपोर्टेशन, ट्रांजिट इंश्योरेंस एवं पशु इंश्योरेंस सहित अन्य सामानों पर खर्च होने वाली धनराशि पर अनुदान प्रदान करेगी। गौ पालकों को यह अनुदान दो स्वदेशी नस्ल की गायों को खरीदने पर मिलेगा। यह अनुदान गौ पालकों को कुल लागत धनराशि का 40 प्रतिशत मतलब कि 80 हजार रुपये दिया जाएगा। सबसे पहले यह योजना सिर्फ उत्तर प्रदेश के 18 मंडलों के मुख्यालय के जनपदों में लागू की जाएगी। इसके उपरांत संपूर्ण राज्य के जनपदों में लागू की जाएगी।

**'नंद बाबा दुग्ध मिशन' के तहत जारी की गई नवीन योजना**

अपर मुख्य सचिव पशुपालन डॉ. रजनीश दुबे का कहना है कि, 'नन्द बाबा मिशन के तहत मुख्यमंत्री स्वदेशी गौ संवर्धन योजना जारी की गई है। इसका प्रमुख उद्देश्य सिर्फ राज्य में स्वदेशी उन्नत नस्ल की गायों की तादात और उनकी नस्ल को बढ़ाना। जिससे कि राज्य में दुग्ध उत्पादकता में वृद्धि हो सके। साथ ही, प्रदेश दुग्ध उत्पादन में अग्रणी राज्य बन सके। इसके साथ ही राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं एवं महिलाओं को पशुपालन व्यवसाय के लिए बढ़ावा दे कर उन्हें रोजगार मुहैय्या करा सकें। दुग्ध आयुक्त एवं मिशन निदेशक शशि भूषण लाल सुशील ने बताया कि मुख्यमंत्री स्वदेशी गौ संवर्धन योजना का फायदा उठाने के लिए गौ पालक को अन्य दूसरे राज्य से स्वदेशी उन्नत नस्ल की गाय को खरीदना होगा।

**यह बीमा बेहद आवश्यक है**

दरअसल, इस योजना पर मुख्य विकास अधिकारी शीघ्र ही एक अनुमति पत्र जारी करेंगे। जिसे लाभार्थी को दूसरे राज्य से स्वदेशी नस्ल की गाय खरीदने के लिए जारी किया जाऐगा। क्योंकि, गौ पालक या लाभार्थी को गायों के परिवहन में किसी भी प्रकार की परेशानी न खड़ी हो। इसके अतिरिक्त दो स्वदेशी गायों का 3 साल का पशु बीमा एकमुश्त कराना जरूरी है। साथ ही, दूसरे राज्य से अपने राज्य में गाय को लाने के लिए ट्रांजिट बीमा भी कराना अति आवश्यक है।

**जानिए किन लोगों को प्राथमिकता दी जाएगी**

मुख्यमंत्री स्वदेशी गौ संवर्धन योजना के अंतर्गत लाभार्थियों को अनुदान गाय की खरीद, ट्रांसपोर्टेशन, ट्रांजिट इंश्योरेंस और पशु इंश्योरेंस, 3 साल का पशु बीमा, चारा काटने की मशीन की खरीद एवं गायों के रखरखाव की सुविधा व शेड के निर्माण पर दी जाएगी। विभाग की तरफ से इन समस्त सामानों में गौ पालक का खर्च दो स्वदेशी नस्ल की गायों के लिए 2 लाख रुपये निर्धारित किया गया है। इसका 40 प्रतिशत मतलब कि अधिकतम 80 हजार रुपये अनुदान के रूप में दिये जाएंगे।

# औषधीय खेती

## स्वास्थ्यवर्धक मुलेठी की खेती करना किसान भाइयों के लिए काफी बड़े मुनाफे का सौदा है

कृषक भाई मुलेठी की खेती कर काफी मोटा मुनाफा हांसिल कर सकते हैं। आप इसकी खेती कैसे कर सकते हैं, इसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारे भारत में प्राचीन काल से ही औषधीय पौधों की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। इन पौधों की खेती कर किसान भाई काफी हद तक अच्छा मुनाफा भी अर्जित करते हैं। इनकी खेती करने से बंजर पड़ी जमीन का भी उपयोग हो जाता है। आज हम आपको जानकारी देंगे कि आप कैसे मुलेठी की खेती कर बेहतरीन मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। मुलेठी की खेती के लिए राजस्थान की जलवायु काफी अच्छी मानी जाती है। मुलेठी की जड़ से झाड़ी और मोटा तना निर्मित होने में लगभग तीन वर्ष का समय लग जाता है। साथ ही, कटाई के उपरांत 1 हैक्टेयर में मुलेठी की खेती करके 4000 किलो तक पैदावार की जा सकती है।

कटाई के उपरांत खेतों के अंदर मुलेठी की जड़ रह जाती है, जिसे सिंचाई करके पुनः उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। एक बार मुलेठी की खेती करके किसान बहुत सालों तक मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। आयुर्वेद में मुलेठी की खेती का बेहद इस्तेमाल होता है। मुलेठी को आयुर्वेदिक अथवा बाकी दवा कंपनियां 50 से 100 रुपये के बीच खरीदती हैं। इससे किसानों को बंजर मृदा का सही उपयोग करके कम लागत में बेहतरीन आमदनी करने का अवसर मिलता है।

**मुलेठी की खेती किस तरह की जाती है**

- खेत की मृदा को मजबूत बनाने के लिए 2-3 गहरी जुताई करें।
- अंतिम जुताई से पहले खेत में दस से पंद्रह गाड़ी गोबर की सड़ी खाद, आठ किलो नाइट्रोजन एवं सोलह किलो फास्फोरस का मिश्रण मिला दें।
- खेतों में रोपाई से पूर्व जड़ों को बेहतर ढ़ंग से तैयार कर लें, जो फसल में कीड़ों एवं बीमारियों को रोकता है।
- रोपाई करने से पूर्व 8-9 इंच लंबे, दो या तीन आंखों वाले टुकड़ों को काटकर तीन अथवा चार हिस्सों को मिट्टी में दबा दें।
- कतारों में मुलेठी रोपें एवं रोपाई के शीघ्र उपरांत हल्की सिंचाई करें।
- पौधे की बढ़वार होने तक मृदा को पर्याप्त नमी में रखें।
- खेत में निराई-गुड़ाई करते रहें एवं खरपतवारों को देखते रहें।
- मुलेठी की फसल को बीमारियों एवं कीड़ों से संरक्षित रखने के लिए जैविक कीटनाशकों का स्प्रे करें।

**मुलेठी से क्या-क्या फायदे होते हैं**

इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में कारगर मुलेठी में एंटी ऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं, जो इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए आप मुलेठी की चाय पी सकते हैं या इसका सेवन शहद और घी के साथ कर सकते हैं।

पाचन तंत्र के लिए काफी फायदेमंद होती है। मुलेठी पाचन तंत्र को बेहतर बनाता है। यह कब्ज, पेट में जलन और सूजन की समस्या को कम करने में सहायक माना जाता है।

खांसी को कम करने में सहायक होती है। सर्दियों के मौसम में खांसी की समस्या आम है, इससे राहत पाने के लिए आप मुलेठी के टुकड़े को चूस सकते हैं। ये खांसी से राहत दिलाने में मददगार है।

# जानें आज के दौर में विलुप्ती की कगार पर इस वज्रदंती पौधे के अद्भुत गुणों के बारे में

वज्रदंती एक औषधीय पौधा होता है, जिसकी बहुत सारे धार्मिक ग्रन्थों में भी चर्चा की गई है। परंतु, आज बेहद ही कम लोग इस पौधे के विषय में जानकारी रखते हैं। आज हम आपको इसी पौधे के संबंध में संपूर्ण जानकारी देंगे।

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि लोग अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने में हर संभव कदम उठाते हैं। फिर चाहे बात चहरे पर आयुर्वेदिक लेप लगाने की हो अथवा किसी और उपाय को अपनाने की हो। भारत प्राचीन काल से ही आयुर्वेद का घर कहा जाता रहा है। यहाँ पर एक से एक असाध्य रोगों के लिए आपको हर जड़ी-बूटी मुहैय्या थी। परंतु, जैसे-जैसे लोगों का रुझान आयुर्वेद की ओर से कम हुआ तो वैसे-वैसे लोगों ने आयुर्वेद से फासला बना लिया। यही वजह है, कि आज भारत की ऐसी विभिन्न दुर्लभ औषधियां हैं, जो कि पूर्णतय विलुप्त हो चुकीं हैं अथवा कुछ विलुप्त होने की कगार पर हैं। आज हम आपको एक ऐसी ही औषधी के विषय में जानकारी देने जा रहे हैं, जिसको प्राचीन समय में एक से बढ़ कर एक रोगों में प्रयोग किया जाता रहा था। परंतु, अब इसके विषय में बहुत ही कम लोग जानते हैं।

### वज्रदंती एक औषधीय पौधा होता है

वज्रदंती एक औषधीय पौधा होता है, जिसका उल्लेख कई धार्मिक ग्रन्थों में भी किया गया है। हालाँकि, आज बहुत ही कम लोग इस पौधे के संबंध में जानकारी रखते हैं। भारत में यह पौधा सिर्फ उत्तराखंड के अंदर पाया जाता है। वह भी बेहद ही कम संख्या में होता है। यदि हम उत्तराखंड की बात करें तो यह पौधा विशेष रूप से उत्तराखंड की मद्महेश्वर घाटी में पाया जाता है। इसके बहुत सारे औषधीय गुण हैं। दांतों के लिए वरदान कहे जाने वाले इस पौधे को हम अगर प्रयोग में लाते हैं, तो ग्रन्थों के मुताबिक 100 वर्ष तक भी हमारे दांतों में किसी भी बीमारी के आने की संभावना खत्म हो जाती है।

### वज्रदंती पौधा बाकी रोगों में भी फायदेमंद है

वज्रदंती पौधा सिर्फ दांतों के लिए ही नहीं बल्कि डायबिटीज, खून की कमी, पेट के बहुत से अन्य रोगों के लिए भी अत्यंत लाभदायक होता है। यह सांस से जुड़े रोगों के लिए भी बेहद फायदेमंद साबित होता है। इस पौधे के फूल के अंदर फेनोलिक, फ्लेवोनोइड्स, इरिडोइडल एवं फेनिलथेनॉइड ग्लाइकोसाइड्स यौगिक मौजूद होते हैं। साथ ही, यह एंटीऑक्सिडेंट, एंटीडायबिटिक, एंटिफंगल, एंटीप्लास्मोडियल, एंटीऑक्सिडेंट, हेपेटोप्रोटेक्टिव, एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीबैक्टीरियल जैसे तत्वों का खजाना होता है। जो कि हमारी सेहत के लिए काफी ज्यादा फायदेमंद होते हैं।

XXX

# जायफल की खेती किसान प्राकृतिक विधि से करके दोगुनी आय कर सकते हैं

## जायफल की खेती किसान प्राकृतिक विधि से करके दोगुनी आय कर सकते है

जायफल एक नगदी फसल है। प्राकृतिक ढ़ंग से इसकी खेती कर किसान काफी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। भारत देश में हर तरह की फसलों की खेती की जाती है। इस बदलते खेती के युग में फिलहाल किसान नगदी फसल की खेती की तरफ अधिक रुझान कर रहे हैं। इस नगदी फसल की खेती से मुनाफा अर्जित कर किसान संपन्न हो रहे हैं। आगे इस लेख में हम आपको ऐसी ही एक फसल जायफल की खेती के विषय में जानकारी देने जा रहे हैं। इसे नकदी फसल के रूप में ही उगाया जाता है। आज कल किसान इसकी खेती प्राकृतिक ढ़ंग से कर काफी मोटा मुनाफा कमा रहे हैं।

**जायफल की खेती हेतु उपयुक्त मृदा**

विशेषज्ञों के मुताबिक, जायफल के लिए बलुई दोमट एवं लाल लैटेराइट मृदा सबसे अच्छी होती है। इसका पीएच मान 5 से 6 के मध्य होना चाहिए। इसके बीज की बुवाई के पहले खेत की गहरी जुताई की आवश्यकता होती है।

**जायफल की खेती हेतु उपयुक्त जलवायु**

जायफल एक सदाबहार पौधा होता है। इसकी बिजाई करने के लिए 22 से 25 डिग्री के तापमान की आवश्यकता होती है। अत्यधिक गर्मी वाले क्षेत्रों में इसकी खेती अच्छे से नहीं हो पाती है। जायफल के बीज अंकुरित ही नहीं हो पाते हैं।

**खेत की तैयारी किस प्रकार करें**

बीज की बुवाई के उपरांत खेत की बेहतर ढ़ंग से सिंचाई कर दें। इसके लिए खेत में गड्ढे भी तैयार किए जाते हैं। खेत की मिट्टी पलटने के लिए हल से गहरी जुताई करें। 4 से 6 दिन गुजरने के उपरांत खेत में कल्टीवेटर की सहायता से 3 से 4 बार जुताई करें।

**जायफल की फसल में आर्गेनिक खाद का उपयोग**

जायफल के पौधों की बुवाई के पश्चात खेतों में लगातार उचित अंतराल पर खाद देते रहना चाहिए। खेत में गोमूत्र एवं बाविस्टीन के मिश्रण को डाल देना चाहिए। जायफल की पौध तैयार करने के लिए आर्गेनिक खाद, गोबर, सड़ी गली सब्जियों का उपयोग करना चाहिए।

**जायफल से कितनी पैदावार होती है**

जायफल का उत्पादन 4 से 6 साल बाद चालू हो जाती है। इसका वास्तविक लाभ 15 से 18 वर्ष उपरांत मिलना शुरू होता है। इसके पौधों में फल जून से अगस्त माह के मध्य लगते हैं। यह पकने के पश्चात पीले रंग के हो जाते हैं। इसके उपरांत जायफल के बाहर का आवरण फट कर बाहर निकल जाता है। अब आपको इसकी तुड़ाई कर लेनी चाहिए।

# पशुपालन-पशुचारा

## पशुओं को साइलेज चारा खिलाने से दूध देने की क्षमता बढ़ेगी

गाय-भैंस का दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए आप साइलेज चारे को एक बार अवश्य खिलाएं। परंतु, इसके लिए आपको नीचे लेख में प्रदान की गई जानकारियों का ध्यान रखना होगा। पशुओं से हर दिन समुचित मात्रा में दूध पाने के लिए उन्हें सही ढ़ंग से चारा खिलाना बेहद आवश्यक होता है। इसके लिए किसान भाई बाजार में विभिन्न प्रकार के उत्पादों को खरीदकर लाते हैं एवं अपने पशुओं को खिलाते हैं।

यदि देखा जाए तो इस कार्य के लिए उन्हें ज्यादा धन खर्च करना होता है। इतना कुछ करने के पश्चात किसानों को पशुओं से ज्यादा मात्रा में दूध का उत्पादन नहीं मिल पाता है। यदि आप भी अपने पशुओं के कम दूध देने से निराश हो गए हैं, तो घबराने की कोई जरूरत नहीं है। आज हम आपके लिए ऐसा चारा लेकर आए हैं, जिसको समुचित मात्रा में खिलाने से पशुओं की दूध देने की क्षमता प्रति दिन बढ़ेगी। दरअसल, हम साइलेज चारे की बात कर रहे हैं। जानकारी के लिए बतादें, कि यह चारा मवेशियों के अंदर पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के साथ ही दूध देने की क्षमता को भी बढ़ाता है।

**कौन से मवेशी को कितना चारा खिलाना चाहिए**

ऐसे में आपके दिमाग में आ रहा होगा कि क्या पशुओं को यह साइलेज चारा भरपूर मात्रा में खिलाएंगे तो अच्छी पैदावार मिलेगी। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि ऐसा करना सही नहीं है। इससे आपके मवेशियों के स्वास्थ्य पर गलत प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए ध्यान रहे कि जिस किसी भी दुधारू पशु का औसतन वजन 550 किलोग्राम तक हो। उस पशु को साइलेज चारा केवल 25 किलोग्राम की मात्रा तक ही खिलाना चाहिए। वैसे तो यह चारा हर एक तरह के पशुओं को खिलाया जा सकता है। परंतु, छोटे और कमजोर मवेशियों के इस चारे के एक हिस्से में सूखा चारा मिलाकर देना चाहिए।

**साइलेज चारे में कितने प्रतिशत पोषण की मात्रा होती है**

जानकारी के अनुसार, साइलेज चारे में 85 से लेकर 90 प्रतिशत तक हरे चारे के पोषक तत्व विघमान होते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें विभिन्न प्रकार के पोषण पाए जाते हैं, जो पशुओं के लिए काफी फायदेमंद होते हैं।

**साइलेज तैयार करने के लिए इन उत्पादों का उपयोग**

अगर आप अपने घर में इस चारे को बनाना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको दाने वाली फसलें जैसे कि ज्वार, जौ, बाजरा, मक्का आदि की आवश्यकता पड़ेगी। इसमें पशुओं की सेहत के लिए कार्बोहाइड्रेट अच्छी मात्रा में होते हैं। इसे तैयार करने के लिए आपको साफ स्थान का चयन करना पड़ेगा। साथ ही, साइलेज बनाने के लिए गड्ढे ऊंचे स्थान पर बनाएं, जिससे बारिश का पानी बेहतर ढ़ंग से निकल सके।

**गाय-भैंस कितना दूध प्रदान करती हैं**

अगर आप नियमित मात्रा में अपने पशु को साइलेज चारे का सेवन करने के लिए देते हैं, तो आप अपने पशु मतलब कि गाय-भैंस से प्रति दिन बाल्टी भरकर दूध की मात्रा प्राप्त कर सकते हैं। अथवा फिर इससे भी कहीं ज्यादा दूध प्राप्त किया जा सकता है।

# पशुओं को आवारा छोड़ने वालों पर राज्य सरकार करेगी कड़ी कार्रवाही

## पशुओं को आवारा छोड़ने वालों पर राज्य सरकार करेगी कड़ी कार्रवाही

योगी सरकार प्रदेश में घूम रहे निराश्रित पशुओं की सुरक्षा के लिए अभियान चलाने जा रही हैं। इसके लिए समस्त जनपदों के अधिकारियों को निर्देश जारी कर दिए गए हैं। उत्तर प्रदेश में सड़कों पर विचरण कर रहे पशुओं को लेकर अक्सर राजनीति होती रहती है। ऐसी स्थिति में सड़कों पर छुट्टा घूम रहे गोवंश को लेकर राज्य सरकार काफी सख्ताई बरत रही है। उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य के समस्त जिला अधिकारियों को सड़कों पर घूम रहे निराश्रित गोवंश को गौशालाओं तक पहुंचाने के निर्देश दिए हैं। उत्तर प्रदेश के पशुधन और दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने बताया है, कि राज्य में यह अभियान चलाकर हम निराश्रित गोवंश का संरक्षण करने के साथ-साथ उन्हें गौशालाओं तक पहुंचाने का काम कर रहे हैं। इसके लिए अधिकारियों को दिशा-निर्देश भी दिए गए हैं। राज्य सरकार की ओर से गौ संरक्षण करने के लिए यह योजना जारी की गई है।

### गोवंश संरक्षण हेतु अभियान का समय

उत्तर प्रदेश के पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह का कहना है, कि इस योजना का प्रथम चरण बरेली, झांसी और गोरखपुर मंडल में 10 सितंबर से 25 सितंबर तक सुनिश्चित किया जाएगा। सड़कों पर विचरण कर रहे गोवंश को गोआश्रय तक पहुंचाने का कार्य किया जाएगा। वहीं, इसके साथ ही उनके खान-पान की भी समुचित व्यवस्था की जाएगी।

### पशुओं को छुट्टा छोड़ने वालों पर होगी कानूनी कार्रवाई

उत्तर प्रदेश के पशुधन मंत्री धर्मपाल सिंह ने इन जनपद के किसानों एवं पशुपालकों से निवेदन किया है, कि कोई भी पशुओं को सड़कों पर निराश्रित ना छोड़ें। यदि कोई भी शक्श ऐसा करता पाया गया तो उस पर कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। उन्होंने जनपद के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं, कि ऐसे लोगों की पहचान की जाए जो पशुओं को खाली सड़कों पर छोड़ दे रहे हैं। साथ ही, संपूर्ण राज्य में इस अभियान का चरणबद्ध ढ़ंग से प्रचार-प्रसार किया जाए। सरकार स्थानीय प्रशासन, मनरेगा एवं पंचायती राज विभाग के सहयोग से समस्त जनपदों में गोआश्रय स्थल बनवाएगी और पहले से मौजूद गौशालाओं की क्षमता का विस्तार भी किया जाऐगा।

### मवेशियों की ईयर टैगिंग की जाऐगी

पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने बताया है, कि ग्रामीण क्षेत्र के सभी पशुओं का ईयर टैगिंग किया जाएगा। इसकी सहायता से मवेशियों की देखभाल और निगरानी में काफी आसानी होगी। इसके अतिरिक्त सरकार ने बाढ़ प्रभावित जनपदों में पशुओं के लिए पर्याप्त चारा, औषधीय और संक्रामक रोगों से संरक्षण के लिए दवाईयों एवं टीकाकरण की व्यवस्था भी करेगी।

# मिट्टी की सेहत - खाद

## कोकोपीट खाद किस प्रकार तैयार किया जाता है, इससे क्या-क्या फायदे होंगे

आज हम आपको कोकोपीट खाद के बारे में जानकारी देने वाले हैं। यह बेहद ही मुख्य तरह से निर्मित की जाने वाली खाद होती है। इसकी वजह से हमारे पौधों में कभी भी जल की कमी नहीं होती है। यह नारियल के रेशों से निर्मित एक खाद है, जिसमें विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व शम्मिलित होते हैं।
दरअसल, इस खाद के बारे में बेहद ही कम लोग जानते हैं। यह खाद बाकी खाद की तरह नहीं उससे कुछ खास होती है। इसे बनाने के लिए आपको कुछ सामग्रियों की आवश्यकता होगी। तो चलिए जानते हैं, कि यह खाद कौन सी है और इसका क्या नाम है साथ ही इसका उपयोग किस प्रकार किया जाता है।

**कोकोपीट खाद क्या होती है**

आज तक हमने जिन खादों के विषय में सुना होगा यह उनसे कुछ अलग है। वैसे इस खाद का इस्तेमाल हम बड़े इलाकों की जगह घर के बगीचों में अथवा क्यारियों में ज्यादा करते हैं। यह बेहद ही विशेष तरह से निर्मित की जाने वाली खाद होती है, जिसके चलते हमारे पौधों में कभी भी जल की कमी नहीं होती है। यह नारियल के रेशों से निर्मित एक खाद है, जिसमें विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व विघमान होते हैं।

**कोकोपीट खाद किस प्रकार से निर्मित की जाती है**

इस खाद को ऐसे इलाकों पर तैयार किया जाता है, जहां नारियल भरपूर मात्रा में पैदा होता है। साथ ही, इसको निर्मित करने के लिए बेहद अधिक समय लग जाता है। इसको तैयार करने में सर्व प्रथम हम सूखे नारियल को पानी में छोड़ देते हैं। कुछ समय पश्चात हम एक मशीन के जरिए कोकोपीट की कटाई करते हैं। साथ ही, इसे भुरभुरा बना कर सुखा लेते हैं। सुखाते वक्त ही इनको बाजार में बेचने के लिए एक आकार दे दिया जाता है, जिससे आप इन्हें ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन जरिए बाजार से खरीद सकते हैं।

**यह खाद किस तरह से लाभकारी है**

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस खाद को नारियल के रेशों से निर्मित किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप यह रेशेनुमा खाद होती है। जो आपके गमले अथवा बगीचे की मृदा में मिल जाने के उपरांत उस मिट्टी में पानी के अधिक बहाव को रोकती है। साथ ही, मिट्टी में नमी को बरकरार रखने में मददगार होती है। सिर्फ इतना ही नहीं जब यह खाद आपके गमले की मृदा में मिल जाती है, तो आप जो भी पोषक तत्व अथवा उपयुक्त खाद का उपयोग करते हैं, वह पौधों तक बड़ी सुगमता से पहुंच जाती है।

**बैक्टीरिया व फंगस और जड़ों के विकास में फायदेमंद**

यह खाद जड़ों के विकास में भी काफी सहायक होती है। इसकी वजह यह है कि यह खाद बेहद ही मुलायम एवं रेशेदार होती है, जो मृदा में मिल जाने के उपरांत उसे भी मुलायम एवं भुरभुरा बना देती है। यही वजह है, कि छोटे पौधों की जड़ों को सुगमता से फैलाने में यह मददगार हो जाती है। बैक्टीरिया और फंगस में भी है लाभकारी। हमारे बगीचे के बहुत सारे पौधों के अंदर बैक्टीरिया और फंगस लग जाने के कारण वह कुछ ही समय में खत्म हो जाते हैं। साथ ही, उनकी वृद्धि में भी अवरोध पैदा हो जाता है। इस खाद में बैक्टीरिया एवं फंगस से लड़ने के भी गुण मौजूद हैं, जिसकी वजह से छोटे पौधे बेहद ही सहजता से विकास कर पाते हैं। साथ ही, आपको अलग से इसकी दवा के लिए कोई अतिरिक्त खर्च भी नहीं करना होता।

# बैंक की नौकरी छोड़ महज डेढ़ कट्ठा में मशरूम उत्पादन कर 60 हजार महीना कमा रहा किसान

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि किसान देवाशीष कुमार MBA पास हैं। वह पहले एचडीएफसी बैंक में नौकरी किया करते थे। परंतु, उनका मन खेती में नहीं लगता था। अब ऐसी स्थिति में उन्होंने बैंक की नौकरी छोड़कर उन्होंने मशरूम की खेती चालू कर दी। खेती की शुरुआत उन्होंने महज एक हजार रुपये से की थी।

मशरूम की सब्जी बेहद ही ज्यादा स्वादिष्ट होती है। इसका सेवन करना अधिकांश लोग पसंद करते हैं। मशरूम में विटामिन B1, विटामिन B2, विटामिन B12, विटामिन C, विटामिन E, प्रोटीन, खनिज, डाइटरी फाइबर भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसका नियमित तौर पर सेवन करने से लोगों के शरीर में पोषक तत्वों की कमी नहीं होती है। यही कारण है, कि बाजार में मशरूम की मांग काफी बढ़ती जा रही है। ऐसी स्थिति में इसकी खेती करने वाले किसानों की तादात भी बढ़ रही है। बिहार एवं झारखंड में किसान आज कल पारंपरिक फसलों के साथ-साथ मशरूम का भी उत्पादन कर रहे हैं। इससे उनको काफी मोटी आमदनी हो रही है।

### किसान देवाशीष की मशरूम की खेती ने बदली किस्मत

इस लेख में हम झारखंड के एक ऐसे किसान के विषय में चर्चा करेंगे, जिनकी तकदीर मशरूम की खेती से बदल चुकी है। वह अब मशरूम उत्पादन से महीने में हजारों रुपये की आमदनी कर रहे हैं। मशरूम की खेती करने वाले इस किसान का नाम देवाशीष कुमार है। वह पूर्वी सिंहभूम जनपद मौजूद जमशेदपुर के मूल निवासी हैं। उन्होंने डेढ़ कट्ठे भूमि पर मशरूम की खेती कर रखी है, जिससे उनको प्रति महीने 50 से 60 हजार रुपये की आमदनी हो रही है। मुख्य बात यह है, कि देवाशीष कुमार ने अपने इस व्यवसाय की शुरुआत केवल 1 हजार रुपये की धनराशि से की थी।

### देवाशीष कुमार पहले कहां नौकरी किया करते थे

जैसा कि उपरोक्त में बताया गया है, कि देवाशीष कुमार एमबीए पास हैं। बतादें, कि साल 2015 से पूर्व वह एचडीएफसी बैंक में नौकरी किया करते थे। इसी दौरान उनका बिहार राज्य के समस्तीपुर मौजूद राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय में जाना हुआ। जहां पर उनको मशरूम की खेती के विषय में जानकारी मिली है। इसके पश्चात उन्होंने मशरूम की खेती करने का प्रशिक्षण लिया। उसके बाद उन्होंने नौकरी छोड़ दी एवं घर आकर एक हजार रुपए की पूंजी लगाकर मशरुम की खेती चालू कर दी है। हालांकि, आरंभ में घर वालों ने उनके इस निर्णय का कड़ा विरोध किया, परंतु वह अपने काम में बिना रुके लगे रहे।

### किसान देवाशीष मशरुम उत्पादन का प्रशिक्षण भी दे रहे हैं

देवाशीष कुमार का गांव में काफी बड़ा घर है। वह घर के ही चार कमरों में मशरुम की खेती कर रहे हैं। उनको पहली बार में ही सफलता हाथ लग गई। मशरूम की पैदावार भी अच्छी हुई बाजार में भाव भी अच्छा मिल गया, जिससे उन्हें काफी मोटी आमदनी भी हुई। इसके उपरांत देवाशीष कुमार ने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज उन्होंने अपनी खेती में 2 महिलाओं को स्थाई तौर पर रोजगार भी दे रखा है। खास बात यह है, कि देवाशीष मशरूम उत्पादन के साथ-साथ नए लोगों को मशरुम उत्पादन का प्रशिक्षण भी दे रहे हैं।

# आर्मी से सेवानिवृत कैप्टन प्रकाश चंद ने बागवानी शुरू कर लाखों की कमाई

पूर्व कैप्टन प्रकाश चंद ने बताया है, कि गेहूं एवं मक्का जैसी पारंपरिक फसलों की खेती में कोई खास लाभ नहीं है। ऐसी स्थिति में किसानों को अब बागवानी की तरफ रुख करना चाहिए। क्योंकि बागवानी के अंतर्गत कम लागत में ज्यादा मुनाफा है।

दरअसल, हम जिस शख्सियत के संबंध में बात करने जा रहे हैं, उनका नाम प्रकाश चंद है। पूर्व में वह भारतीय सेना में कैप्टन के पद कार्यरत थे। रिटायरमेंट लेने के उपरांत उन्होंने गांव में आकर खेती चालू कर दी। विशेष बात यह है, कि अभी उनकी आयु 70 साल है। वे इस आयु में भी खुद से खेती कर रहे हैं। ऐसे कैप्टन प्रकाश चंद हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जनपद स्थित कैहड़रू गांव के मूल निवासी हैं। वह इस आयु में भी बागवानी कर रहे हैं।

**पूर्व कैप्टन प्रकाश चंद ने लगभग 2 लाख रुपये की मौसंबी बेची हैं**

उनका 20 कनाल जमीन में मौसंबी का बाग है। इससे उन्हें प्रति वर्ष लाखों रुपये की आमदनी हो रही है। पूर्व कैप्टन प्रकाश चंद का कहना है, कि उन्होंने गांव आकर बागबानी की शुरुआत की, तो दूसरे वर्ष उन्हें 60 हजार रुपये की आमदनी हुई। वहीं, तीसरे वर्ष में उन्होंने लगभग 2 लाख रुपये का मौसंबी बेचा। हालांकि, इस वर्ष ज्यादा बारिश की वजह से बाग को बेहद नुकसान पहुंचा है। फिर, भी उनका कहना है कि इस बार 4 लाख रुपये का मुनाफा होगा।

**बागवानी से बढ़ी पूर्व कैप्टन प्रकाश चंद की आमदनी**

कैप्टन प्रकाश चंद का कहना है, कि वह वर्ष 2019 से बागवानी कर रहे हैं। उन्होंने एचपी शिवा प्रोजेक्ट के अंतर्गत बागवानी चालू की है। एचपी प्रोजेक्ट के अंतर्गत किसानों को बागबानी का प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाई जाती है। ऐसी स्थिति में उन्होंने एचपी शिवा प्रोजेक्ट के अंतर्गत बंजर पड़ी 20 कनाल भूमि पर मौसंबी एवं अनार की खेती चालू कर दी। मुख्य बात यह है, कि पूर्व कैप्टन अब अपने मौसंबी तथा अनार के बाग में सब्जी भी उगा रहे हैं। इससे उनकी आमदनी भी काफी बढ़ गई है।

# सरकारी नौकरी को छोड़कर मुकेश पॉलीहाउस के जरिए खीरे की खेती से मोटा मुनाफा कमा रहा है

आपकी जानकारी के लिए बतादें कि युवा किसान मुकेश का कहना है, कि नेट हाउस निर्मित करने के लिए सरकार की ओर से अनुदानित धनराशि भी मिलती है। शुरुआत में नेट हाउस स्थापना के लिए उसे 65% की सब्सिडी मिली थी। हालांकि, वर्तमान में हरियाणा सरकार ने अनुदान राशि को घटाकर 50% कर दिया है।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि आज भी सरकारी नौकरी के पीछे लोग बिल्कुल पागल हो गए हैं। प्रत्येक माता- पिता की यही चाहत होती है, कि उसकी संतान की सरकारी नौकरी लग जाए, जिससे कि उसकी पूरी जिन्दगी सुरक्षित हो जाए। अब सरकारी नौकरी बेशक निम्न स्तर की ही क्यों न हो। परंतु, आज हम एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बात करेंगे, जो कि अच्छी-खासी सरकारी नौकरी को छोड़ अब गांव आकर खेती कर रहा है।

**किसान मुकेश कहाँ का रहने वाला है**

दरअसल, हम जिस युवा किसान के संबंध में बात करने जा रहे हैं, उसका नाम मुकेश कुमार है। मुकेश हरियाणा के करनाल जनपद का रहने वाला है। पहले वह हरियाणा बोर्ड में सरकारी नौकरी करता था। नौकरी के दौरान मुकेश को प्रति महीने 45 हजार रुपये सैलरी मिलती थी। परंतु, इस सरकारी कार्य में उसका मन नहीं लगा, तो ऐसे में उसने इस नौकरी को लात मार दी। आज वह अपनी पुश्तैनी भूमि पर नेट हाउस विधि से खेती कर रहा है, जिससे उसको काफी अच्छी कमाई हो रही है।

**किसान मुकेश लोगों को रोजगार मुहैय्या करा रहा है**

किसान मुकेश अन्य बहुत से किसानो के लिए भी रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रहे हैं। किसान मुकेश का कहना है, कि उसने अपनी भूमि पर चार नेट हॉउस तैयार कर रखे हैं। इनके अंदर किसान मुकेश खीरे की खेती करते हैं। किसान मुकेश के मुताबिक खीरे की मांग गर्मियों में काफी ज्यादा बढ़ जाती है। अब ऐसे में किसान मुकेश लगभग 2 वर्षों से खीरे की खेती कर रहा। बतादें कि इससे किसान मुकेश को काफी अच्छी कमाई हो रही है। यही वजह है, कि वह आहिस्ते-आहिस्ते खीरे की खेती का रकबा और ज्यादा बढ़ाते गए हैं। इसके साथ साथ मुकेश ने अपने आसपास के बहुत से लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराया है।

**खीरे की वर्षभर खेती की जा सकती है**

मुकेश का कहना है, कि एक नेट हाउस निर्मित करने के लिए ढ़ाई से तीन लाख रुपये की लागत आती है। परंतु, इसके अंदर खेती करने पर आमदनी काफी ज्यादा बढ़ जाती है। युवा किसान का कहना है, कि खीरे की बहुत सारी किस्में हैं, जिसकी नेट हाउस के अंदर सालों भर खेती की जा सकती है।

**ड्रिप विधि से सिंचाई करने पर जल की काफी कम बर्बादी होती है**

किसान मुकेश का कहना है, कि उनको खीरे की खेती की सबसे बड़ी खासियत यह लगी है कि इसकी खेती में जल की काफी कम खपत होती है। दरअसल, नेट हॉउस में ड्रिप विधि के माध्यम से फसलों की सिंचाई की जाती है। ड्रिप विधि से सिंचाई करने से जल की बर्बादी बेहद कम होती है। इसके साथ ही पौधों की जड़ो तक पानी पहुँचता है। किसान मुकेश अपने खेत में पैदा किए गए खीरे की सप्लाई दिल्ली एवं गुरुग्राम समेत बहुत सारे शहरों में करता है। वर्तमान में वह 15 रूपए किलो के हिसाब से खीरे बेच रहा है।

www.merikheti.com

Address:  5A-46, 6th Floor, Cloud9 Tower, Vaishali Sector 1,
Ghaziabad – 201010